069-05
SAL
4892/G
1990-1991

# सालारजंग संग्रहालय

अर्धवार्षिक, शोध पत्रिका

पूरक अंक

प्रकाशक

सालारजंग संग्रहालय

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

खण्ड-सत्ताईस · अठठाइस

**1990 - 1991**

# सालारजंग संग्रहालय

अर्धवार्षिक, शोध पत्रिका, पूरक अंक

खण्ड-सत्ताईस - अठठाइस 1990-91

सम्पादक

डा आई. के. शर्मा

सहसम्पादक

सी. पी. उनियाल

सालार जंग संग्रहालय

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

1996

# विषय सूचि

१. हैदराबाद में उपलब्ध कुछ महत्वपूर्ण दक्खिनी हस्तलिखित ग्रंथ

*प्रो. राजकिशोर पाण्डेय*

--- 1

२. क़ुतुबशाह्री कालीन दक्खिनी साहित्य में संस्कृति

*डॉ. सुरेशदत्त अवस्थी*

Rs 126/-

--12

# १. हैदराबाद में उपलब्ध कुछ महत्वपूर्ण दक्खिनी हस्तलिखित ग्रंथ

*प्रो. राजकिशोर पाण्डेय*

हैदराबाद नगर के सार्वजनिक एवं निजी पुस्तकालयों में दक्खिनी के हस्तलिखित ग्रंथ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इन पुस्तकालयों में सेण्ट्रल सिटी लायब्रेरी, ऊस्मानिया यूनिवर्सिटी का पुस्तकालय, भारत गुणवर्धक संस्था पुस्तकालय, सालारजंग म्यूजियम पुस्तकालय एवं इदार-ए-अदबिया उर्दू के पुस्तकालय उल्लेखनीय हैं। निजी पुस्तकालयों में स्वर्गीय आगा हैदर हसन के पुस्तकालय का उल्लेख आदर के साथ लिया जा सकता है। श्री आगा हैदर हसन, निजाम कालेज में उर्दू के प्राध्यापक एवं भाषा विभाग के अध्यक्ष थे। बंजारा हिल्स पर स्थित इनके निवास स्थान पर एक दक्खिनी के बहुत से हस्त लिखित ग्रंथ उपलब्ध थे।

प्रारम्भं में इन ग्रंथों का उल्लेख मौ. अब्दुल हल ने अपनी पुस्तक़ "उर्दू की इब्ताई नशो व नुमा में सूफिया कराम काम, सैय्यद शमशुल्ला कादरी ने अपनी पुस्तक उर्दू-ए-कदीम में, श्री नसीरूद्दीन हाशमी ने अपनी पुस्तक दक़न में उर्दू में किया। इस दृष्टि से डॉ. मुहीउद्दीन का दरी जोर का काम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दास्तान अदब हैदराबाद में उन्होनें हैदराबाद के अदीबों का परिचय देने के साथ इस नगर के पुस्तकालयों में उपलब्ध अनेक महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथों का उल्लेख किया। उन्होनें अपनी रचना "तजकिरे उर्दू मखतुतात" में दक्खिनी की बहुत सी ऐसी हस्तलिखित प्रतियों का विवरण प्रस्तुत किया जो इदार-ए-अदबियात उर्दू एवं हैदराबाद के अन्य पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। इस पुस्तक ने लेखकों एवं अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान दक्खिनी साहित्य की ओर आकृष्ट किया।

दक्खिनी की अधिकांश रचनाएँ फारसी लिपि में हैं, किन्तु उनके लेखकों ने अपनी भाषा को "हिन्दवी" और "हिन्दी" कहा है। बाद में इसके लिए दक्खिनी शब्द का भी प्रयोग होने लगा। सन् १५०३ के आस-पास शेख अशरफ ने अपनी भाषा को "हिन्दवी" कहा है :

नज्म लिखी सब मौजूँ आन, यूँ में हिन्दवी कर आसान।

सन् १६८८ में गोलकुण्डा के सूफी लेखक मीरा याकूब ने अपनी .. रचना ''शमायलुल अर्तकिया'' में अपनी भाषा को हिन्दी कहा है -

''शाह अमीनुद्दीन आला सानी'' अपनी हयात के वक्त मुजे बशारत किये तुने जो शमायलुल तकिया-इकताम कूँ हिन्दी जबान में ल्यावे ता हर किसी कूँ समज आवे''।

सन् १७३५ में हैदराबाद के एक लेखक वलीउल्ला कादरी ने अपनी भाषा को ''हिन्दी'' कहा है। वे अपनी रचना मारपातुल सलूक में लिखते हैं -

''कितने तालिका ऐसे हक के हैं, जो न अरवी जानते हैं और न फारसी पहचानते हैं तो तुज कूँ लाजिम हैं, जो इस मानी की अरूस कूँ फारसी और अरबी की खिलवत के बाहर काड हिन्दी जबान के तखत पर बेलाजवता हो कि आशिक अपने माशूक के जमाल का शराब अपने आख्या के प्यालया'' में मालामाल भर कर अपने जीव के हलक में पहुँचावें और हौर शब्द का बेहोश जावें।''

सन् १६२९ में गोलकुण्डा के प्रसिद्ध शायर मुल्ला गवासी ने अपनी मसनवी ''सैफुल मुलुक व बदीउलू जमाल'' में अपनी भाषा को ''दक्खिनी कहा है :

सुल्तान अब्दुल्ला की कर खतम किस्सा नाम सूँ
आरिफ वजूद जिनकी नजर यू नज्म दक्खिनी शाह सूँ।

कुतुब शाही शासकों के दौर का अदब फारसी लिपि में उपलब्ध है। उसकी भाषा को ''हिन्दवी'' हिन्दी और दखिनी कहा गया है। वस्तुतः उस युग का साहित्य हिन्दी और उर्दू की मिली जुली संपत्ति है, जिसने दोनों भाषाओं और उनके साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

कुतुब शाही बादशाहों का दौर हिन्दवी, हिन्दी या दक्खिनी साहित्य के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस वंश के अधिकांश बादशाह, साहित्य एवं कला

के प्रेमी थे। इस वंश के संस्थापक सुल्तान कुली के जीवन का अधिकांश भाग युद्ध करने एवं राज्य को व्यवस्थित करने में व्यतीत हुआ। किन्तु उसने भी साहित्य की उन्नति में योग दिया। फरिशता ने लिखा है कि उसने गोलकुण्डा में ''ऐश खाना'' नाम से एव विशेष भवन बनवाया, जिसमें शायर अपनी रचनाएँ सुनाते थे। बादशाह स्वंय उन मुशायरों में उपस्थित होता था।

इस वंश के बादशाहों में इब्राहीम कुली कुतुबशाह (सन् १५५०-८०) सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८०-१६६१), मुहम्मद कुतुब शाह (१६१२-२६) और अब्दुल्ला कुतुब शाह (१६२६-७४) अपने साहित्य प्रेम के लिए विशेष उल्लेखनीय हैं। उस समय के प्रसिद्ध इतिहासकार इब्राहीम शीराजी ने इब्राहीम कुली कुतुब शाह के संबंध में लिखा है कि बादशाह विद्वानों और कवियों का बड़ा आदर करता था। उसने दरबार के शायरों और विद्वानों के रहने के लिए एक विशेष भवन का निर्माण कराया था। उस भवन के सात भाग थे। एक भाग में शायरों के रहने के स्थान थे, जहाँ वे साहित्यिक चर्चा किया करते थे। दूसरा भाग खुशनवीस लेखकों के लिए था जिनका काम पढना, इतिहास लिखना और शाहनामा की कहानियों का अनुवाद करना था। हैदराबाद नगर को बसाने वाला सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब शाह (१५८०-१६११) दक्खिनी तेलुगु और फारसी का अच्छा शायर था। उसकी रचनाओं का एक संग्रह ''कुलियातु'' नाम से उपलब्ध है, जिसमें शेरों की संख्या पाँच हजार है। इस संग्रह की एक हस्तलिखित प्रति निजाम के निजी पुस्तकालय में उपलब्ध थी। मजलिसे इशाअते दक्खिनी मखतूतात के द्वारा इसका प्रकाशन भी हो चुका है। मुहम्मद कुली की शायरी में सादगी एवं स्वाभाविकता है। उसने उस समय की शायरी को एक नई दिशा दी। उसने अपनी शायरी के लिए नये विषयों को चुना और हिन्दू मुसलमानों के रीति-रिवाजों, त्योहारों एवं प्राकृतिक दृष्यों को अपनी कविता का विषय बनाया। स्वाभाविकता उसी की शायरी की एक बड़ी विशेषता है। उसका कहना है कि कुतुब शाह रोज ऐसे ही शेर कहता है जैसे नदी में लहरें उठती हैं।

कुतुबशाही वंश का पाँचवा बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुतुब शाह फारसी और दक्खिनी का अच्छा शायर था। वह फारसी में जिल्लुल्ला और दक्खिनी में कुतुबशाह उपनाम में से कविता करता था। इसका एक दीवान फारसी का और दूसरा दक्खिनी का सालारजंग पुस्तकालय में उपलब्ध है।

अब्दुल्ला कुतुब-शाह (१६२६-७४) का शासन काल यद्यपि लड़ाई झगड़ों का युग था किन्तु अपने पूर्वजों की भांति इसने भी साहित्य और कला की उन्नति में योग दिया। वह स्वंय फारसी एवं दक्खिनी का अच्छा कवि था। वह अब्दुल्ला उपनाम से कविता करता था। इसकी कविताओं का एक संग्रह सालारजंग म्यूजियम पुस्तकालय में उपलब्ध है। इसके दरबार के इतिहासकार निजामुददीन अहमद ने लिखा है कि दरबार में फारसी और दक्खिनी के कवि एकत्रित होते थे। कभी कभी रात रात भर मुशायरा चलता था। बादशाह साहित्यिक "वाद - विवाद और मुशायरों में दिलचस्पी लेता था"।

कुतुबशाही शासकों का शासन काल दक्खिनी साहित्य के इतिहास का अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। कुतुबशाही दौर में एक ओर सूफी फकीरों धर्म और दर्शन के सिद्धान्तों को लोगों के सामने रखा दूसरी ओर दक्खिनी कवियों ने प्रेम, सौन्दर्य, एवं अन्य सांसारिक विषयों को अपनी कविता का विषय बनाया। श्री नसीरुद्दीन हाशमी का कहना है कि - "गोलकुण्डा में वजही की कुतुबमुश्ती, गवासी की सैफुल मुलूक, इब्न निशाती की फूलवन, जुनैदी की माहपैकर, तबई की बहराम व गुल अन्दम, गुलाम अली का पद्मावत, अपनी खूबियों से अदब उर्दू (दक्खिनी) के जगमगाते नगीने हैं"[२]

डॉ. श्रीमती राकिया सुल्ताना का कहना है - "इस दौर में उर्दू दक्खिनी नज्म और नस की वुसअत का अन्दाज़ा शायरों और अदीबों के उस वसी गिराह से होता है, जो ऐसे कारनामें पेश किये जो अब क्लासिक की तारिफ में आते हैं। इस दौर में ऐसे शायर और इशा परदाज पैदा हुए जिनके बुलन्द रूतबा कारनामों की वजह से इस दौर को जरीन दौर मौसूम किया गया है।"[३]

गोलकुण्डा के संत सूफी संतों ने सामान्य जनता में अपने विचारों के प्रचार के लिए रचनाएँ की। उनका ध्यान दर्शन के ऊँचे प्रश्नों की ओर कम आचरण के सामान्य नियमों की ओर अधिक है। इसीलिए इनकी रचनाएँ सभी धर्म के लोगों में समान रूप से आदर पा सकी। मौ. अब्दुल्ला ने अपनी रचना ''अहका-मुस्सलात'' में भोजन के समय विहित और निषिद्ध बातों का वर्णन किया है। उन्होने ''ईमान की जो व्याख्या की है, उसका संबंध किसी धर्म विशेष से नहीं है। उसी प्रकार आबिद शाह ने ''कंडुल मोमिनीन'' में आचरण की पवित्रता आदि का जो वर्णन किया है, उसमें सभी धर्मों के लोग लाभ उठा सकते हैं। इन सूफी संतों ने फारसी या अरबी से अनुवाद के लिए पुस्तकों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा है कि उनका वर्णन विषय शास्त्रीय और दार्शनिक न होकर सर्वसाधारण के लिए उपयोगी हो। आबिदशाह ने अपनी रचना मरवजनस्सालिनीन में मानव शरीर को ब्रह्माण्ड का प्रति रूप माना है। उनका कहना है कि शरीर के भीतर सृष्टि की प्रत्येक वस्तु वर्तमान है। इसमें अर्श-कुर्सी लोह और कलम है। दोजख, वहिश्त, खुदा, मुहम्मद और पाँच फरिश्ते भी इसी में है। इसमें समुद्र और नदिया हैं, इसमें पहाडों की ऊंचाई और आकाश का विस्तार है एंव सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रों का प्रकाश भी है। काफिर और मुसलमान को बाहर देखने की आवश्यकता नहीं है। वे भी हमारे शरीर के भीतर हैं।

इन सभी संतों ने अपने उपदेश को सरल एवं आकर्षक बनाने के लिए अपनी भाषा में स्थानीय भाषाओं - तेलुगु, कन्नड, मराठी आदि के शब्दों को स्थान दिया और लोक गीतों के तर्ज पर रचनाएँ की। उन्होनें प्रशनोत्तर शैली को अपनाया जिसमें मुरिद या मालिक सवाल करता है और मुर्शिद जवाब देता है। उन्होनें अपनी बातों को स्पष्ट करने के लिए बीच बीच में कुरान एंव हदीस के उद्धरण दिये हैं और लोक प्रचलित कहानियों का प्रयोग किया है। मोरा जी खुदानुमा ने अपनी चक्कीनामा इरफान नाम की रचना, चक्की पीसते समय गाये जाने वाले गीतों में के तर्ज पर की है और शाहनाजू ने सुहागिन नामा लोक गीतों के तर्ज पर लिखी है। इसमें औरतों को ताव्वुक के मसलों से वाकिफ कराने का एक खास ढंग अख्तियार किया गया है। इस रिसाले के प्रारम्भं में शाहनाजू सुहागिन को सबोधित करते हुए कहते हैं -

सुन री सुहागिन सुन, री सुन, यक यक बोल चितधर सुन

चकी नामा इरफान की एक हस्तलिखित प्रति इदार-ए-अदाबियात उर्दू के पुस्तकालय में (क्रम. सं. ९३) और सुहागिन नामा की प्रति सालारजंग पुस्तकालय में उपलब्ध है।

कुतुबशाही दौर के सूफी संतों ने अपनी विचारों के प्रचार के लिए अरबी फारसी पुस्तकों का अनुवाद किया है। नज्म और नस में छोटे छोटे मिसालें लिखे। वहीं इस दौर के शायरों ने मसनवी, इमीदा, मर्सिया आदी शैलियों में लिखी गई अपनी रचनाओं से दक्खिनी साहित्य को समृद्ध किया। कुतुब-शाही दौर के सूफी संतों में मो. अब्दुल्ला, मीरा जी, खुदानुमा, मीरा याकूब, शाहराजू और आबिदशाह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन संतो ने गोलकुण्डा को केन्द्र बनाकर अपने विचारों का प्रचार किया। वजही गवासी, इब्न-निशानी, गुलाम अली, तबई और सेवक कुतुब-शाही दौर के मशहूर शायर हैं। इन सूफी संतों एंव शायरों की रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियाँ हैदराबाद के विभिन्न सार्वजनिक एंव निजी पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। इन सभी लेखकों एवं शायरों की रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख करना इस छोटे से निबन्ध में संभव नहीं है। इस सन्दर्भ में गोलकुण्डा की तो मशहूर रचनाओं सबरस एवं सैफल मुलूक व वदी उल जमाल का जिक्र करना अधिक मुनासिब होगा। ''सबरस'' वजही की तसीफ है। वह कुतुब शाही दौर का मशहूर शायर और अदीब था। उसकी दो रचनाएँ कुतुब मुश्तरी और सबरस नाम से मिलती हैं। कुतुब मुश्तरी फारसी मसनवियों की प्रणाली पर लिखी गई है। इसमें गोलकुण्डा के राजकुमार मुहम्मद कुली और बंगाल की राजकुमारी मुश्तरी के प्रेम का वर्णन है। राजकुमार, मुश्तरी को स्वप्न में देख कर उस पर मुग्ध हो जाता है और बड़ी कठिनाइयों के बाद उसे प्राप्त करता है। कथानक का नायक गोलकुण्डा का राजकुमार है किन्तु नायिका मुश्तरी काल्पनिक है। अनुमान किया जाता है कि वजही ने मुहम्मद कुली की प्रेमिका भागमती को मुश्तरी के रूप में चित्रित किया है। वजही को अपनी शायरी पर नाज था वह अपनी इस मसनवी में अपनी शायरी के संबंध में लिखता हैं -

तेरा शेर सुन जी पिघलता है यूँ।
कि पानीते अब्लूज घुलता है यूँ।
तू वज ( ) हीं कहया शेर कई घात का
हुआ ज्यास्त तुझसे मज़ा बात का।

अपनी इसी मसनवीं में वह आगे लिखता है कि आगे आने वाले शायर उसकी तर्ज पर शायरी करेगें -

जिते शायरा शायर हो आयेगें, सो मुंजते तर्ज शेर का पायेगें।

वजही को दक्षिण देश से विशेष प्रेम था। वह अपनी इसी मसनवी में दक्षिण की प्रशंसा करते हुए लिखता है -

दखन सा नहीं ठार संसार में, निपज फ़ाजिला का
है इस ठार में।
दखन है नगीना अंगूठी है जग, अंगूठी को हुरमत
नगीना ही लग
दखन मुल्क कूँ धन-अजब साज है, कि सर मुल्क
हौर दखन ताज है
दखन मुल्क भोती च ख़ासा अहै, तेलंगाना - इसका खु
खुलासा अहै॥

''सबरस'' वजही की दूसरी मशहूर तसनीक है, जो सन् १६३६ में अब्दुला कुतुब शाह के आदेश से लिखी गई। इस बात को वहजी ने स्वंय स्वीकार किया है। वह ''सबरस'' के प्रारम्भं में लिखता है -

सुल्तान अब्दुला , आलम पनाह ( ) साहब सिपाह, हक़ीकत, आगाह दुश्मन परवर, सानी सिकन्दर, आशिक साहब नजर, खतरे ते बाखबर, शुजा अत में सस्तम गर्द, खुरशीद इल्म, सुबह के वक्त बैठे तख्त यकायक गैव तो कुछ रम्ज पाकर, दिल में अपने कुच लाकर, वजही नादिर पत्त, कूँ, दरिया दिल गाहैर मखुन कूँ हुजुर बुलाये, पान दिये मौत - मान दिये और हौर, परमाये कि इन्सान के बजूद बीच में कुछ इश्क का बपान करना, अपना नाँव अयाँ करना कुछ निशान धरना।

''सबरस'' की एक हस्तलिखित प्रति आगा हैदर हसन के निजी पुस्तकालय में उपलब्ध थी। वह प्रति सन् १८०० की लिखी हुई है। स्टेट लाईब्रेरी, हैदराबाद में इस पुस्तक की दो हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। एक प्रति सन् १८७५ की संपादित है। दूसरी प्रति अपूर्ण है किन्तु पहली प्रति से पुरानी मालूम होती है। मौ. अब्दुल हक़ के पास इस पुस्तक की दो हस्तलिखित प्रतियाँ थीं। एक सन् १८५८ की और दूसरी सन् १८६४ की संपादित है। यह पुस्तक फारसी एवं देव नागरी लिपि में प्रकाशित भी हो चुकी है।

''सबरस'' में हुस्न और दिल के प्रेम का वर्णन है। दिल'' सीस्तान के बादशाह अकल का राजकुमार है। जब वह बड़ा होता है तो बादशाह उसे'' तन नाम के शहर का प्रबंधक नियुक्त करता है। एक दिन दरबारी दिल को आबे हयात की कहानी सुनाते हैं'। दिल आबे हयात पाने को बेचैन हो उठता है और खाना पीना छोड देता है। दिल अपने जासूस ''नजर'' को आबे हमात की खोज में भेजता है। नजर घूमते - घूमते पूर्व देश में जाता है जहां'' इश्क नाम का बादशाह राज्य कर ता था। उसकी बेटी का नाम हुस्न था। नजर से, दिल की चर्चा सुनकर उसके मन में दिल के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है। बड़े संघर्षो और कठिनाइयों के बाद दिल, हुस्न को प्राप्त करता है। बाद में हिम्मत और हुस्न की सहायता से दिल को हजरत खिज का दर्शन होता है और आबे हयात का सोता प्राप्त होता है।

''सबरस'' के सभी पात्र अकल, दिल, हुस्न, हिम्मत आदि अमूर्त है। इसमें दिल और हुस्न के प्रेम वर्णन के साथ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सत्य की ओर संकेत किया गया है। कहानी में हुस्न को प्राप्त करने के पश्चात दिल को हजरत खिर्ज, जो भूले - भटकों को राह दिखाने वाले, पैगबंर हैं, उनका दर्शन होता है और आबे हयात का सोता मिलता है। मनुष्य को सही रास्ते पर चलने और अमरत्व प्राप्त करने में हुस्न या सौन्दर्य एक महत्वपूर्ण सहायक तत्व है। साथ ही इस बात का भी सकेंत मिलता है कि इश्क और अकल के मेल में मनुष्य की पूर्णता है। बुद्धि और भावना के समन्वय में ही मानव का कल्याण है।

प्रारम्भं से अंत तक ''सबरस'' की शैली साहित्यिक है। इसकी शैली मुकफ्फा है, तुकान्त वाक्यों का प्रयोग है। ''सबरस'' की शैली के दो उदाहरण देखिए -

१. इश्क में बदनामी ज्यूँ खाने में नमक, ज्यूँ दीवे में झमक, ज्यूँ महबूब में ठुमका इश्क का यही है निशान विचार, जेता पिन्हा करने जाय, उतना होवे आशकार।
२. शराब सब कें फाँका बादशाह केफ, जहाँ आशिक हौर माशूक अहें वहाँ शराब न हो तो बडा हैफ। ज्यूँ नमक नहीं सू खाना। बेनमक खाते अदमी क्या संवाद पाना ? ज्यूँ जाते नहीं सूँ घर, ज्यूँ मिठाई नहीं सूँ शकर, ज्यूँ माना नई सूँ बात। ज्यूँ सखावत नहीं सूँ होस। ज्यूँ पानी नई सूँ लहवा, ज्यूँ हुस्न नई मूँ नार, काजल नई सूँ सिंगार। दीवे में बत्ती नई तो उजाला क्यों पडेगा। शराब में मस्ती नई तो शराब क्यों चढेगा। जिस काम में नियस साबित नहीं सो काम जस क्या देगा।

कुतुब शाही दौर की दूसरी मशहूर तसनीफ सैफुल मुलूक व बदी उल जमाल नाम से उपलब्ध है। इस पुस्तक की कई हस्तलिखित प्रतियाँ देश - विदेश के पुस्तकालयों में मिलती है। सालारजंग म्यूजियम पुस्तकालय में इस पुस्तक की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हैं। पहली प्रति में संपादक एंव संपादन काल के संबंध में कोई जानकारी नहीं है। अक्षरों की बनावट से पता चलता है कि प्रति पुरानी है। दूसरी प्रति का संपादन काल १०६७ हिजरी है। तीसरी प्रति का संपादक दिल्ली का रहने वाला रहमतुल्ला नाम का कोई व्यक्ति था। उसने ११५७ हिजरी में औरंगाँबाद में रहकर इस पुस्तक का संपादन किया। स्व आगा हैदर के निजी पुस्तकालय में इस पुस्तक की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध थी। इस प्रति में मुकीमी की रचना चंदरबदन व महयार आजिज की रचना लैला - मजनूँ और गवासी की रचना सैफल मुलूक व बदीउल जमाल एक साथ संपादित हैं। इस प्रति का संपादक दक्खिनी का मशहूर शायर वज्दी है, जिसकी पंछीनामा नाम की रचना उपलब्ध है। इस प्रति में वज्दी के लिखे कुछ शेरों से पता चलता है कि उसने इस प्रति का संपादन ११३८ हिजरी में इसमाइल खाँन नाम के किसी व्यक्ति के कहने पर किया।

इस पुस्तक की हस्तलिखित प्रतियाँ इण्डियाँ आफिस लंदन, के पुस्तकालय ब्रिटिश म्यूजियम के ओरिएंयटल विभाग में एवं कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध है। इस पुस्तक का प्रकाशन, हैदरी प्रेस बंबई से फारसी लिपि में और दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद से देवनागरी लिपि में हो चुका है।

''सैफुल मुलूक'' व ''बदीउल जमाल'' में मिस्र के राजकुमार सैफुल मुलूक और सिंघल द्वीप की राजकुमारी बदीउल जमाल के प्रेम का वर्णन है। सैफुल मुलूक का पिता एक जरीदार कपड़ा और एक अंगूठी उसे देता है और बतलाता है कि वे चीजे उसे हजरत सुलेमान से प्राप्त हुई। सैफुल मुलूक उन उपहारों को प्राप्त करके बड़ा प्रसन्न होता है। संयोगवंश उसकी दृष्टि वस्त्र पर बने हुए तस्वीर पर पड़ती है। तस्वीर में बनी हुई स्त्री के सौन्दर्य को देखकर वह अपनी सुधिवुधि खो देता है। वह उस स्त्री की खोज में निकल पड़ता है और देश देशान्तर में भ्रमण करते हुए इस फन्द नाम के द्वीप के एक महल में पहुँचता है जहाँ उसे सोई हुई एक स्त्री मिलती है। राजकुमार को बड़ा आश्चर्य होता है। उसे पास में पड़ी हुई एक पटट्री मिलती है, पट्टी पर लिखे गये मंत्र से उसे ज्ञात होता है कि उसे मंत्र से नींद में बांधा गया है। राजकुमार जमीन पर पटककर पट्टी तोड़ देता है। सोई हुई स्त्री जाग उठती है वह बदीउल जमाल की सहेली थी। उसकी सहायता से सैफुल मुलूक, बदीउल जमाल को प्राप्त करता है। दोनों की शादी धूम-धाम से संपन्न होती है और वे सुख-पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की कहानी अलिफ लैला की मशहूर कहानी है। अलिफ लैला की कहानियों का अनुवाद दुनियाँ की विभिन्न भाषाओं में हुआ और इसकी कहानियाँ विभिन्न देशों में लोक कथाओं के रूप में भी प्रचलित है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि गवासी ने अपनी इस मसनवी की कथा ''सेफुल मुलूक'' नाम की एक फारसी पुस्तक से ली है।

सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल का रचायिता गोलकुण्डा का मशहूर शायर गवासी था। उसकी रचनाओं के अन्तः साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि वह गोलकुण्डा का निवासी था और अब्दुल्ला कुतुब शाह का समकालीन था। ऐसा लगता है कि इस मसनवी के लिखने के समय गवासी उस समय के शायरों में मशहूर हो चुका था किन्तु दरबार में

उसे कोई सम्मान प्राप्त नहीं था। उसने इस मसनती में अंत में बादशाह का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ कर
मेरे जौहरा पोते दिल साफ कर।
देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेबान पाऊँ।

गवासी को अपनी शायरी पर गर्व था। वह हिन्दुस्तान के सभी शायरों में अपने को बड़ा समझता था। यह लिखता है -

मेरा ज्ञान अजब शंकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है
जिते हैं जो तूती हिन्दुस्तान के
भिकारी है गुंज शंकरिस्तान के।

गवासी ने अपनी यह मसनवी अब्दुल्ला कुतुब शाह को समर्पित की। उसके बाद उसे दरबार में पर्याप्त सम्मान प्राप्त होने लगा और बादशाह ने उसे ''मालिकुशुअरा'' की उपाधि से विभूषित किया।

तत्कालीन इतिहासों से पता चलता है कि सन् १०४५ हिजरी में बादशाह ने उसे बीजापुर अपने दूत की हैसियत से भेजा। इस मसनवी के चौदह वर्षों के बाद सन् १०४९ हिजरी में उसने ''तूतीनामा'' नाम की एक दूसरी मसनवी लिखी। तूतीनामा के कुछ अंशों से ज्ञात होता है कि इस मसनवी के लिखने के समय उसे दुनियाँ से विरक्ति होने लगी थी और वह अपना ध्यान खुदा और खादत में लगाना चाहता था। वह लिखता है -

गवासी अगर तू है सच गवास
लगा इश्क अपने खुदा सात खाँस।
चलेगा किता नफ्स के कये मतें
किता होयगा नाँव के पये मने॥

# २. कुतुबशाही कालीन दक्खिनी साहित्य में संस्कृति

*डॉ. सुरेशदत्त अवस्थी*

बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद जिन ५ रियासतों का जन्म हुआ उनमें आदिलशाही और कुतुबशाही साम्राज्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन दो साम्राज्यों ने साहित्य के विकास के लिए केवल आर्थिक रूप से संगीत कला एंव भवन निर्माण के क्षेत्र में अधिक उन्नति की। इनके शासकों ने इन क्षेत्रों के विकास के लिए केवल आर्थिक रूप से प्रोत्सोहन, ही नहीं दिया अपितु व्यक्ति गत रूप से इनमें सहयोग दिया। कुतुबशाही शासन(१५१८ - १६८७ ई) के अंतिम चार शासक एंव आदिलशाही के दो शासक स्वंय भी दक्खिनी के प्रसिद्ध कवि हुए।

कुतुबशाही शासन में लगभग ३८ कवियों के नाम मिलते हैं जिनमें फिरोज, वजही मुहम्मदकुली, गव्वासी, इब्ननिशाती, तबई, सेवक, फायज, शाहराजू का योगदान उल्लेखनीय है। इन कवियों का अधिकतर मसनवी,क़सीदा गजल और रूबाई छंदों का प्रयोग मिलता है। तसव्वुफ, प्रेमाख्यान, जीवन-चरित एवं ऐतिहासिक काव्य पर आधारित यह साहित्य कुतुब्शाही साम्राज्य का दर्पण है। इसमें दक्खिनी संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

गंगा - जमुनी संस्कृ ति दक्षिण की विशेषता है। मेल जोल की संस्कृति का उल्लेख केवल हिन्दू - मुसलमान तक ही सीमित नहीं बल्कि विदेशी मुसलमान एवं भारतीय मुसलमान के सांस्कृतिक मेल - मिलाप का जीता - जागता प्रमाण है। कुतुबशाही कवियों की रचनाओं में दक्खिनी संस्कृति का रूप परि लक्षित होता है। इन काव्यों में ''कुल्लियात कुली'' और ''कुतुब मुश्तरी'' का विशेष स्थान है। स्व. नवाब सालारजंग के पुस्तकालय की पाण्डुलिपि सूची में दीवान सुल्तान कुली की दो हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख मिलता है। एक प्रति में सुल्तान मुहम्मद कुली और अब्दुल्ला कुतुबशाह के काव्य संग्रहीत हैं। (हि. लि. प्रति नं. ८२ और १५३) इस हस्तलिखित प्रति की प्रारम्भिक कविताओं में ''कुतुब शाह'' और बाद की कविताओं में अधिकतर ''मआनी'' का प्रयोग है। पृ. ६ में एक साथ ''कुतुब'' और ''मआनी'' का प्रयोग है।

डॉ जोर ने कुल्लियात कुली के संपादन में ७ हस्तालेखित प्रतियो का सहयोग लिया था (उन्हीं के अनुसार) इसके अतिरिक्त स्प्रिंगर की सूची में एशियाटिक सोसायटी बंगाल में इसका उल्लेख है। मुहम्मद कुली दक्खिनी का एक मात्र कवि था जिसके १८ उपनाम मिलते है। इन उपनामों में तीन उपनाम मआनी, कुतुब शाह और तुर्कमान प्रसिद्ध हुए। दक्खिनी के अतिरिक्त इसने फारसी और तेलुगु में भी काव्य रचना की, यह अनुमान है। अब तक इस भाषा में कोई रचना उपलब्ध नहीं हुई।

दक्खिनी में ही नहीं संपूर्ण हिन्दी साहित्य में मोहम्मद कुली कुतुबशाह पहला कवि है, जिसने तीज-त्योहार, खेलकूद, ऋतु-वर्णन आदि विषयों पर कविताएँ लिखी हैं। तीज-त्योहारों पर छोटी बडी ५३ कविताएँ मिलती हैं। इनमें कवि की व्यक्तिगत अनुभूति के साथ किसी वस्तु, दृश्य या भाव का वर्णन इन कविताओं में हुआ। मोहम्मद, कुली कुतुबशाह मुख्यतः श्रृंगार के कवि हैं, सुरा-सुन्दरी का उपासक है, इसलिए किसी भी विषय, वस्तु एंव अवसर को श्रृंगारी दृष्टि से ही देखता है। त्योहारों का वर्णन मीलानबे, ईदमौलूद ईदगुदीर, शबे-बरात, ईद-रमजान तक ही सीमित नहीं है अपितु बंसत, मिरग (मृगानक्षत्र) आदि का भी वर्णन का क्या मूलांकन हैं ? हम जानते हैं परन्तु काव्य के सामाजिक उत्तरदायित्व का परिपालन ऐसी कविताओं द्वारा ही पूरा होता है।

ईद के चाँद को देखने पर क्या प्रतिक्रिया होती हैं देखिए -
हुआ रात अंधारी में निछल हजोत जगत माने
कहें लोग देखो देखो वो आया ज्यू नवां चंद
उत्तम लोग चडस सीस लगोवें सो कहत चंद,
सौ में पाँव पडया रेखा दिया ज्यू नवां चंद ॥

इसी प्रकार बकरीद, नौरोज पर भी कविताएँ रची गयी। शबे-बरात संभवतः मुहम्मद कुली का प्रिय त्योहार था। इस विषय पर १० कविताएँ मिलती हैं। इस त्योहार का महत्व धार्मिक एंव अधिकतर सामाजिक हैं। ऐसी कविता में भी प्रेयसी की चितवन नखा - शिख का उल्लेख है।

मुख जोत सूँ यंदर मुख्या शब्रात कूँ झपकाएँ हैं
चंदर सूर तारे देखत निस झलक कूँ झलकाएँ हैं
हरयक धन कुधन पैन दो रतन के अबरहन
पी मद मदन झलका बदन, शाह पगच्मन को आए हैं।

इस संपूर्ण कविता में "शब्रात" शब्द पहली पंक्ति में ही आया हैं शेष में चंदर मुखियों की लटक, झलक और महक का प्रेम वृतांत है। अपनी वर्षगांठ पर भी १० कविताएँ लिखी हैं। प्रत्येक कविता प्रार्थना से प्रारम्भं होती है।

खुदा ही नजुर ये बरसगाँठ आय
खुदा ही रजा सूँ बरसगाँठ आया [३]

मुहम्मद कुली की अन्य कविताओं में भी सामाजिक रीतिरिवाजों का उल्लेख मिलता है। सुहाग की रसम में तेल चढ़ाना, शरबत पान बीड़े से बड़े सेवा करना,सहेलियों द्वारा बादशाह के पाँव में मेहदी लगाये जाना आदि का उल्लेख है। वास्तव में श्रृगांर के जितने अवसर होते हैं। उन सबका मुहम्मद कुली ने लाभ उठाया है। यहाँ तक कि शाही खेल चौगान को भी वह प्रेम का खेल समझत हैं।

हात चौगा सेती जोबान गंद कर
रचेलो अन्य सकियाम सूँ तुम सुल्तान खुश १
दान टकनी, फगहीफू के बहाने भी श्रृंगार का आनन्द लेता है
सकी ताल दे मुँज टिटकती खड़ी
के ढान ढकनी खेल खेलें आय धन
नासिक पूकड़ी फू खेल मसत्ती खड़ी - २

---

उर्दू. मु.कुली. कुतुबशाह साहित्य अकादमी,

प्रो. समुदहुसैन, पृ. 32

1. कुल्लियात पृ. 31
सं.डॉ. विमला मदन
डॉ. मुहीउददीन कादरीजोर
हिन्दी प्रचार सभा

2. मु.कुली पृ. 413 वही
संपरदक : मसऊद हुसैन
साहित्य अकादमी

मुहम्मद कुली की कविताओं में ऋतुवर्णन की एक विशेषता है। कवि ने इन ऋतुओं का प्रयोग संयोग श्रृंगार में उद्दीपन के अर्थ में किया है। बरशकाला, मिरग, थंडकाला आदि का विशद वर्णन इनकी कविताओं में है। वर्षाऋतु के वर्णन में -

तन थण्त लरजत जोबन गरजत
पियामुख देखत कंचुकी कस विकसे आज
नारी मुख झमके जैसे बिजली
अंचल बावक में सुहे उसलाज
हज़रत मुस्तफा के सदक आया बरशका ला
कुतुबशाह इश्क करो दिन दिन राज - ३

कवि अश्लीलता की सीमा पर है। वंसत त्योहार भी है और मौसम भी इसमें तो श्रृंगार का होना आवश्यक है -

प्यारी के मुख म्याने खेला बंसत
फूला हौज़थे चरके छिडक्या बंसत
बंसत बास चुन चुन के चुनरी बंधे।
जो उभर के लहरा सूँ आया बंसत।

कहने का तात्पर्य यह कि मुहम्मद कुली की कविताओं में समकालीन रीति रिवाज, खेलकूद आचरण विचार, रहन सहन वेश भूषा आदि का पता चलता है।

## "कुतुब मुश्तरी" -

स्व. नसीरूददीन हाशमी साहब ने इस काव्य की एक प्रति का उल्लेख किया है जो इण्डिया आफिस, लंदनमें है परन्तु बाबाएँ उर्दू ने जो काव्य संपादित किया उसमें दो हस्तलिखित प्रतियों की सहायता ली गई है।

कुतुबशाही ही नहीं अपितुसँपूर्ण दक्खिनी साहित्य में वजही का स्थान महत्वपूर्ण है। इनका समय १६०९ ई. अकबर की मृत्यु से ४ वर्ष बाद और गोस्वामी तुलसीदास के निधन से १४ वर्ष पूर्व का है। इसने चार शासकों का समय देखा था। गोलकुण्डे का राजकवि था।

---

1. कुल्लियात पृ. 56 2. कुल्लियात पृ. 57 3. पृ. 64

वजही की तीन रचनाओं में कुतुबशाह मुश्तरी पहली रचना है। वही की मौलिक कृति है और दक्खिनी की प्रथम प्रकाशित मसनवी है। यह एक काल्पनिक प्रेमा, मरन है केवल नायक मुहम्मद कुली ऐतिहासिक पात्र है, अन्य सभी काल्पनिक हैं। काव्य में कथा के साथ साथ तत्कालिक सामाजिक स्थितियों की जानकारी मिलती है।

शाही दरबार में ज्योतिषियों का भी आना जाना रहा। राजकुमार के जन्म के बाद फाल देखा जाता।

लग्या देखने फाल अंबर रमाल,
सूरज चाँद के फासें नियस सूँ चाल।

यही नहीं मुहम्मद कुली कुतुबशाह के सिहांसन आरूढ होते समय भी ज्योतिष से मुहुर्त निकाला जाता है।

संवायी भोत छबसूँ शह सब शहर
नजूँम्याँ कूँ साअद साद पूछ कर पूछकर।
संकट के समय भी ब्राहम्ण ज्योतिष से राय सी जाती है -
न पूँछू बा हपन ज्योतिषि कब मिलना पीव सूँ होय ३
पाँव पड़ना'' के संबंध में विचित्र बातें सामने आती हैं।
संभवतः अकबरी दरबार का प्रभाव दक्कन में भी पाया जाता है।
बादशाह को सजदा करना
अतारद कह्या शह कूँ सर भू में घर

पुत्र माता पिता को प्रणाम करता है, पुत्रवधु भी सास-सुसरे को प्रणाम करती है।
पढ़े पाँव माँ बाप के शह नवल
के है बहिश्त माँ बाप के पाँव तल
खिले फूल उम्मीद होर आस के

---

1. दक्खिनी हिन्दी काव्य धारा
   सं. राहुल साकृत्यायन,
   हिन्दी परिषद, पटना.

पड़ी पाँव बहू ससुर और सास के।

यहाँ तक तो सामान्य है परन्तु माँ बाप जब पुत्र के पाँव पढ़ते हैं तो बड़ा अचंभा होता है। स्वपन देखने के बाद युवराज व्याकुल हो जाता है। माँ बाप उसकी व्याकुलता से दुखी होकर पाँव पड़कर इसका रहस्य पूछते हैं -

महरबान माँ बाप वो दो सगे
सौ शहजादे के पाँवों पड़ने लगे।
यह रिवाज कहाँ से आया समझ में नहीं आता।

मंत्र फूंकना, पानी वार कर पीने की भी रस्म दिखाई देती है -

छन्दा होर नाजाँ के को कारी मंतर
सकिया चंचलाँ फूकयाँ शाह पर,
जो यो दकत्या उस कूँचक नैन भर,
तो पानी पित्या उस उपर वार कर। ३.

सहेलियाँ - परियाँ युवराज को पान खिलाती हैं -

कधी कोई खिलाती अभी पान आ,
कधी कोई पकड़ती थी पीकदान आ। ४.

यात्रा के समय साथ में तोशा देने का रिवाज था

कहे शह कूँ तोशा देना बाट कूँ
कहे जाता है शह इश्कुँ के हाट कूँ।

"दाई को विशेष महत्व दिया जाता था, उसका पद माँ के समान था -

कही मुश्तरीशाह उस दाय कूँ,

---

1. कुतुब मुश्तरी पृ. 37 2. पृ. 186 3. पृ. 50 4.पृ. 128
सं. विमला वाघ्रे
नसीरूद्दीन हाशमी
दक्खिनी प्रकाशन समिति
वही पृ. 184 2. पृ. 56 3.पृ. 62 4. पृ. 60

महरबान अपनी सगी माई कूँ।
के दाई सशे ज्यूँ माई का ठार है,
तुजे कुच कना बहुत बजकार है। २

प्रेमी-प्रेमिका के बिछड़ते समय निशानियाँ दी जाती हैं -

अंगूठी निशाँ उस दिए शाह में,
रखी जीव कह उस कूँ उस माह ने।
जो शहकह के "दे तूँ बी कुच मंजु निशान
के तुज याद करता अंछू ले सुजाना। ३

---

1. वहीं . पृ. 85
2. वहीं . पृ. 125
3. वहीं . पृ. 160

4892/G

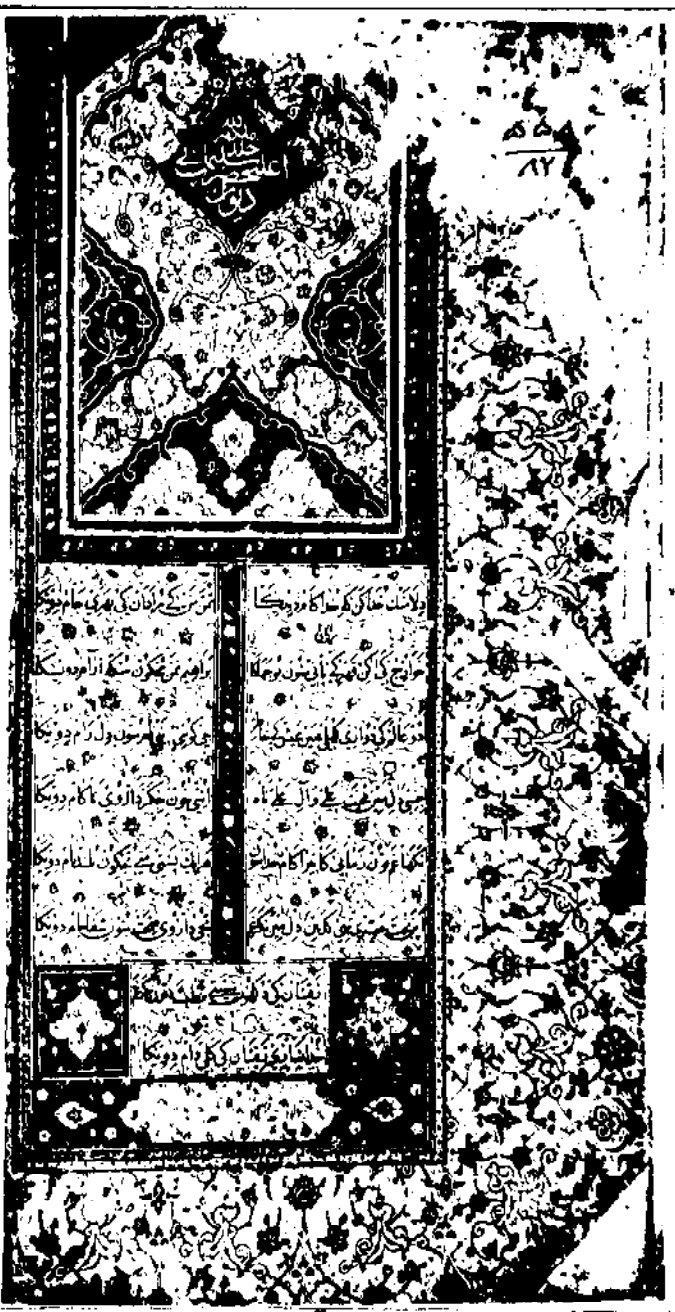

تصویر نمبر ۱۵: آغاز، "دیوانِ محمد قلی قطب شاہ" سے
ثلثِ خاص، اواخر ۱۰ویں/۱۶ویں صدی - داخلہ نمبر ۵۵۸

خواهي که بدي نبايدت پيش — زنهار بد کسان مينديش
آزار کسان مساز پيشه — کازرد کيست برسر هميشه
خواهي چو بلاي جسان اغيار — گردي بجهان بلا گرفتار
کژدم که زنيش کرد نشتر — دو نيش زدن کشندش اکثر
اول زصفا نصيحتش کرد — آنکه بدعا رهاندش از درد
کرديد دو دست عاجز و شل — بهتر نشد از آن که بود اول
مجنون شکسته و وفادار — گريان گريان جدا شد از يار
بر دل زفراق کوه اندوه — کرديد روان بجانب کوه
با خود غم و درد از عدد برد — آورد بخود يکي وصد برد

دل خوش کن اين غريب دلگير — در نغمه چنين نمود تحرير
کان سرور عهد خويش نوفل — کزوي شده چشم دشمن احول
روزي بنشاط و عيش در دشت — از جانب کوه نجد بگذشت
مجنون شکسته بر سر راه — از محنت و درد ميکشيد آه
پرسيد ز حاجبي که اين کيست — واين آه و فغان زاريش چيست
حاجب غم آن غريب بي کوي — با شاه بگفت موي باموي

نوفل

تصویر نمبر ۱۴ : فارسی کی سب سے قدیم کتاب ، لیلیٰ مجنونِ ہاتفی
کلکتہ ۱۲۰۲/۱۷۸۸ — داخلہ نمبر ۱-۲۲

# ISMAEL ABUL-FEDA
## DE VITA
# MOHAMMEDIS.

## CAPUT I.

ذكر مولد رسول الله صلى الله عليه وسلم وذكر شي من شرف بيته الطاهر

اما ابو رسول الله صلعم عبد الله بن عبد المطلب وكانت ولادة عبد الله المذكور قبل الفيل بخمس وعشرين سنة وكان ابوه يحبه لانه كان احسن اولاده واعفهم

وكان ابوه قد بعثه يمتار له تمر عبد الله المذكور بيثرب فمات بها ولرسول الله صلعم شهران وقيل كان حملا ودفن عبد الله في دار الحارث

*De Nativitate* [a] Apostoli Dei, [b] *cui Deus benè precetur, & salutem largiatur. Item de rebus ad Nobilitatem Domûs ejus sanctæ pertinentibus.*

PATER Apostoli Dei, cui Deus benè precetur, & pacem largiatur, fuit Abdo'llah Abdo'l-Motallebi filius. Is Abdo'llah natus fuerat ante Bellum Elephanti annis viginti quinque. Illum pater ejus summopere diligebat, eo quod præ cæteris filiis suis esset pulcherrimus, & morum probitate & innocentia præstantissimus.

Anno ab O. C. sive à Lapsu Adami, secundùm Abu'l-Fedam 6163.
A Nativitate Christi 578.
Ante Hegiram 53.

Cùm autem pater ad commeatus sibi comparandos eum misisset, Abdo'llah ulterius progressus [*] Yathrebi sedem fixit, ibique diem suum obiit. Quo tempore Apostolus Dei . . . duos menses natus erat, vel ut alii dicunt, quum adhuc in utero matris gestaretur. Sepultus fuit Abdo'llah in hospitio Al-Harethi

[*] Quæ urbs postea dicta fuit per Antonomasiam *Medinato'l-Nabi*, *civitas Prophetæ*, & simpliciter, Medina.

تصویر نمبر ۱۳: آغاز عربی مطبوعہ "تاریخ ابوالفدا" سے
آکسن، ۱۳۳۶/۱۷۲۳ داخلہ نمبر ۱۸۴۰

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله وسلام على عباده والصلوة على النبي واله اما بعد فرغنا من الكتاب الاول والثاني في ذكر حد الطب النظري والادوية المفردة وجاز لنا ان نشرع في هذا الكتاب الثالث ونذكر فيها الجزئيات الحافظ للصحة والهادي للصحة فقسمنا هذا الكتاب على اثنين وعشرين فنا وكل فن يشتمل على عدة مقالة وكل مقالة منقسمة على فصول ومستوفي الكلام في الامراض الجزوية الواقعة باعضاء الانسان ظاهرها وباطنها .

## الفن الاول من الكتاب الثالث من القانون في امراض الراس وهو خمس مقالة

## المقالة الاولى في كليات احكام امراض الراس والدماغ

### فصل في منفعة الراس واجزايه

قال جالينوس ان الغرض في خلقة الراس ليس هو الدماغ ولا السمع ولا الشم ولا الذوق ولا اللمس فان هذه الاعضاء والقوي موجودة في الحيوان العديم الراس ولكن الغرض فيه حصول العين في موضعها الذي خلقت له ولينبغي للعين مطلع ومشرف على الاعضاء كلها وفي الجهات جميعها فان قياس العين الى البدن قريب من قياس الطليعة الى العسكر واحسن المواضع للطلايع واصلحها هو الموضع المشرف ثم ايضا لاحاجة الى خلقة الراس لعين على الاطلاق بل للحيوان الذي العين المحتاجة فيه الى فضل حرز ووقاية موضع فان كثيرا من الحيوانات العديمة الاروس خلق له زايدتان مشرفتان من البدن ... ليكون كل منهما مطلعا ومشرفا للبصر ثم لم يحتج في تصرفات عينه الى ... لصلابته ... وانما الحاجة الى الراس للحيوانات التي يحتاج اعينهم الى ... يحتاج الى ان تاتيها اعصاب الحركات ... من حركات المقلة والاجفان ... عضو واحد متباعد ... وانت تستقصي ذلك في باب العين واجزا الراس الاذانية ... الشعر ثم الجلد ثم اللحم ثم الغشاء ... ثم العظم ... ثم الغشا الرقيق المتيمي ثم الدماغ جوهره وبطونه ... ثم الغشاءان تحته ثم الشبكة ثم العظم الذي هو القاعدة للدماغ

### فصل في تشريح الدماغ

فاما تشريح دماغ الانسان فان الدماغ ينقسم الى جوهر ... والى جوهر ... وفيه ... روحها واما الاعصاب فهي كالفروع المتشعبة عنه ... الجزء جوهره الخاص به وجميع الدماغ منفصل في طوله ... وعرضه وبطونه ... من المنفعة المطلوبة وان كانت الزوجية في البطين ... جوهر الدماغ بارد رطب اما برده ... كثرة ... اليه من قوى حركات الاعصاب وانفعالات الحواس وحركات الروح في الانفعالات ... والفكرية ... الروح ... الجار ... من القلب في العرقين ... خلق ... لتناسب اما ... فليكون ما ينبت من العصب ... واما اللين فمعه قال جالينوس ان ... فيه ... الانفعالات ... ليكون ... غذاوه الاعصاب ... بالتدريج فان الاعصاب ... من الدماغ والنخاع ثم الجوهر الصلب لا بعد الصلب ... ولكون ما ينبت عنه ... الثابت منه ... ان ... عند اطرافه ... ولما كان هذا النابت ... في التصلب على التدريج ... صلابة ... يكون ... جوهر ... الروح الذي ... المسرعة الحركة ... فان العصب من الاعضاء ... جوهر ... يتفاوت في اللين والصلابة ... لان الجزء المقدم منه ... والجزء المؤخر اصلب ... باخراج اعصاب الصلب الذي نذكره ... اكثر عصب الحس ... البصر والسمع ينبت منه لان الحس ... وعصب الحركة ... الذي هو ... النخاع ... يحتاج الى فضل صلابة لا يحتاج اليه عصب الحس ... الدماغ ... الى الدماغ المتفرقة فيه ... العصب ... الدم ... جوهر الدماغ ثم ... بالدماغ ... الزايدتين ... الشم ... الدماغ كله ... احدهما ... والاخر ... العظم ... جوهر العظم ... الاخرى ... الانبساط الذي ... الدماغ ... من المنفعة ... الدماغ

تصویر نمبر ۱۲: عربی کی سب سے قدیم کتاب "القانون" سے

روم ۱۰۰۲/۱۵۹۳ داخلہ نمبر ۱۵۷۱

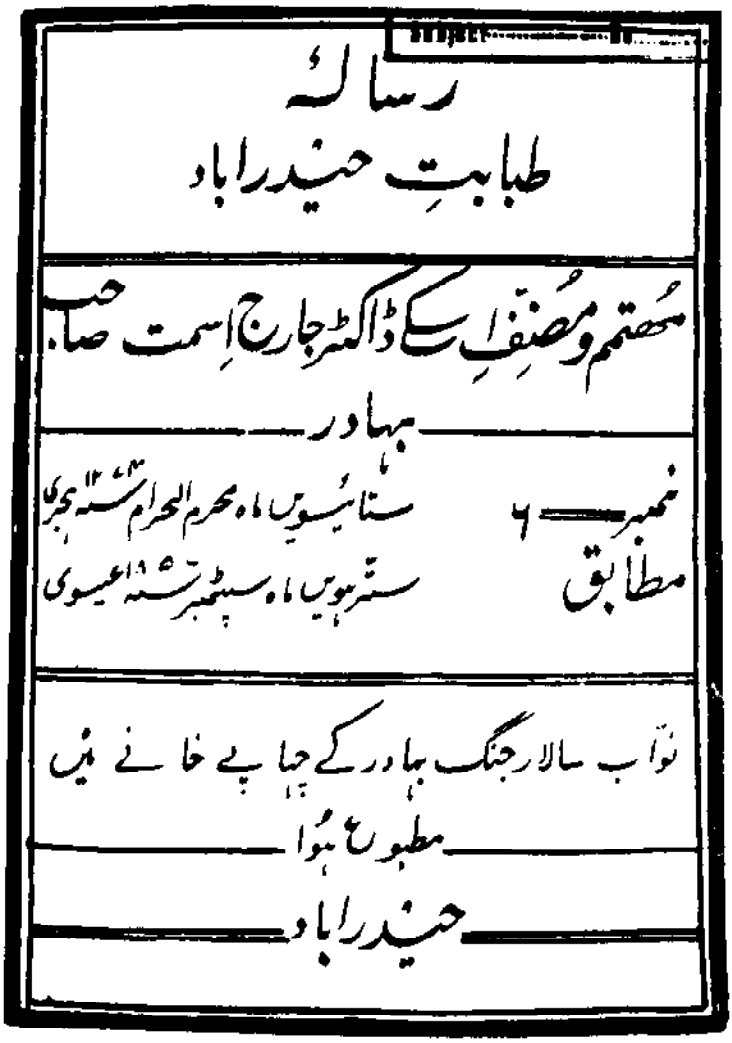

# رسالہ
# طبابت حیدرآباد

مہتمم و مصنف اسکے ڈاکٹر جارج اسمت صاحب بہادر

نمبر ۶ ستائیسویں ماہ محرم الحرام ۱۲۷۴ ہجری

مطابق سترہویں ماہ سپتمبر ۱۸۵۷ عیسوی

نواب سالار جنگ بہادر کے چھاپے خانے میں مطبوع ہوا

حیدرآباد

تصویر نمبر ۱۱: سرورق، مطبوعہ "رسالہ طبابت" سے
حیدرآباد، ۱۲۷۴/۱۸۵۷ واقعہ نمبر ۲۶۳۳

# دیباچه

چهه رسالے ترجمه هوے مگر بعضے اسما انگریزی یا اصطلاح که جو زبان
عربی اور فارسی میں نه میسر هوے انکو اسی زبان اصلی پر بحال رکھے
ایا اور یه چهه رسالے جو ترجمه کیے گئے چهه علم پر مشتمل هیں اسواسطے
نام انکا ستۂ شمسیه رکھا گیا مگر مناسب جانکے علم مقناطیس کو علم اظهار
کی جلد سے علیحده کرکے آخر میں جلد بر تک کے شریک کیا گیا اور ماده
تاریخ اس رسالے کا گذرانا هوا حافظ مولوی شمس الدین فیض کا یهه

## تالیف نواب شمس الامرا

۱۲۵۳

ان علوم کے طالبوں سے یه امید هے که وقت مطالعه اس کتاب کے اگر کچهه
سهو و غلطی عبارت میں پاویں تو اسکے اصلاح دینے میں دریغ نکریں والله ولی التوفیق

تصویر نمبر ۱: دیباچه، مطبوعه "ستۂ شمسیه" سے
حیدر آباد، ۱۲۵۶/۱۸۴۰، داخله نمبر ۲۳۴۹

زیب مسند شوکت وکامگاری نگین خاتم ابهت
ونامداری نیروی بازوی کشورکشایان مصلحت
آموز فرمان روایان مورد الطاف رحمانی مؤید
بیچون آسمانی مرجع ومآب جمهور بعلو نفس وپاکی
طینت مشهور بحسن خلق یکتای روزگار بلی
روزگار را سرمایهٔ افتخار مرکز دایرهٔ مروت
ناصب اعلام فتوت قدوهٔ روساتی عالی مقام مربه
سبج شعرای ذوی الاحترام عندلیب گلستان
معانی گل سرسبد چمنستان سخندانی نقاد
هر اهل زبان معیار هر صاحب بیان هنرپرور
فیض گستر شگفته و لطیفه گو افصح الفصحا امیر الشعرا
نواب سپهر جناب امیر الممالک شمس الدوله
سید احمد علی خان بهادر ذوالفقار جنگ دام اقباله
وعم افضاله ظهور نمود که نسخهٔ مشتمل بر توضیح
اصطلاحات دیار دهلی و روزمرهٔ فصحای اردوی

تصویر نمبر ۹: اردو کی ایک قدیم کتاب "شمس البیان"
مرشد آباد اوائل ۱۳ ویں / ۱۸ ویں صدی داخلہ نمبر ۲۱۹۲

تصویر نمبر۳: مہاراجہ سرکشن پرشاد کی تحریر' مطبوعہ "پریم درپن" سے
حیدرآباد' ۱۳۴۵/۱۹۲۶ - داخلہ ۳۹۶۸

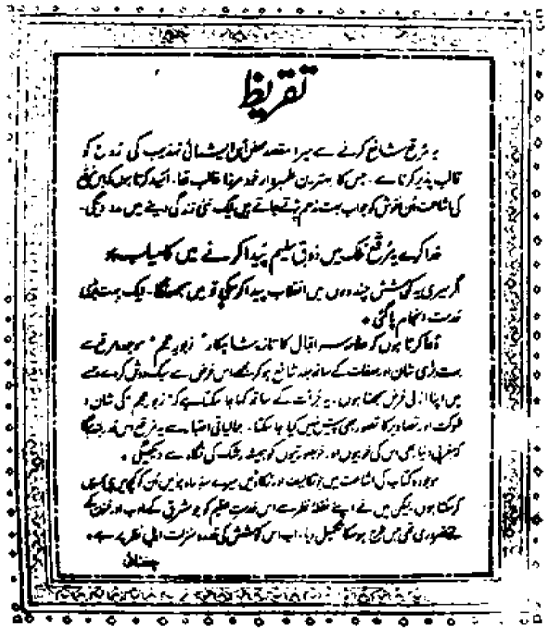

# تقریظ

یہ مرقع شائع کرنے سے میرا مقصد صرف اپنی ایشیائی تہذیب کی تدوین کو
قالب پذیر کرنا ہے۔ جس کا بہترین علمبردار خود مرزا غالب تھا۔ اُمید کرتا ہوں کہ اس نقش
کی اشاعت فنِ نقوش کو جو اب بہت زمر پڑتے جاتے ہیں ایک نئی زندگی دینے میں مدد دیگی۔

خدا کرے یہ مرقع ملک میں ذوقِ سلیم پیدا کرنے میں کامیاب ہو

اگر میری یہ کوشش چند دلوں میں انقلاب پیدا کر سکی تو میں سمجھونگا۔ ایک بہت بڑی
خدمت انجام پا گئی۔

دعا کرتا ہوں کہ علامہ سر اقبال کا تازہ شاہکار "زبورِ عجم" موجودہ رقعے
بہت بڑی شان اور صفات کے ساتھ جلد شائع ہو کر مجھے اس فرض سے سبکدوش کر سکے
جس کو اپنا اولی فرض سمجھتا ہوں۔ یہ جرأت کے ساتھ کہا جا سکتا ہے کہ "زبور عجم" کی شان و
شوکت اور تصاویر کا تصور بھی پیش نہیں کیا جا سکتا۔ جمالیاتی اعتبار سے یہ مرقع اس قدر جاذب
کہ غیر دنیا بھی اس کی خوبیوں اور خوبصورتیوں کو ہمیشہ رشک کی نگاہ سے دیکھیں گی۔

موجودہ کتاب کی اشاعت میں جو تکالیف اور دشواریاں میرے سدِ راہ ہوئیں ان کا کچھ بھی احساس
کر سکتا ہوں۔ لیکن میں نے اپنے نقطۂ نظر سے اس خدمتِ عظیم کو جو مشرق کے ادب اور فن کے
حضور میں تھی جس طرح ہو سکا تکمیل دیا۔ اب اس کوشش کی قدر و منزلت اہل نظر پر ہے

چغتائی



تصویر نمبر ۷، عبدالرحمٰن چغتائی کی دستخط، مطبوعہ "مرقع چغتائی" سے۔ لاہور ۱۳۴۷/۱۹۲۸ داخلہ نمبر ۳۱۰۹

(اوم)

# رامائن

مؤلفہٗ

راجہ راجیشور راؤ بہادر اصغر (ورما)

والئ سمستھان دومکنڈہ

مصنّف و مؤلّف و مترجم

محبوب الاخلاق۔ حدیقۃ الاخلاق۔ گلبنِ دانش

گلزارِ دانش۔ ریاضِ دانش۔ نجم اللغات۔ افسر اللغات۔

قرانِ السعدین۔ فرہنگِ فارسی جدید۔ لغت عربی جدید وغیرہ

سنہ ۱۳۴۳ھ

مطبوعہ مطبع اخترِ دکن واقع افضل گنج

تصویر نمبر ۶: سرورق، فارسی مطبوعہ "رامائن" سے

حیدرآباد، ۱۳۴۳/۱۹۲۴ داخلہ نمبر ۴۸

تصویر نمبر ۵: آغاز ' اردو مخطوطہ " سب رس " سے
ثلث خاص، ۱۰۷۳/۱۶۶۲ داخلہ نمبر ۹۲۵

# حدیقۂ قطب شاہی

شکر و سپاس و ستائش بے قیاس حضرت پادشاہ علی الاطلاق و
آفریدگار انفس و آفاق را جلت عظمتہ و آلاؤہ و عمت عطیاتہ و نعماؤہ کہ خواقین
ذوالقدر عظیم الشان و سلاطین رفیع المکان نافذ فرمان را بمحض قدرت کاملہ و
رحمت شاملہ مظہر آثار قہر و جلال و مصدر حسن اخلاق و خصال و مرآت جمال
با کمال خود گردانید و بخلعت خلافت و تشریف نیابت قامت باستقامت ایشان
آراستہ بر اورنگ سلطنت و شہریاری و تخت خلافت و جہانداری متمکن ساختہ
افراد اصناف عالمیان را مطیع و منقاد اوامر و نواہی ایشان نمود و بیامن معدلت
و نصفت و مآثر سیاست و مہابت ایشان امور جمہور طبقات بنی آدم و مہام کل
اہل عالم ساختہ و بیامان و بحصول مطالب و مآرب فرق امم را
مسرور و شادان گردانید و بخطاب مستطاب انا جعلناک خلیفة فی الارض
وجود فائض الجود ایشان را مخاطب فرمودہ ساحت وسیع الطول والعرض
ارض را محل حکومت و مقر خلافت ساخت و بالقاب بہجت انتساب
ظل اللہ فی الارضین ملقب نمودہ ذرات وجود ممکنات را از انوار رفعات
بے نہایت و پرتو عاطفت بے غایت ایشان مستفیض و فیضیاب گردانید۔ قطعہ
از سایۂ چتر شہان شد دہر با امن و امان وز یمن عدل خسروان مرفوع شد ظلم از جہاں
با طبع شاہان متفق تاثیر بہرام فلک با ظل چتر خسروان خورشید گشتہ توامان
و صلوات نامعدود و تحیات نامحدود من اللہ الملک الودود

تصویر نمبر ۲: آغاز فارسی مخطوطہ "حدیقة السلاطین" سے
نستعلیق اوائل ۱۲ ویں ہجری م ۲۰ ویں صدی عیسوی داخلہ نمبر ۳۶۸۴

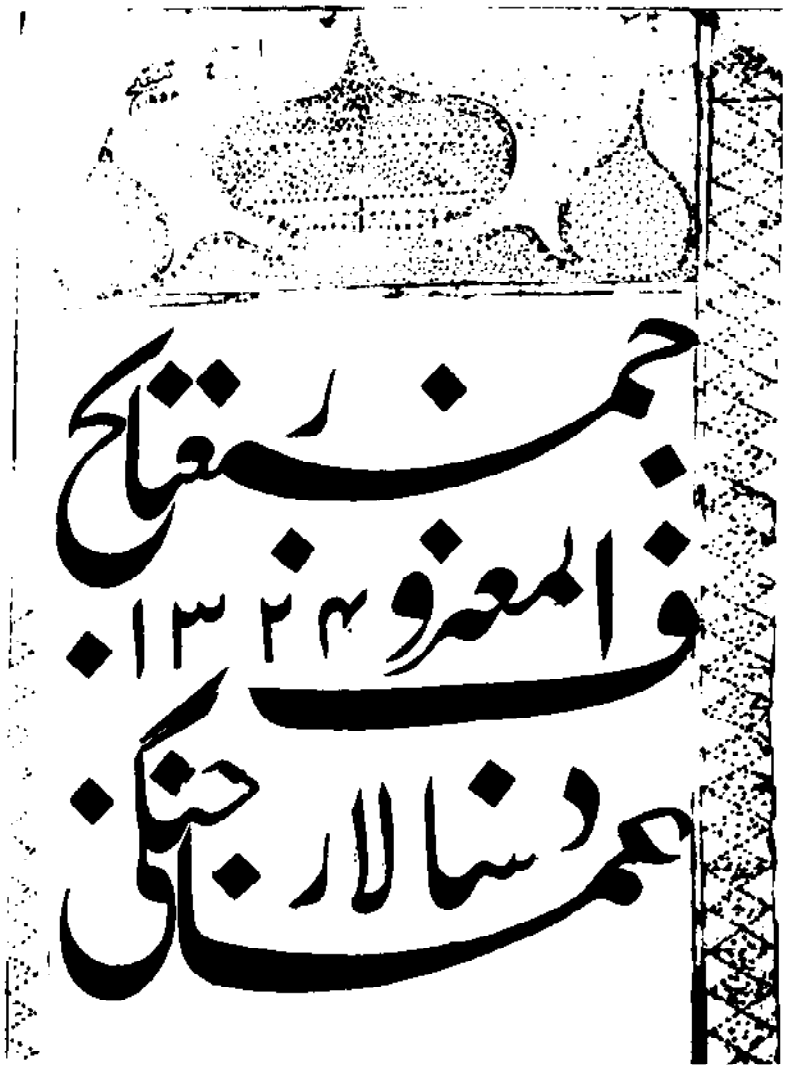

تصویر نمبر ۳۴، سرورق، اردو مخطوطہ "عماد سالار جنگی" سے
نستعلیق ۱۳۳۰/۱۹۱۱ داخلہ نمبر ۹۶۷

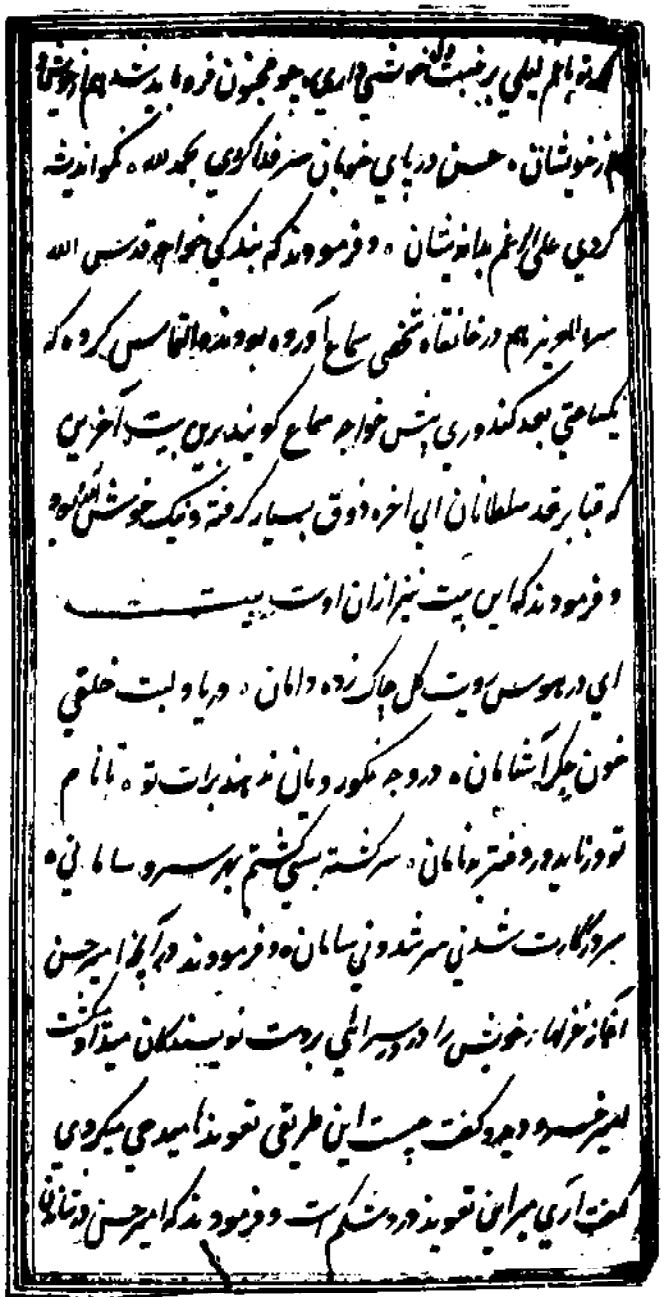

تصویر نمبر ۲: ایک صفحہ، فارسی مخطوطہ "جوامع الکلم" سے
نستعلیق ۱۰۶۷ھ/۱۶۵۷ء داخلہ نمبر ۵۸۴

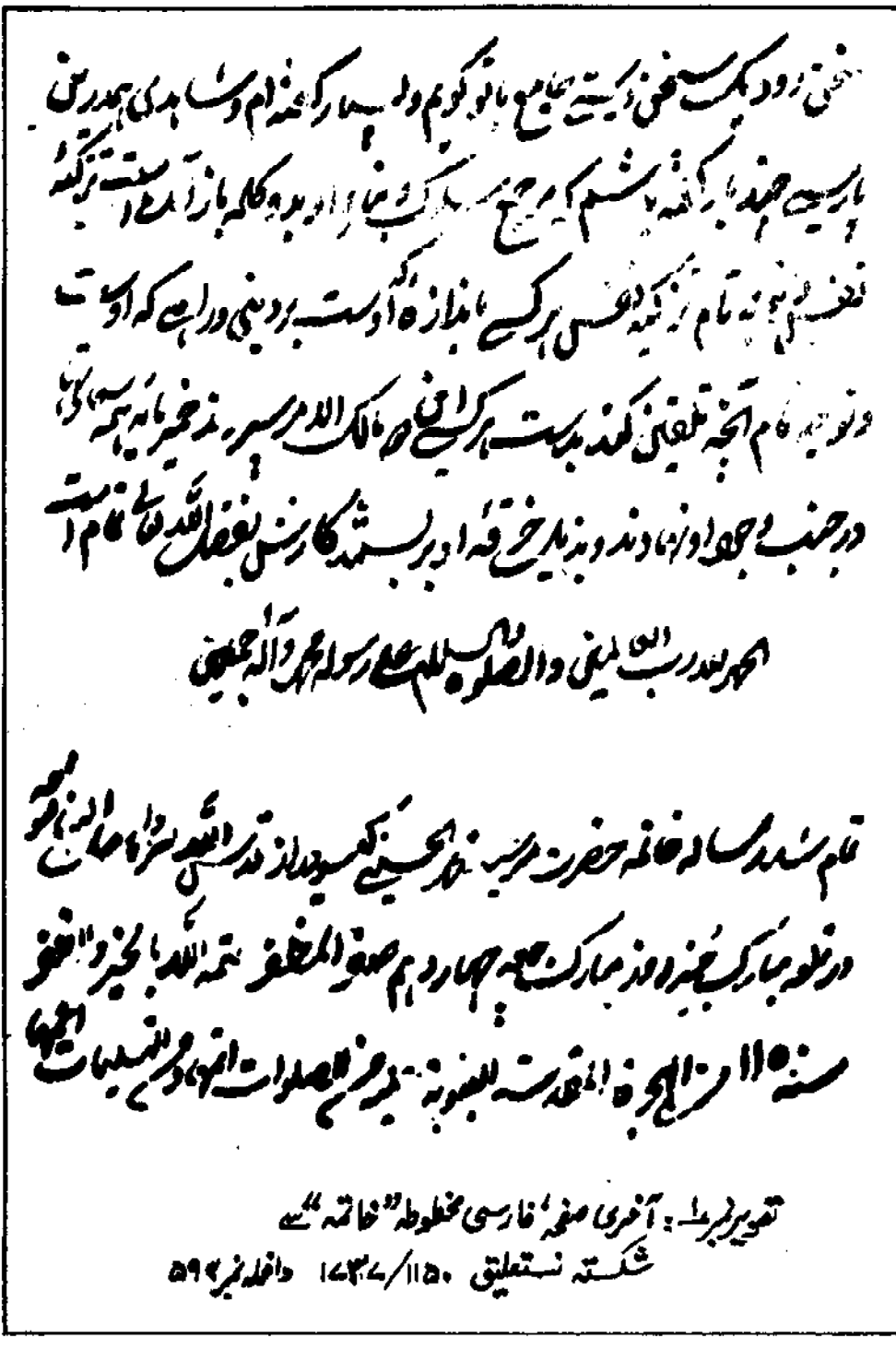

الحمد لله رب العالمین والصلوة والسلام علی رسوله محمد و آله اجمعین

تمام شد رساله خاتمه حضرت مرشد محمد حسینی گیسودراز قدس الله سره ...

در قلعه مبارک گلبرگه روز مبارک جمعه چهاردهم صفر المظفر ختمه الله بالخیر و الظفر

سنه ۱۱۵۰ من الهجرة المقدسة النبویة علیه من الصلوات اتمها و من التسلیمات اکملها

تصویر نمبر ۔: آخری صفحہ، فارسی مخطوطہ "خاتمہ" سے
شکستہ نستعلیق ۱۱۵۰/۱۷۳۷ داخلہ نمبر ۵۹۲

ہے۔ اس میں خاطر خواہ اضافہ کی ضرورت ہے۔

ہماری لائبریری کی کتابیں کسی کو بھی اجراء نہیں کی جاتیں کیوں کہ اس سے کتاب کی گم شدگی کا اندیشہ ہے۔ سالارجنگ میوزیم اور لائبریری کی جانب سے عوام کے معلومات کے لئے کتابوں کی نمائش بھی ہوتی ہے۔ جسمیں اہم مخطوطات اور مطبوعات نمائش کے لئے رکھی جاتی ہیں۔

مگر یہ دیکھکر افسوس ہوتا ہے کہ حیدرآباد کا علمی حلقہ اس کتب خانے کی اہمیت سے واقف نہیں ہے زیادہ تر اسکالرس بیرون حیدرآباد سے آتے ہیں۔

نشان داخلہ اردو : (۱) ۳۱۰۹ - (۲) ۳۹۶۸ - (۳) ۲۱۹۲ - (۴) ۳۱۵۴ - (۵) ۵۸۴۰
نشان داخلہ اردو : (۶) ۳۲۵۴ - (۷) ۵۳۱۷ - (۸) ۳۵۳ - (۹) ۸۷۰۴ - (۱۰) ۲۴۴۹ - (۱۱) ۲۶۳۳
(۱۲) انکے قلمی نسخے بھی شعبہ مخطوطات میں محفوظ ہیں بجز قصہ بے نظیر
نشان داخلہ عربی : (۱۳) ۱۵۷۱ - (۱۴) ۱۸۴ - (۱۵) ۱۸۴۰ - (۱۶) ۱۲۷۸ فارسی - (۱۷) ۱۱۷۸ (۱۸) ۲۲۰۱

۱۸۴۴ء ہے

سالار جنگ کے اس نادر و نایاب کتب خانہ میں فارسی کتابوں کی تعداد (۳۴۵۷) ہے اور فارسی کا قدیم ترین مطبوعہ نسخہ (۱۷) فارسی ، عربی انگریزی لغت ہے جو کہ ۱۱۹۳ھ م ۱۷۸۰ء میں آکسفورڈ سے شائع ہوئی ۔ (۱۸) مثنوی لیلیٰ مجنوں ۱۲۰۲ھ م ۱۷۸۷ء جو کلکتہ میں چھپی تھی اس لائبریری کی زینت ہے (تصویر نمبر ۱۴)

اسطرح استنبول ۔ قسطنطنیہ اور برلن میں چھپی (۱۶۰) ترکی کتابیں بھی ہماری لائبریری میں دیکھی جاسکتی ہیں۔

یہاں اس بات کا ذکر دلچسپی سے خالی نہ ہوگا کہ کئی ذی علم شخصیتوں نے اپنے ذاتی کتب خانے سالارجنگ لائبریری کو بطور تحفہ عطا کئے ہیں ان اصحاب میں سے ڈاکٹر میر یوسف علی خان کا نام سرفہرست ہے جنہوں نے نہ صرف اپنا قیمتی کتب خانہ نواب سالارجنگ بہادر کے حوالہ کیا بلکہ اپنی کئی تصنیفات بھی نواب صاحب کو تحفتاً دے دیں جو مخطوطات کی شکل میں یہاں محفوظ ہیں۔

محترم المقام ہاشم امیر علی صاحب جنہوں نے اپنی زندگی اسلامیات پر ریسرچ کیلئے وقف کردی تھی اور موصوف بے پناہ استفادی اہلیت کے بھی حامل تھے اپنا سارا علمی ذخیرہ معہ الماریوں کے تحفتاً میوزیم کے حوالے کردیا جو اس کتب خانہ میں پوری صیانت اور حفاظت کیساتھ رکھا گیا ہے۔ اور اس پر انکی نام کی تختی بھی آویزاں ہے۔ موصوف کے ذخیرے میں عربی ۔ فارسی ۔ اردو اور انگریزی کی گرانقدر کتابیں موجود ہیں۔ اور اسلامیات پر لکھی گئیں ہیں جس سے تحقیق کرنے والوں کو بڑی مدد ملتی ہے۔

کتب خانے ہذا میں جہاں ہر سال کئی کتابیں خریدی جاتی ہیں وہیں کئی ایک کتابیں تحفتہ بھی وصول ہوتی ہیں عرب ایران وغیرہ سے بھی کتابیں تحفتہ آتی رہتی ہیں اس طرح اس لائبریری میں روز افزوں کتابوں کا اضافہ ہوتا رہتا ہے البتہ یہاں میں ایک بات ضروری طور پر عرض کرنا چاہتی ہوں کہ اردو ۔ عربی ۔ فارسی کتب کی خریدی کے لئے ہمارا موازنہ بالکل ناکافی

کتابیں ہمارے ذخیرہ میں ہیں یہ مطبع حیدرآباد کا قدیم چھاپہ خانہ تھا ۔ (تصویر نمبر ۱۰)

سالار جنگ کے چھاپے خانے میں شائع شدہ کتابیں بھی کتب خانے میں محفوظ ہیں جیسے (۱۰) رسالہ، طبابت ۱۲۷۳ ھ م ۱۸۵۷ء (تصویر نمبر ۱۱) اور قواعد صف کشی کا ترجمہ حصہ اول و دوم ۱۲۷۵ ھ م ۱۸۵۹ء اسکے علاوہ پرانے اخبارات اور رسائل بھی یہاں دیکھے جاسکتے ہیں ۔

تاریخ دکن پر بھی کئی کتب اس کتاب خانہ میں موجود ہیں۔ جو محققین کے لئے ایک بہت کار آمد ذخیرہ ہے جیسے بستان آصفی ۔ دبدبہ نظام ۔ دربار آصف ۔ تزک محبوبیہ ۔ جشن عثمانی وغیرہ۔

سالار جنگ اول و دوم کے ' سفر نامے ' اور سالار جنگ اول اور سوم پر لکھی گئی کتابیں بھی یہاں ملاحظہ کی جاسکتی ہیں جیسے ' ریاض مختاریہ ' ۔ ' مرقع عبرت ' ۔ ' سرسالار جنگ اعظم ' اور ' یوسف دکن ' جو معظمائی بیگم لیڈی کمشنر خزانہ عامرہ سرکار عالی کی تصنیف لطیف ہے۔

۱۹۳۵ء میں جب ولی دکنی کا دو صد سالہ جشن منایا گیا تو نواب سالار جنگ نے محسوس کیا کہ دکنی اردو کے ان نادر مخطوطات کو شائع کیا جانا چاہیئے چنانچہ انھوں نے اپنی سرپرستی میں ایک کمیٹی بنام ' مجلس اشاعت دکنی مخطوطات ' قائم کرکے اس اہم کام کے جملہ اخراجات کی ذمہ داری بھی قبول فرمائی جسکو ' سلسلہ یوسفیہ ' کا نام دیا گیا۔ اس کمیٹی کے زیر اہتمام حسب ذیل کتب شائع کئے گئے جیسے ۱۔ کلیات سلطان محمد قلی قطب شاہ ۲۔ کلیات سراج ۳۔ قصہ، بے نظیر ۴۔ پھول بن ۵۔ مثنوی سیف الملوک بدیع الجمال ۶۔ طوطی نامہ ۷۔ گلشن عشق (۱۲) وغیرہ۔

اسی طرح عربی کتابوں کی تعداد (۲۳۲۲) ہے۔ عربی کی مطبوعہ قدیم ترین کتاب بوعلی سینا کی مشہور تصنیف ' کتاب القانون (۱۳) ' کا وہ نسخہ موجود ہے جو ۱۵۹۳ء میں روم میں چھپا تھا (تصویر نمبر ۱۲) (۱۴) انجیل مقدس کا عربی نسخہ بھی دیکھا جاسکتا ہے جسکی تاریخ طباعت ۱۱۴۰ ھ م ۱۷۲۷ء ہے۔ (۱۵) تاریخ ابوالفدا عربی کی ایک مشہور تاریخ ہے جو ۱۱۳۶ ھ م ۱۷۲۳ء میں عربی کے ساتھ لاطینی زبان کے ترجمے کے ساتھ چھپی تھی وہ بھی یہاں محفوظ ہے (تصویر نمبر ۱۳) (۱۶) تاج اللغات جلد اول پر شاہان اودھ کے نویں حکمران امجد علی شاہ کی مہر ثبت ہے اسکی سنہ اشاعت

شرقی شعبہ میں جملہ (۱۶۵۴۳) کتابیں ہیں جس میں اردو کتابوں کی تعداد (۱۰۶۰۴) ہے۔ ان قیمت کا اندازہ یوں لگایا جاسکتا ہے کہ زیادہ تر طبع اول اور کمیاب ہیں مذاہب عالم پر کافی یکھی جاسکتی ہیں رامائن اور مہابھارت کے اردو اور فارسی ترجمے بھی اس کتب خانہ کی ں جو عام لائبریریوں میں عدم دستیاب ہیں (تصویر نمبر ۶) ۔ مذہبی کتب کے بعد ادبیات ، سوانح عمری دواوین و کلیات اور رسائل سے ہماری لائبریری کی زینت دوبالا ہوجاتی ہے ں کا چوتھائی حصہ اردو ادب کی کتابوں پر مشتمل ہے۔ تقریباً تمام مشہور شعرا کا کلام وجود ہے۔ جیسے مرزا غالب ، داغ ، سودا ، میر اور اقبال وغیرہ اور حیدرآباد کے نامی گرامی سخن کے کلام اس کتب خانے کی رونق ہیں۔ (۱) مرقع چغتائی " کی ایک کاپی یہاں موجود پر فنکار کی دستخط ہے۔ (تصویر نمبر ۶) مہاراجہ کشن پرشاد شاد وزیر اعظم حیدرآباد نے بھی یف (۲) پریم درپن " سالار جنگ سوم کو جولائی ۱۹۳۱ء میں تحفتاً دی تھی۔ وہ بھی محفوظ صویر نمبر ۷)

ردو کی سب سے قدیم کتاب (۳) شمس البیان ہے۔ جو ۱۲۰۷ ھ م ۱۷۹۲ء مرشد آباد میں ) ہمارے اس نادر و نایاب کتب خانے میں دیکھی جاسکتی ہے۔ (تصویر نمبر ۹) " (۴) کی باغ و بہار " جو فورٹ ولیم کالج کلکتہ سے ۱۲۱۵ ھ م ۱۸۰۱ء میں شائع ہوئی اس لائبریری ، ہے۔ کلکتہ سے شائع شدہ بہت سی قدیم کتب اس کتب خانہ میں موجود ہیں۔ مثلاً (۵) محفل مطبوعہ ۱۲۲۳ ھ م ۱۸۰۸ء ۔

) " کلیات میر " ۱۲۲۶ ھ م ۱۸۱۱ء ، (۷) لب التواریخ ۱۲۴۴ ھ م ۱۸۲۹ء اور (۸) کشف ۱۲۴۷ ھ م ۱۸۳۲ء جوکہ حافظ شاہ شجاع الدین رحمۃ اللہ علیہ کی انتہائی مفید تصنیف ہے ، حیدرآباد کے ایک بڑے بزرگ گزرے ہیں جنکا مزار حیدرآباد کے محلہ عیدی بازار میں ائق ہے اس کتاب کا اولین نسخہ اس کتب خانہ میں دیکھا جاسکتا ہے۔ (۹) منتخبات ہندی ، دوم ۱۲۳۲ ھ م ۱۸۱۷ء جو لندن میں چھپی تھی وہ بھی ہمارے پاس ہے اسکے علاوہ سنہ ۱۲ ھ م ۱۸۴۰ء سنگی چھاپہ خانہ شمس الامراء امیر کبیر حیدرآباد کے مطبع سے چھپی بہت سی

لطیف النساء رضوی
لائبریری اسسٹنٹ
سالار جنگ میوزیم لائبریری، حیدرآباد

# سالار جنگ میوزیم لائبریری کے گرانقدر مطبوعات

تہذیب و تمدن کیلئے کتب خانوں کا فروغ لازم و ملزوم ہے، جس قوم کے افراد میں پڑھنے لکھنے کا شوق ہو وہ قوم ترقی کی منازل تیزی سے طے کرتی ہے۔ چنانچہ ہم دیکھتے ہیں کہ آجکل مہذب اقوام اپنے کتب خانوں پر بجٹ کا معتدبہ حصہ خرچ کرتی ہے۔

برٹش لائبریری، لندن، میں سمجھتی ہوں کہ دنیا کی سب سے بڑی لائبریری ہے جہاں زبان کی کتابیں موجود ہیں اور اسکے مختلف شعبے پڑھنے والوں کے لئے ساری سہولتیں مہیا کرتے ہیں۔

اسی طرح سالار جنگ میوزیم لائبریری حیدرآباد آندھراپردیش کا ایک ایسا کتب خانہ ہے جہاں کتابیں لائبریری کے جدید سائینسی اصول سے آراستہ کی جاکر پوری حفاظت سے رکھی گئی ہیں اور قارئین کو آسانی کے ساتھ فراہم کی جاتی ہیں۔ کتابوں کا یہ وسیع ذخیرہ اردو، عربی، فارسی، ترکی، انگریزی، فرانسیسی، جرمنی اور دیگر زبانوں کی ہزار ہا کتب پر مشتمل ہے مگر یہاں صرف اردو، عربی، فارسی اور ترکی کی نادر و نایاب مطبوعات کے متعلق گفتگو کرونگی جن میں سے اکثر کتابیں ایسی ہیں جو حیدرآباد کے دیگر کتب خانوں میں دستیاب نہیں ہیں اس کی بڑی وجہ یہ ہے کہ سالار جنگ میوزیم لائبریری میں جب کوئی کتاب داخل ہوجاتی ہے تو اس کی حیثیت ایک "نادر شئے" کی سی ہوجاتی ہے۔

سالار جنگ لائبریری میں مشرقی زبانوں کے مطبوعات بہلت ہی قیمتی ہیں اور تمام علوم پر مشتمل ہیں مثال کے طور پر تفسیر، حدیث، فقہ، ادب، نظم، تذکرہ، تصوف، رسائل، تاریخ اور سوانح وغیرہ۔

سے آسانی سے ہوسکتا ہے۔ بازار عوام اور حکومت کے رابطہ کو سمجھنے میں بھی مدد کرتے ہیں بازاروں سے شہر کی زندگی کی رفتار بھی سمجھ میں آجاتی ہے اور طبقاتی تہذیب کا فرق بھی معلوم ہوتا ہے۔

حیدرآباد کے بازاروں کا اپنا ایک کلچر ہے جس میں یگانگت ہے موالست ہے۔ پیار ہے محبت ہے یہ سب باتیں دیکھنے سے سمجھ میں آتی ہیں بیان کرنے سے نہیں۔

(۱) حیدرآباد کی قدیم ترین تاریخ " تاریخ محمد قطب شاہ " محزونہ سالار جنگ میوزیم میں بھی اس بازار کا ذکر ملتا ہے۔ ویسے تاریخ رشید الدین خانی عہد آصف جاہ پنجم کی تصنیف ہے ، ۱۸۵۳ / ۱۲۷۰ ھ (مدیر)

خواتین ہی کے لیئے راستہ کھلا رہتا ہے۔ جب زمانہ سستا تھا اور روپیہ کی قدر گھٹی نہیں تھی تو چوڑی کے جوڑے کی قیمت ایک روپیہ سے پچیس روپیہ تک تھی آج روپیہ کی قیمت اس درجہ گھٹ گئی ہے کہ ایک جوڑے کی قیمت ایک ہزار روپیہ تک ہوگئی ہے، لاڈبازار مشرقی تہذیب کا آئینہ دار بھی ہے اور محافظ بھی۔

حیدرآباد کے اور بھی بازار تاریخی اہمیت کے حامل ہیں جن میں ریذیڈنسی کا بازار، ترپ بازار، حسینی میاں بازار، گھانسی میاں بازار وغیرہ آخر میں یوسف بازار کا مختصر تعارف کرایا جاتا ہے۔

**یوسف بازار:** مؤلف ریاض مختار یہ دلاور علی دانش یوسف بازار کے بارے میں لکھتے ہیں۔

" والدہ ماجدہ نواب صاحب دام اقبالہ، (سالار جنگ سوم یوسف علی خاں) نے متصل دروازہ پل افضل گنج علاقہ بارہ دری پر بصرف زر ذاتی تقریباً پنجاہ ہزار روپیہ بہ نگرانی سدی عنبر خانساماں دکانیں پختہ و حسین بنواکر بنام نامی فرزند عزیز ---- حسب معروضہ مؤلف یوسف بازار، نام رکھا جسکی تعمیر و افتتاح کے قطعات تاریخ یہ ہیں (ص ۸۸):

یوسف علی ابن نور چشم سالار
یوسف بازار شد بنامش تیار ۱۳۱۸ ھ

آج بھی یہ بازار آباد ہے، پہلے مختلف اشیا کی دکانیں تھیں، یہاں ایک حمام بھی تھا جہاں لوگ معمولی پیسے دے کر حمام کیا کرتے تھے۔ آج کل چمڑے کی دکانیں زیادہ ہیں۔ یہاں سیکل ریپرنگ کی عون آفندی کی قدیم ترین دکان ہے اس بازار کے ایک حصہ میں موچی رہتے ہیں۔ ملگیاں قدیم ہیں ان میں ابھی کسی قسم کی تبدیلی نہیں کی گئی ہے۔

بازار خرید و فروخت سے ہٹ کر بھی بڑی اہمیت کے حامل ہوتے ہیں۔ مختلف تہذیبوں طبقوں، مختلف عقیدوں کے لوگوں کی فکر کا مطالعہ کرنے کا اچھا ذریعہ ہوتے ہیں۔ مختلف زبانوں کی وسعت و توسیع کا بھی موثر سبب ہوتے ہیں۔ لفظوں اور محاوروں وغیرہ کا تبادلہ بازار کی مدد

جاتا ہے۔ چکسہ ، مہندی دولھا کے لئے چھوٹی چاندی گڑھی کھڑاویں دلہن کی جوتیاں مہندی کی چوکی۔ جلوے کے جوڑے دوپٹے دولھا کی دستار شیروانی ، مسند ، بری کا سامان یہیں ملتا ہے ماکتھڑا لڑکے لڑکیاں اس بازار میں آتے ہیں تو کتھدائی کا منظر ان کی آنکھوں میں پھر جاتا ہے یہاں ایک رخ پر سہاگ کے کپڑے ، سہاگ کی نشانی کالی پوت کے لچھے ، عطریات ، لال ناڑے ، سلمٰی ستارہ ہر قسم کی چھلے وغیرہ کی دکانیں ہیں۔ اس سلسلہ میں طیاری کا سامان بھی ملتا ہے۔ یہاں گرد چوب کی دکانیں بھی ہیں جہاں بڑلی ، سپاری ، چھالیہ ، جوز جوتری جن کا آج کل رواج کم ہوگیا ہے مختلف قسم کے زردے اور کتھے اگر نام گنائے جائیں تو ایک طویل فہرست ہوتی ہے سلیقہ سے جمائے جاتے ہیں۔ یہاں کارچوب کا کام اعلیٰ پیمانہ پر ہوتا ہے۔ بازار آج بھی قدیم دور کی یاد دلاتا ہے قدیم سکے آج بھی دیکھنے کو یہیں مل جاتے ہیں۔ خلوت کا نوبت خانہ قدیم زمانہ کی یاد کو تازہ کردیتا ہے۔ طیاری سامان کی دکانوں پر کھلونے ، کوڑیاں ، مکے کوکو کی ڈبیاں دیہاتیوں کا من بھاتا سامان مل جاتا ہے۔ یہاں سلور کی چنگریاں ، پاندان ، ناگردان ، کشتیاں ، ڈبیاں بہت خوبصورت بنائی جاتی ہیں۔ وہ اسی بازار میں دستیاب ہوتی ہیں۔ اس سہاگ بازار کی سب سے اہم شئے چوڑیاں ہیں۔ یہاں کی چوڑیاں ساری دنیا میں مشہور ہیں۔ بیرونی سیاح حیدرآباد کی اس صنعت کو بڑے شوق و اشتیاق سے خریدنے اور حیدرآباد کا تحفہ سمجھ کر لے جاتے ہیں۔ چوڑیاں سہاگ کی خاص علامت ہیں اور کالی پوت کے لچھے کی طرح اہم ہوتی ہیں۔ سہاگنیں خالی ہاتھ رکھنے کو بدشگونی سمجھتی ہیں موجودہ بیداری کے دور میں بھی جوڑا نہ سہی دو تین چوڑیاں ضرور پہن لیتی ہیں۔ چوڑیوں کے نام بدلتے رہتے ہیں۔ پہلے کے نام کچھ اسطرح تھے سلور جوبلی ، چل چل رے نوجوان ، گلبہار ، ہوائی جہاز ، اگر جوڑا ہوتا تو نام بدل جاتا جوڑا گوٹوں اور چوڑیوں پر مشتمل ہوتا ہے جو بہت ہی خوبصورت رنگ بہ رنگ کے چھوٹے بڑے نگوں سے جڑی ہوتی ہیں۔ ان کے نام یہ تھے مچھلی ، جالی ، پھول پان ، الٹی کٹوری ، نورتن وغیرہ۔ موجودہ ناموں میں انارکلی ، دھوپ چھاؤں ، پاکیزہ وغیرہ مشہور ہیں۔ لاڈبازار میں ہمیشہ بہار بے خزاں رہتی ہے لیکن اس بہار کا شباب عیدوں کے موقعوں پر نظر آتا ہے ، ان موقعوں پر ٹریفک روک دی جاتی ہے اور صرف

پتھر گٹی : مدینہ بلڈنگ سے شروع ہو جاتی ہے اسکے دونوں جانب کپڑے، گرد چوب جوتے سیکل، گھڑی کی دکانیں ہیں ۔ یہاں پر کمخواب سے لیکر ململ اور چکاری تک ہر قسم کا کپڑا ملتا ہے پتھر گٹی کی کمانوں میں لنگیوں کی اٹھاؤ دکانوں نے لنگی مارکٹ ہی بنا ڈالا ہے ۔

یہاں ٹرنک کی دکانیں بھی کثرت سے ہیں مچھلی کمان کے پاس عثمانیہ بازار ہے جہاں چینی کے اعلیٰ سے اعلیٰ ظروف پیرو میکس ، گلدستے اور سلور کے برتن کی بڑی دکانیں ہیں یہاں کی بھی قیمتیں مقرر رہتی ہیں لیکن ڈسکاؤنٹ کی گنجائش قیمتوں میں تھوڑی بہت تبدیلی کرتی رہتی ہیں ۔ مچھلی کمان میں اصغر علی ، محمد علی کی عطر کی اور سرمہ کی خاص دکانیں ہیں۔ یہاں نصابی کتابوں کی دکانوں میں جون جولائی میں طلبا کی بڑی بھیڑ رہتی ہے ذرا آگے بڑھئے تو گلزار حوض جو سونے چاندی کی دکانوں کے لئیے مشہور ہے کا سلسلہ شروع ہوتا ہے۔ جوہری زیورات سلیقہ سے سجائے رکھتے ہیں موٹر نشین خواتین ان جوہریوں کے خاص گاہک ہیں۔ یہاں برقعہ پوش بھی نظر آتی ہیں اور بے پردہ خواتین بھی دکھائی دیتی ہیں اور غیر مسلم خواتین بھی ۔ خواتین کا سیلاب پھر ہمکو لاڑبازار میں دکھائی دیتا ہے۔

لاڑبازار : حیدرآباد کے سب بازاروں میں الگ منفرد بازار ہے۔ یہ اتنا دلکش بازار ہے کہ بیرونی سیاح بھی اسے دیکھ کر مبہوت ہوجاتے ہیں۔ اور اس بازار میں خریدار بن کر بڑی مسرت محسوس کرتے ہیں۔ اس بازار کا مزاج بڑا نازک ہے اس بازار کی ادائیں سب بازاروں سے مختلف ہیں۔ لاڑبازار دراصل سہاگ بازار ہے چار مینار کے قریب سے چوک تک جانے والی سڑک کے دورویہ دکانیں لاڑبازار کہلاتی ہیں اسکی وجہ تسمیہ میں اختلاف ہے کوئی کہتا ہے ابوالحسن تاناشاہ کے وفادار سپہ سالار عبدالرزاق لاری کے نام سے یہ بازار لاری بازار کہلاتا تھا جو کثرت استعمال سے لاڑبازار ہوگیا۔ کسی کا کہنا ہے کہ وائسرائے ہند لارڈ این نے ۱۸۸۴ء میں محلوت مبارک کے دربار میں شرکت کی تھی اور وہ اس راستہ سے گذرا تھا۔ اس لئیے اس کا نام " لارڈ بازار " رکھا گیا جو بگڑ کر لاڑبازار ہوگیا جو کچھ بھی اس بازار کا نام بگڑ کر اور حسین ہوگیا۔ یہی ایک بازار ایسا ہے جو عطریات کی خوشبو سے مہکتا رہتا ہے۔ یہاں شادی کی رسموں کا سارا سامان مل

دکان بھی قائم کی گئی اس کے بعد سے اس شاپ کو اتنی شہرت ہوئی کہ عابد شاپ ایک بڑے اور شائستہ بازار کا نام ہی پڑ گیا - عابدز کی سڑک پر دو رویہ کپڑے ، سونا ، چاندی ، جوتوں ، بیاگ ، گھڑی ، جینک وغیرہ کی اونچے معیار کی دکانیں ہیں - یہاں بنجارہ ہلز ہتذہب کے دولت مند افراد آتے ہیں اور خرید و فروخت کرتے ہیں - تاجر اور گاہک میں گفتگو بہت شائستہ انداز میں ہوتی ہے مال کے دام مقرر ہوتے ہیں اس لئے یہاں کی دکانوں میں پر کوئی بحث نہیں ہوتی. اشیا کے انتقاب کے سلسلہ میں آپس میں گفتگو ہوا کرتی ہے، عابدز پر جدید ترین فیشن ایبل لباس کا تعارف آسانی سے ہو جاتا ہے اور ہتذہب کا فرق بھی صاف سمجھ میں آجاتا ہے، عابدز پر ناظر کو جو چیز نمایاں طور پر نظر آتی ہے وہ موٹروں کا سلیقہ سے کھڑا رہنا اور دوسری سواریوں کا حرکت میں رہنا اس سے جو نتیجہ نکلتا ہے وہ واضح ہے -

عابدز روڈ کی دو رویہ دکانیں شوروم بڑے سجے سجائے ہوئے ہیں ان کی سجاوٹ میں کمرشیل پہلو کے ساتھ ساتھ آرٹ کے اچھے نمونے بھی نظر آتے ہیں - عابد روڈ پر اب تو کئی منزلہ عمارتیں بن گئی ہیں - یہ سڑک معظم جاہی مارکٹ کی سڑک سے مل جاتی ہے - اور وہ افضل گنج کی شاہراہ سے مل جاتی ہے یہی تسلسل آگے بڑھتا ہوا پتھر گٹی تک پہنچتا ہے اور وہاں سے گزر کر چارمینار سے ہوتا ہوا شاہ علی بنڈہ تک پہنچ جاتا ہے - اس شاہراہ پر پہلے معظم جاہی مارکٹ کی عمارت ملتی ہے - دراصل یہاں میوہ مارکٹ ہے - ہر قسم کا میوہ یہاں دستیاب ہوتا ہے سویرے تھوک فروشی کا بازار گرم رہتا ہے - میووں کی دکانوں کا سجاؤ ایسا ہوتا ہے کہ بڑے بڑوں کے منہ میں پانی آنے لگتا ہے آم ، انناس ، موسمبی ، سنگترے ، سیب ، پپئی ، سپوٹے ، انگور ، آلو بخارے ، پھنس سے دکانیں سجی رہتی ہیں میووں کی دکانوں کے ختم پر پھول والوں کی دکانیں گلاب ، چنبیلی، موتیا، موگرا، سیتوتی، گیندا، گلاب، جوہی، رائے بیل، چنپا، جوہی کے ڈھیر لگے رہتے ہیں پھولوں کے ہاروں سہروں سے دکانیں سجی اور مہکی رہتی ہیں - آگے عثمان گنج ملتا ہے جسکا ذکر ہو چکا - ذرا فاصلہ پر محبوب گنج ہے یہاں بڑی بڑی کرانے کی دکانیں ہیں اور موٹر پارٹس کی دکانیں بھی ہیں -

کرتے ہوئے چند بازاروں کا تعارف مقصود ہے ۔

دیہاتوں میں آج بھی یہ دستور ہے کہ ہفتہ میں ایک دن بازار بھرتا ہے، گاؤں والے ہفتہ بھر کی چیزیں اس دن خرید کر لے جاتے ہیں ۔ ایسے ہفتہ واری بازار کی ایک مثال جمعرات کے بازار کی ہے لیکن یہاں اشیائے خوردو نوش نہیں بکتی ہیں بلکہ پرانا سامان بیچا جاتا ہے ۔ نوادرات کے بیوپاری یہاں ضرور ایک چکر لگا لیا کرتے ہیں ۔ بعض مرتبہ بڑی قیمتی چیزیں یہاں مل جاتی ہیں ۔ منگل ہاٹ اب بازار نہیں محلہ ہوگیا ہے ۔ بیگم بازار حیدرآباد کا قدیم بازار ہے ۔ یہہ بازار نواب نظام علی خاں آصف جاہ دوم کی ماں قدسیہ بیگم کے نام سے موسوم ہے ۔ کسی زمانہ میں غلہ کا بہت بڑا مرکز تھا کسی نے ان کا نام عمدہ بیگم بھی لکھا ہے۔ یہ بازار بہت بڑے رقبہ پر پھیلا ہوا تھا کسی زمانے میں یہاں ہاتھیوں کی تجارت ہوتی تھی، پھر ساہوکار آگئے۔ بیگم بازار میں مارواڑی طبقہ زیادہ آباد ہے اب بیگم بازار سمٹ گیا ہے کولسہ واڑی، فیل خانہ، گوشہ محل کے حوض گھرا ہوا حصہ بیگم بازار کہلاتا ہے یہاں مچھلی مارکٹ بھی ہے بیگم بازار تانبہ و پیتل ، پلاسٹک اور دوسرے معیاری سامان کا بڑا مرکز ہے یہاں بھی روزانہ لاکھوں کی تجارت ہوتی ہے یہاں کے مال کی قیمتیں مقرر ہیں چکانے کا یہاں کوئی سوال نہیں ہے ۔ بیوپار کی رفتار تیز ضرور ہے لیکن شور و غوغا، نہیں ہے جیسا کہ گنج اور منڈی میں نظر آتا ہے جلد بیوپاری آتے ہیں مقررہ قیمت ادا کرتے ہیں مال لیتے ہیں اور بازار سے نکل جاتے ہیں ۔ البتہ پیتل تانبہ کی دکانوں پر اشیا کی قیمت کے بارے میں ہلکی ہلکی تکرار رہتی ہے جو بہت جلد طے ہو جاتی ہے ۔ بیگم بازار کے راستے گلی نما ہیں ۔ ان تنگ راستوں پر ذرا سی بھی بھیڑ بہت زیادہ دکھائی دیتی ہے رکشا ، موٹر ، موٹر سیکل اور سیکل اکثر راستہ کو روک دیتے ہیں۔

عابد شاپ : یہہ شہر کا خاص بازار ہے ۔ "شہر حیدرآباد" کے مؤلف عبدالشکور کا کہنا ہے کہ عابد شاپ ابتدا میں خیاطی کی ایک دکان تھی جو چادر گھاٹ کے قریب کہیں تھی بعد میں موجودہ مقام پر امیر حسن اول تعلقدار کا مکان خرید کر اس شاپ کو یہاں منتقل کیا گیا یہاں اسکو ترقی ہوئی اس مقام پر آج کل پیالیس دکانیں ہیں ۔ یہاں پارچہ سلوائی کے علاوہ انگریزی دواؤں کی

کہ میر عالم نے منڈی کی دو دن کی آمدنی رفاہ عام کے لئے وقف کر دی تھی ۔ یہاں انہوں نے اپنی دیوڑھی پر گھڑیال نصب کی تھی جو حال تک تھی دیوڑھی کے ساتھ گھڑیال بھی بک گئی اب آثار رہ گئے ہیں ۔

اس منڈی میں سبزی ترکاری کے علاوہ ادرک، لہسن، املی، سوکھی مرچ کی تھوک اور چلر فروخت ہوتی ہیں یہاں کپڑے کی دکانیں بھی ہیں اور سلور کے برتنوں کی بھی دکانیں ہیں، سوکھی مچھلی کی دکانوں کے ساتھ ساتھ گردلا، بیلن، چمٹا، پھونکنی، توا، بکٹ، کفگیر، ڈوئی، دال گھوٹنی کڑھائی، جھاڑو وغیرہ کی دکانیں بھی ہیں ۔ یہاں گوشت کی دکانیں بھی کافی ہیں ۔ یہاں بھی سویرے سات بجے سے ۱۲ بجے تک ترکاری کا تھوک بیوپار ہوتا ہے ۔ ۱۲ بجے سے شام تک چلر فروشی ہوتی ہے ۲ بجے سے ۴ بجے تک منڈی کھچا کھچ بھری رہتی ہے عورتوں مردوں بچوں کا ایک سیلاب رہتا ہے ۔ سیکل، موٹر سیکلیں، ہنڈیاں، موٹریں، لاریاں رکھنے تل دھرنے کو جگہ نہیں رہتی ۔ یہاں بھی زندگی کی موجیں بہت تیز رہتی ہیں ۔ چلر فروشی کی کم و بیش سب اٹھاؤ دکانیں ہیں ۔ یہاں بھی دام چکانے کا منظر عثمان گنج سے زیادہ دلچسپ رہتا ہے ۔ خصوصاً عورتیں عورتوں سے بھاؤ کی بات کرتی ہیں تب بڑا لطف آتا ہے۔ ایک زمانہ تھا منڈی تین بجے دن کو بالکل ختم ہو جایا کرتی تھی چنانچہ اس زمانہ میں یہ مصرعہ زبان زد خاص وعام تھا " جو آیا تین پر کانٹا تو منڈی بھر ہوئی دیکھو "۔ " بھر ہونا " محاورہ ہے اسکے معنی ختم ہونے کے ہیں ۔

اب منڈی کی نوعیت بدل گئی ہے منڈی کے اصل احاطہ کے باہر غلہ کی بڑی بڑی دکانیں قائم ہو گئی ہیں اور ترکاری کی اٹھاؤ دکانیں اور ٹھیلے کے بیوپاری دوپہر سے پتھرگٹی تک پھیل جاتے ہیں اور رات دیر گئے تک بیوپار کرتے رہتے ہیں یہاں بھی دن بھر میں لاکھوں کا بیوپار ہوتا ہے ۔

بازار حیدرآباد کے کئی بازار بہت مشہور ہیں انکی اپنی ایک تاریخ بھی ہے جیسے ترپ بازار، صبی میاں کا بازار، گھانسی میاں کا بازار، نور خاں بازار، بیگم بازار، متفرات کا بازار، عابد شاپ پتھرگٹی، معظم جاہی مارکٹ، سلطان بازار، بڑا بازار، لاڑ بازار وغیرہ ۔ بازاروں پر گفتگو کو مختصر

کے تقریباً وسط میں واقع ہے - یہاں ایک اونچی مسجد ہے جو عثمانیہ مسجد کہلاتی ہے - یہ گنج نواب میر عثمان علی خاں آصف سابع کے نام سے موسوم ہے - بہت ہی معروف گنج ہے - رات بھر اناج کی لاریاں آتی رہتی ہیں اور دن بھر ان کا بیوپار ہوتا ہے اس گنج میں زمین سے اگنے والی ساری پیداواروں کی خریدو فروخت ہوتی ہے، روزانہ لاکھوں کا مال خریدا اور بیچا جاتا ہے - یہاں صبح اور شام کو بازار بہت گرم رہتا ہے تھوک اور چلر دونوں طرح کا بیوپار ہوتا ہے یہاں مستقل دکانوں کے علاوہ اٹھاؤ دکانیں بھی ہیں - بڑے بڑے چھاتوں کے نیچے پیاز، املی، لال مرچ، ادرک لہسن اور دالوں وغیرہ کی بکری بھی ہوتی ہے - عثمان گنج میں داخل ہوتے ہی نئے آدمی کو سب سے پہلے جھٹکوں سے نجات حاصل کرنا پڑتا ہے - حیدرآبادی لفظ " ڈھالس " کی لہریں چلتی رہتی ہیں جو اجنبی کو چھینکنے پر مجبور کرتی رہتی ہیں - گنج کی گرم بازاری میں زندگی کا تموج ناظر کو بہت متاثر کرتا ہے - زندگی کی تیز رفتاری کا احساس بھی ہونے لگتا ہے، تاجر گاہک کو زیادہ دیر نہیں ٹھہراتا - دام چکانے کا مرحلہ بڑا دلچسپ رہتا ہے، تاجر جتنے اونچے دام بتاتا ہے گاہک دام کو اتنا ہی گرا کر سودا کرنا چاہتا ہے، لمحہ بھر کی یہ تکرار بڑی مزے دار ہوتی ہے - خصوصاً خواتین اشیاء کی قیمت اس بے دردی سے گراتی ہیں کہ تاجر جھلا جاتا ہے - لیکن اسکا ضبط قابل داد ہوتا ہے -

منڈی: ہندی لفظ ہے یہ بھی تھوک فروشی کی جگہ ہے - حیدرآباد میں مستقل منڈیاں بھی ہیں اور موسمی منڈیاں بھی ہوتی ہیں - سبزی منڈی اور میر عالم کی منڈی مستقل منڈیاں ہیں - آم کی منڈی، سیتاپھل منڈی موسمی ہوتی ہیں سبزی منڈی اور میر عالم کی منڈی سبزی ترکاری کی منڈیاں ہیں، سبزی منڈی کا بیوپار سویرے کا ہے یہ بازار دوپہر سے پہلے ختم ہو جاتا ہے -

۱۲۱۹ ھ میں میر عالم نے اپنے جلو خانہ میں منڈی کی بنیاد رکھی اور اسکا نام بادشاہ وقت سکندر جاہ کے نام پر سکندر گنج رکھا لیکن یہ نام مشہور نہ ہوسکا عوام نے اپنی مرضی سے میر عالم کی منڈی کہنا شروع کیا اور یہی نام چل پڑا - اس منڈی کے قیام کا مقصد یہی تھا کہ عوام کو روز مرہ کی چیزیں کم وقت میں کم فاصلہ پر آسانی سے میسر آجائیں - اس منڈی کی ایک خصوصیت یہ تھی

تبدیل کر دیا ۔ چوک کی اس نئی تعمیر پر پچپن ہزار روپیہ صرف ہوئے۔ بازار کے سامنے چمن بندی بھی کی گئی ۔ چوک کو اور زیادہ دل آویز بنانے کے لئے سر آسمان جاہ نے یہاں پانچ منزلہ گھنٹہ گھر ۱۳۰۸ھ میں تعمیر کروایا اور اس پر ۱۳۱۰ھ میں گھڑیال نصب کروائی ۔ سالار جنگ اول نے اس چوک کا نام بادشاہ وقت کے نام پر محبوب چوک رکھا ۔

چالیس پچاس سال پہلے اس کی رونق ہی کچھ اور تھی ۔ مسجد کی تہ خانوں کی ملگیوں میں جنوبی سمت سے مغربی رخ تک پرانی کتابوں کی دکانیں تھیں شمالی ملگیوں میں، قلعی گر ، کباڑئے ، نواڑ فروش ، بتیار صاف اور تیز کرنے والے تھے، مشرقی سمت میں ہوٹلیں تھیں جن میں رات دن شطرنج چلتی رہتی تھی ۔ شائقین گھنٹوں بیٹھے اسکی چالوں سے لطف اٹھاتے ۔ نئی نئی چالیں چلنا سیکھتے بھی تھے، یہاں پرندہ فروشی کا بازار ہمیشہ گرم رہتا تھا ۔ بلبل باز ، بٹیر باز ، مرغ باز ، کبوتر باز چوک کے چکر کاٹتے تھے ۔ میر شکاریوں کی بن آتی تھی ۔ ہر قسم کے پرندے اور بیسیوں قسم کے کبوتر دستیاب تھے ۔ مرغیوں کی تجارت بہت تیز تھی ۔ آج بھی یہ سب کچھ ہے مگر بازار کسی قدر ٹھنڈا ہو گیا ہے کیونکہ اب ویسے شوقین لوگ نہیں رہے، اب صدقہ میں دئے جانے والے کوؤں کی بہار ہے ہر دکان پر کوے زیادہ دوسرے پرندے کم نظر آتے ہیں ۔ ویسے پرندوں کی خرید و فروخت کا اب بھی سب سے بڑا مرکز چوک ہی ہے ۔ یہاں نوادرات کی دکانیں بھی ہیں ۔ اس کے چمن کے اطراف پرانے سامان کی اٹھاؤ دکانیں بھی ہیں ۔ چوک پولٹری فارم کی مرغیوں اور انڈوں کا بہت بڑا مرکز ہے ۔ پرانی کتابوں کی دکانوں پر نئی کتابیں بھی ملنے لگی ہیں ۔

چوک دن ڈھلے سے آج بھی بہار پر آنا شروع ہو جاتا ہے ۔ اسکی رونق میں کمی نہیں ہوئی ہے، چوک آج بھی قدیم دور کی یاد دلاتا رہتا ہے لوگ شطرنج کھیلتے آج بھی نظر آجاتے ہیں ۔

گنج : فارسی لفظ ہے اس کے معنی خزانہ کے علاوہ گودام اور اناج کی منڈی کے بھی ہیں اسی مناسبت سے اناج کے بازار کو گنج کہا جانے لگا ۔ یہی اسکی شناخت ہے ۔ حیدرآباد کے کئی گنج مشہور ہیں ۔ جیسے افضل گنج ، محبوب گنج ، حشمت گنج ، شمشیر گنج ، شاہ گنج ، رکاب گنج وغیرہ

عثمان گنج اناج کا سب سے بڑا گنج ہے افضل گنج سے معظم جاہی مارکٹ کو جانے والی سڑک

ڈیوڑھی کے روبرو ہے۔ " دکن میں موسو تھیوٹو (ص ۸۳)

اس دور کے ایک چوک کا نام آج بھی باقی ہے جسے میر چوک کہتے ہیں ۔ یہ چوک حضرت میر محمد مومن پیشوائے سلطنت قطب شاہی کے محل کے روبرو تھا ۔ آج چوک تو نہیں ہے لیکن قریب ہی منڈی میر عالم ہے ۔ جسکا ذکر آگے آئیگا ۔

یہاں حیدرآباد کے بازاروں پر گفتگو کا آغاز چوک ہی سے کیا جاتا ہے کیونکہ سالار جنگ سوم کے دادا سالار جنگ اول کو چوک سے خاص تعلق خاطر رہا ہے ۔

چوک : ہندی لفظ ہے اس کے معنی ایسے بازار کے ہیں جس کے چار راستے ہوں اور جہاں پرانے سامان کی خرید و فروخت ہوتی ہو ۔ حیدرآباد کا " محبوب چوک " ایک چھوٹا سا بازار تھا ۔ یہاں صبح سے ۱۲ بجے تک گھوڑوں کی تجارت ہوتی تھی اور دوپہر سے شام تک کپڑوں وغیرہ کا بیوپار ہوتا تھا ۔ مولف ریاض مختاریہ نے اس بازار کی حالت اس طرح بیان کی ہے ۔

" اب جہاں گھڑیال اور چمن بندی ہے وہاں ایک چبوترہ تھا اس پر کرامت شاہ کی قبر تھی رومال ، کھادی بیچنے والے ، ہتیار بیچنے والے کھلے میدان میں دوپہر سے دکانیں لگاتے تھے ۔ پرندہ فروش میر شکاری ایک طرف بیٹھتے تھے ۔ بیچ میں نالا گندے پانی کا بہتا تھا " (ص ۱۹۳)

چوک میں ۱۲۳۳ھ میں خواجہ عبداللہ خان نے اپنے ذاتی سرمایہ سے ایک مسجد بنوائی جسکی کرسی اونچی ہے اور نیچے تہ خانے ہیں جو ملگیوں کا کام دیتے ہیں ۔ سنہ ۱۳۲۲ف میں اس مسجد میں دو رواقوں کا اضافہ ہوا ۔ ۱۲۹۰ھ میں سالار جنگ اول نے حیدرآباد کو آراستہ کرنے کا منصوبہ بنایا تو ان کی نظر چوک پر بھی پڑی ۔ انہوں نے اس بازار کی طرف توجہ کی شاید انہیں خیال آیا ہوگا کہ گولکنڈے سے چارمینار کو ملانے والی شاہراہ نے جسکے پہلو میں چوک ہے قطب شاہوں کا جاہ و جلال دیکھا ہے ، وہ اب اس چوک کی خستہ حالی پر افسوس کرتے ہونگے ۔ سالار جنگ اول نے چوک کے قریب صاحبزادے شرف الدولہ کی ڈیوڑھی کو جسکی ملگیوں سے ۱۵۰ روپیہ کرایہ وصول ہوا کرتا تھا خرید کر انھیں کو ( ۱۵۰ ) روپیہ منصب کر دی ۔ اس جگہ چوک کو عصری بازار میں

راحت عزمی
استاد حوزہ المہدی العلمیہ
دارالشفاء، حیدرآباد-۲

# حیدرآباد کے بازار

بازار خرید و فروخت کی شکل میں انسان کی روز مرہ ضرورتوں کو پورا کرنے کے مرکز ہوتے ہیں ۔ اس طرح ہاٹ ، گنج ، منڈی اور چوک کے الفاظ وجود میں آئے یہ سب ایک ہوتے ہوئے بھی اپنی علحدہ ایک پہچان رکھتے ہیں ۔

سنہ ۱۰۰۰ھ میں چار مینار کی تعمیر کے ساتھ ہی شہر حیدرآباد کے بازاروں کی تاریخ شروع ہوتی ہے ۔ محمد قلی قطب شاہ نے چارمینار کو شہر حیدرآباد کا مرکز قرار دے کر اسکے چاروں طرف چودہ ہزار دکانیں تعمیر کروائیں یہی دکانیں چار مینار کے چاروں طرف بہت دور تک پھیلی ہوئی تھیں ۔ غلام امام خاں بحر مولف تاریخ رشید الدین خانی کا بیان ہے کہ (۱) :

" دورہ اس ( حیدرآباد ) کا اس زمانہ میں ( ۵ ) کوس کا تھا اور دکانیں چودہ ہزار اور مکانات بارہ ہزار تھے ۔ مقابل ہر طاق راستہ اور بازار طویل اور عریض ---- درسمت غربی تا قلعہ گولکنڈہ ، شرقی تا سلطان نگر وحیات نگر ، شمالی تا کوہ طور جنوبی تا کہسار چشمہ ۔ " ( ص ۲۲۳)

غلام امام خاں بحر کے اس بیان سے شہر کی آبادی کے گنجان ہونے کا اندازہ ہوتا ہے اور یہ بھی اندازہ ہوتا ہے کہ دکانیں کتنی دور تک پھیلی ہوئی تھیں ۔

عہد قطب شاہی میں بازار چوک کی شکل میں ہوا کرتے تھے ۔ جیسا کہ موسیو تھیونو سیاح کے بیان سے ثابت ہے وہ کہتا ہے کہ

" یہاں شہر میں کتنے بازار کے چوک ہیں مگر سب سے اچھا وہ چوک ہے جو بادشاہ کی

سکتے ہیں اور کیا ہم یہ کہنے میں حق بجانب ہیں کہ نظام الدین اولیاء ہمارے معاشرے و تہذیب کے ان معماروں میں ممتاز حیثیت رکھتے ہیں جن کی بنیاد بھائی چارہ اور قومی یک جہتی پر تھی، جو کثرت میں وحدت اور رنگارنگی میں ایک رنگی دیکھنا چاہتے تھے۔ یہ ایک سوال ہے جو آج ہم ہندوستانیوں کو ہم وطنیوں کو اور خصوصاً ہم تمام حیدرآبادیوں کو حل کرنا ہے۔ ورنہ ایک وقت وہ بھی آسکتا ہے کہ آئندہ نسلیں ہم سے سوال پوچھیں۔

○ ○ ○

کہتے ہیں اور اسی کا نام ہے کہ فقط داڑھی بڑھاویں اور عبداللہ اور عبدالرحمان نام رکھیں اور تعصب پرست ہوں تو بندہ ایسی مسلمانی کو دور سے سلام کرتا ہے۔۔۔۔ آپ اپنے موحد ہونے کا بہت کچھ دم بھرتے ہیں مگر میرے مسلمان ہونے کی فکر میں کیوں مرتے ہیں۔ اپنے کو پکا صوفی بھی بتلاتے ہیں اور تسبیح و زنار کے پھیر میں پھنسے ہوئے ہیں۔ ہائے افسوس کیوں مولانا آپ اس بات کو جائز رکھتے ہیں کہ صوفی اور موحد کہلاکر کفر و اسلام کے جھگڑے میں مبتلا رہیں۔ مولانا ایک شعر یاد آیا:

کفر و اسلام کے جھگڑے میں نہ پڑنا اے شاد
بندے اللہ کے ہیں گبر و مسلمان دونوں !!

مولانا آپ میرے کفر و اسلام کی فکر میں بالکل نہ پڑھئے جو وقت یاد حق میں گزرے اس کو غنیمت جانئے۔ صاحبان خدا جانتے ہی نہیں کہ اسلام کس خواب آبرد کا کعبہ، مقصود ہے اور کفر کونسے صنم پرست دل کا بت خانہ ہے۔ یہ بھی گھر خدا کا اور وہ بھی گھر خدا کا۔ ہر جگہ اسی کا جلوہ ہے جو اسکا منکر ہے وہ موحد نہیں۔ (بحوالہ رقعات شاد)

قومی یک جہتی یہی تو ہے کہ آدمی خود کو بھول کر دوسروں کی فلاح و بہبود کے بارے میں سوچے لیکن اپنی اصلیت کو بھی نہ بھلائے۔ آصفیہ عہد کی نثر میں قومی یک جہتی کے شاہکار وہ فرامین بھی ہیں جو نواب میر عثمان علی خاں بہادر مرحوم نے اپنے عہد حکومت میں اپنی ریاست کے عوام کی فلاح و بہبود کے لئے صادر فرمائے۔ قومی یک جہتی کا تصور آج ہم کو اصطلاح کے نئے ہونے کی وجہ سے نیا معلوم ہوتا ہے لیکن دراصل یہ وہی تصور ہے جس کو ملا وجہی نے پیش کیا تھا۔ جو کسی زمانے میں بھکتی تحریک کے رہنماؤں کا مسلک تھا اور جو کبھی صوفیوں کا آئین تھا۔ عہد قطب شاہ اور عہد آصفیہ کے نثری تصانیف میں انہی تمام تصورات کی ترجمانی ملتی ہے جو دکنی سلاطین اور عوام کا کبھی ایمان تھا۔ لیکن آج سوچنا پڑھتا ہے کہ کیا ہم دکنی ہیں، ہندوستانی ہیں کیا ہم کو یہ حق حاصل ہے کہ ہم ہندوستان کی تہذیب کا خود کو وارث کہہ سکیں، کیا ہم خود کو کبیر کا ہم وطن کہہ

زوال گولکنڈہ کے بعد کے عہد سے متعلق ہے۔ سید عبدالولی عزلت نے اپنے دیوان کا دیباچہ اردو نثر میں لکھا ہے۔ یہاں جملہ معترضہ کے طور پر یہ کہدینا بھی نامناسب نہیں یہ دیباچہ اپنی نوعیت کے اعتبار سے اولیت رکھتا ہے کہ عموماً دیباچہ فارسی میں لکھے جاتے تھے۔ عزلت کے اس اقتباس میں دیکھئے کہ ہندی زبان میں مروج الفاظ کا استعمال کیسی برجستگی میں کیا ہے۔ ملاحظہ ہو۔

" اے سنسار کے کرتار ہنارا سب خوبیاں ازل سے ابد تئیں مجھ ایسی آپ ہی آپ ثابت نہیں کہ ہماری زبان قاصر، بیان سے تیری بڑائی کا حق ادا ہوسکتا ہو۔ اور اے دو جگ کے ایک کرتار تیرا تنزہ ذات و صفات ایسا دور گردوں سے نسبت نودیکی رکھتا ہو۔ " ("دیوان عزلت" ص ۱، مرتبہ عبدالرزاق قریشی ۱۹۶۲ء)

اس اقتباس میں سنسار کر ہنار جگ اور کرتار، ہندی سے ماخوذ ہیں جو اپنی جگہ ایک ہندی اثاثہ رکھتے ہیں، جس کے تانے بانے ہندو مذہب اور ہندیت سے ملتے ہیں لیکن عزلت نے اپنے مافی الضمیر کے بیان کے لئے یکساں روانی کے ساتھ ان کا استعمال کیا ہے جس میں یقیناً ان کا قومی یک جہتی کا شعور کار فرما رہا ہے جو کہ دکنی حکمرانوں خصوصاً قطب شاہوں کا نصب العین تھا۔

اب ایک تحریر اور ملاحظہ کیجئے۔ عہد آصفیہ میں لاتعداد نثری تصانیف لکھی گئیں جن میں قومی یک جہتی کے عناصر بہرحال مل جاتے ہیں۔ لیکن یہاں ایک ایسے ادیب کی نثر سے اقتباس دیا جارہا ہے جو امراء کے زمرہ سے تعلق رکھتا ہے لیکن جو عوام کو ایک نظر سے دیکھتا ہے۔ خود اپنے بارے میں کہتا ہے کہ میرا مسلک انسانیت کی فلاح ہے۔ میری مراد مہاراجہ سرکشن پرشاد شاد سے ہے اپنے ایک دوست کو خط میں اپنے مسلک کے بارے میں لکھتے ہیں۔

" مولانا آپ کا یہ ارشاد کہ بابا کشن پرشاد تیرے عادات اور تیرے اخلاق دیکھ کر مجھے رشک ہوتا ہے کہ تو مسلمان کیوں نہ ہوا۔ واہ مولانا! مسلمان ہونے کی ایک ہی کہی۔ میں نہیں سمجھا کہ مسلمان کس کو کہتے ہیں۔ اگر مسلمان اسی کو

اپنے ملک اپنے وطن سے اساطیر مستعار لے کر اپنی داستان کی توئین کی ہے۔

" سب رس " کا اقتباس ملاحظہ ہے:

" دنیا ایسی ہے جو اس دنیا خاطر لوکان نے ماں باپ کو مارے ہیں سگے بھایاں نے سگے بھایاں سوں عداوت سارے ہیں، دنیا ماں، دنیا باپ، دنیا بھائی آخر یہہ دنیا کسی کی ہوئیں آئی ---- رام جو جان کر راون ہر آئے گھر کا بھیدی تے لنکا جائے۔ رام جو جان کر راون پر آیا مایا دے کر بھائی کون بھائچہ مارنے فرمایا۔ یو دنیا ہے سگے بھائی کون یاں پتیایانا جائے۔ "

(سب رس " از ملا وجہی مرتبہ شمیم انہونی، ص ۶۰)

" سب رس " نہ صرف دکنی بلکہ اردو نثر کی پہلی داستان ہے جس میں وجہی نے ہندوستان کی تاریخ و تہذیب اور ہندو مذہب کے اساطیر کو شامل کرتے ہوئے اپنے قومی یک جہتی کے شعور کو پیش کیا ہے۔ ملا وجہی ایک اور مقام پر " اصل عورتاں " کی توصیف کرتے ہوئے " سیتا کے پاکدامنی " کی تعریف کرتا ہے۔ وجہی کے ان بیانات کی اہمیت مزید بڑھ جاتی ہے جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ اس کی یہ داستان فارسی قصہ سے ماخوذ ہے۔ ایک مقام پر عورتوں کے " ستی " ہونے کا بیان کرتا ہے۔ اقتباس دیکھئے:

" یعنے عورتاں مرداں خاطر ستیاں (ستی) ہوتیاں ہیں، آگ میں جلیاں ہیں۔

(سب رس از ملا وجہی ص ۲۰۷)

یہہ ایک حقیقت ہے کہ دکنی میں نثر بہت کم لکھی گئی ہے نظم میں تو ہر موضوع پر ہر عہد میں تصانیف مل جاتی ہیں لیکن نثر میں بہت کم تصانیف ملتی ہیں ان میں بھی بیشتر مذہبی واقعات پر مبنی ہیں۔

دکن کی قدیم ترین نثر میں آپ نے ہندوستانی تہذیبی عناصر اور ہندو مذہب کے اساطیر کا بیان ملاحظہ فرمایا۔ یہ نثر قطب شاہی عہد کی یادگار ہے۔ اب ایک اقتباس دیکھئے جو ۱۶۸۵ء یعنی

ڈاکٹر حبیب نثار
ریسرچ اسکالر، شعبہ اردو
یونیورسٹی آف حیدرآباد
حیدرآباد - ۱۳۴

# عہد قطب شاہ و عہد آصفی کی نثری تصانیف میں قومی یک جہتی کے عناصر

قومی یک جہتی کی اصطلاح سے مراد ایک ایسی ہتذہب ہے جس میں ملک میں رہنے والے، تمام مذاہب کے ماننے والے، تمام فرقوں سے تعلق رکھنے والے، تمام زبانیں بولنے والے ایسی یک رنگی اختیار کریں جس کی بنیاد ملک کی ہتذہب اور ثقافت ہو - قومی یک جہتی کی تعریف کرتے ہوئے پروفیسر مجاور حسین رضوی لکھتے ہیں کہ قومی یک جہتی سے مراد " کثرت میں وحدت " اور رنگارنگی میں یک رنگی کا پیغام ہے - مزید لکھتے ہیں:

" اردو کے طالب علم کے لئے یہ اصطلاحیں نئی ہوں تو ہوں مگر ان کا مفہوم اور مقصد نیا نہیں ہے۔ اردو اپنے آغاز سے ہی مشترکہ کلچر کے اہم مظہر اور یک جہتی کے اہم ترین عنصر کی حیثیت سے سامنے آتی تھی۔ " (ص ۵ اردو شاعری میں قومی یک جہتی کے عناصر)

پروفیسر مجاور حسین رضوی نے بالکل صحیح لکھا ہے کہ اردو کا طالب علم قومی یک جہتی کے مفہوم اور مقصد سے روز اول ہی سے آشنا رہا ہے۔ گو اصطلاح کچھ عرصہ قبل استعمال کی گئی تھی۔ راقم الحروف کے اس بیان کی سند دکنی نثر میں بخوبی مل جاتی ہے۔

ملا وجہی نے " سب رس " ۱۰۴۵ھ میں تصنیف کی (تصویر نمبر ۵) - وجہی کا ماخذ محمد یحییٰ ابن سیبک فتاحی نیشاپوری کی تصنیف " دستور عشاق " نثر میں اور نظم میں " بستان خیال " ہے ابن سیبک فتاحی نیشاپور کے رہنے والے تھے، انھیں رستم و سہراب سے تو دلچسپی ہو سکتی ہے لیکن رام اور لچھمن سے کوئی واسطہ نہیں۔ ملا وجہی نے " سب رس " لکھتے ہوئے اس بات کا خیال رکھا ہے کہ اس کا قصہ یا تمثیل صرف ایک ترجمہ یا نقل نہ ہو بلکہ طبع زاد داستان ہو چنانچہ اس نے

طرف کوس کوس بھر تک زمین ہرنوں کے رہنے اور چرنے کے واسطے سرکاری طور پر رکھی گئی تھی اور ان کے محفظ کے واسطے چند سوار یہاں متعین تھے تاکہ کوئی شخص بغیر اجازت ہرنوں کا شکار نہ کرے۔ ترلگیری اور الوال کا انتظام انگریزوں کے سپرد تھا۔ یہاں بھی فوجی پلٹنیں رہا کرتی تھیں۔ اس طویل مخطوطے میں مصنف نے ریاست حیدرآباد کا جغرافیہ اور تاریخ مفصل بیان کرنے کی کوشش کی ہے۔

******

جاگیر جو مصارف نواب جاگیر دار کے واسطے عطا ہوئی، جاگیر نگہداشت ، جمعیت ، جاگیر وقف جو معابد و اعراس کے واسطے عطا فرمائی گئی۔ جاگیر تنخواہ جو بالخصوص نقد تنخواہ کے عطا فرمائی گئی۔ کل ۱۶۸۸ جاگیر داروں کو جاگیریں عطا کی گئی۔ جس میں ۱۰۴۹ جاگیرات ہندوؤں کو اور ۶۳۶ جاگیریں مسلمانوں کو دی گئی تھیں۔

مشہور مقامات کا ذکر کرتے ہوئے مصنف نے سرخیوں کے تحت درج کیا ہے کہ قلعہ گولکنڈہ ، بلدہ حیدرآباد سے پانچ میل کے فاصلے پر پچھم کی طرف واقع ہے اور اس قدر وسیع ہے کہ گویا ایک شہر ہے۔ یہ قلعہ ۱۵۰۷ء تک قطب شاہیوں کا پایہ تخت تھا۔ بالاحصار کی بلندی ۳۵۴ فٹ ہے۔ لیلیٰ اور مجنوں دو توپیں بہت بڑی بڑی ہیں۔ اس قلعہ میں باقاعدہ پلٹن ہے جس میں ۱۸۰۱ سپاہی معہ افسر وہاں رہتے تھے اور ایک رسالہ باقاعدہ کہ جس میں ۳۰۶ سپاہی اور افسر رہتے تھے، قلعہ کے اندر بہت بڑا ریشم کا کارخانہ سرکاری تھا۔ شال دو شالہ اور قسم قسم کے ریشمی کپڑے بنے جاتے تھے۔

سکندر آباد کے بارے میں یوں رقم طراز ہیں کہ یہ مقام بجائے ایک شہر کے بھی ہے شہر حیدرآباد کے شمال و شرق میں چھ میل کے فاصلہ پر واقع ہے۔ چونکہ سطح سمندر سے ۱۹۳۰ فٹ بلند ہے، اس وجہ سے آب و ہوا یہاں کی نہایت لطیف و صحت بخش ہے۔ یہاں پر امدادی فوج ہے جو ۱۸۰۲ء میں سکندرجاہ رئیس ریاست حیدرآباد کے زمانہ میں کڑپہ ، کرنول ، بلہاری کے ۳۰ لاکھ روپے کے آمدنی میں سے تیار کی گئی رہتی تھی۔ یہ چھاؤنی سب چھاؤنیوں سے بڑی اور سکندر جاہ کے نام سے مشہور تھی۔ یہاں پر ایک دیسی رسالہ رہتا تھا جس میں ۴۸۵ سوار معہ افسر تھے اور چار دیسی پلٹنیں رہتی تھیں۔ یہاں پر بڑے بڑے کارخانے اور بڑی بڑی دکانیں اور کمپنیاں قائم تھیں۔ یہاں کا انتظام انگریزوں کے سپرد تھا۔ اس کے علاوہ سرور نگر کی بھی اپنی ایک تاریخ ہے۔ حضور پرنور نواب ناصر الدولہ بہادر رئیس حیدرآباد کو شکار کا شوق بہت تھا۔ خاص طور پر ہرن کے شکار کھیلنے اور ان کا گوشت کھانے کے شائق انتہا درجے کے تھے۔ چونکہ ہرن یہاں بہت رہتے تھے۔ کبھی کبھی ہرنوں کا شکار کھیلنے تشریف لاتے تھے۔ اس وجہ سے اس بستی کے چاروں

بڑھتی رہی۔

اس شہر میں محرم بڑے دھوم سے اور اس طرح سے ہوتا تھا کہ ایسا کہیں نہیں ہوتا۔ پانچویں تاریخ کو لنگر نکلتا تھا۔ حضور پر نور سرکار عالی تمام اپنی فوج کو ملاحظہ فرماتے۔ جملہ فوج اس ترتیب سے نکلتی کہ اول کوتوال شہر معہ جوانان و سواروں کے اندرون و بیرون بلدہ پھر سب پٹھان جمعدار اور ان کے جوان و سوار، پھر سب جمعدار اور پھر باقاعدہ فوج ۔ پھر میسرم کی فوج باقاعدہ پھر پیشکار صاحب کے سوار، پھر نظم جمعیت کے تین پلٹن ۔ پھر غالب جنگ کے سوار و پیدل عروب ۔ پھر افسر جنگ بہادر کے سوار و پیدل، پھر اصطبل خاص کے کوتل گھوڑے ۔ مرصع زین اور سارے آرائیشات سے آراستہ پھر آخر میں باقاعدہ فوج و رسالہ سیدیاں۔ پھر نویں تاریخ ایسی ترتیب و شان سے لعل صاحب کی سواری کہ جس میں دھیز، چھار و سائیس بکثرت ہیتے۔ شب کو نکلتے اور پہلی سے چہلم تک شہر کے اندر و باہر رات دن یہ کیفیت رہتی تھی کہ اکثر غریب لوگ ریچھ، شیر، لیلیٰ مجنوں وغیرہ بھیس لے کر دف بجاتے ہوئے تمام گلی گلی پھرا کرتے تھے۔

جس قدر حصہ اس ریاست کا حضور پر نور کے مصارف خاص کے واسطے بجائے نقد کے علحدہ اور مخصوص تھا، وہی علاقہ صرف خاص کہلاتا تھا۔ اس میں ایک ضلع اطراف بلدہ اور باستثناء عمل داری سرپور، تانڈور، ضلع رائچور، سنگسگور، اندور کے جملہ اضلاع اور ۱۰۰۵ دیہات تھے۔

جو جاگیر ۱۱۹۱ھ میں اعلیٰ حضرت نظام علی خاں رئیس حیدرآباد دکن نے نواب تیغ جنگ بہادر کے واسطے جمعیت رکھنے کے مرحمت فرمائی تھی اس کو سرکار پائیگاہ کہتے تھے۔ اگرچہ یہ بھی منجملہ اور جاگیروں کے ایک جاگیر عطیہ سرکار نظام تھی۔ مگر سب جاگیروں سے سب باتوں میں افضل اور خود مختار تھی۔

ریاست حیدرآباد کا جس قدر حصہ خیر خواہ سرکار کے صلہ اور مصارف اعراس و نگہداشت جمعیت کے واسطے سرکار کی طرف سے معزز لوگوں کو سپرد تھا اسے جاگیر کہتے ہیں۔ چوتھائی سے زیادہ حصہ اس ریاست کا جاگیرات میں تھا جملہ جاگیر پانچ قسم کی تھی۔ جاگیر انعام اور موروثی، نواب

۱۔ دیول چنا رائی گٹہ ، دیول رام مانجہ ، دیول کشن باغ ، دیول الوال ، اکنا پٹھ ، دیول شھوا ، سرن پلپا ، جرنگل اور دوسرے ۴۲ دیول شامل ہیں۔

عہد محبوب علی خاں میں جو اشیاء درآمد ہوتی تھیں ان میں شکر ، نمک ، صندل سفید ، کافی ، چائے ، مشک ، پارہ ، کافور ، افیون ، کھوپرا ، خرماتر وخشک گھوڑے ، ہاتھی ، ظروف چینی و ناچینی ، اونی و ریشمی کپڑے ، ہر قسم کے اونٹ ، بیل ، بگھی ، زعفران ، عنبر ، اخروٹ ، بادام ، پستہ ، منقی ، کشمش ، چرونجی ، عنبر ، عطر ، ہر قسم کا روغن ، چنبیلی ، چھالیہ ، سپاری ، جملہ ادویات یونانی اور انگریزی شامل تھے۔ قالین ، غلہ ، روئی ، شہد ، بیل پھل ، بیدری برتن ، کمبل ، مشروع اورنگ آبادی ، لسری ساڑیاں ، کمخواب سیلہ ناندیڑی ، رومال ، چوڑیاں ، کارچوبی جوتی زنانی ، سونا وغیرہ وغیرہ ملکوں میں تجارتاً جاتی تھیں۔ ریاست حیدرآباد میں جو بڑے بڑے اور مشہور میلے لگتے تھے۔ ان میں میلہ لنگر محرم ، عرس کوہ مولا ، لنگم پلی ، عرس عنبرپیٹ ، تاڑبن ، بابا شرف الدین ، ناگ پنچمی ، برسیہ صاحب ، جاترا الوال ، جاترا رام باغ ، کشن باغ کے علاوہ اس مخطوطہ میں جملہ ۴۲ میلوں کی فہرست درج ہے۔

ممالک محروسہ سرکار نظام کا پایہ تخت بلدہ حیدرآباد دکن تھا۔ جس کو بیشتر بھاگ نگر بھی کہتے ہیں۔ موسیٰ ندی کے جنوبی کنارے پر واقع ہے۔ اس شہر کو سلطان محمد قلی قطب شاہ بادشاہ گولکنڈہ نے ۹۹۸ ھ میں آباد کیا۔ قدیم تاریخوں میں ایسا لکھا گیا ہے کہ گولکنڈہ کی آب و ہوا خراب ہوگئی تھی اور وباء شدت سے تمام پھیل گئی تھی۔ اس حالت کو دیکھ کر بادشاہ نے اراکین سلطنت سے مشورہ کیا تو سبھوں نے یہی رائے دی کہ یہاں سے ۳، ۴ کوس کے فاصلے پر کسی ایسے جنگل میں کہ جس کی آب و ہوا اچھی ہو، آباد ہونا چاہیئے۔ چنانچہ بادشاہ نے سبھوں کی رائے سے اتفاق کرکے یہاں آباد ہونے کے واسطے سب کو حکم عام دے دیا۔ اس وقت گولکنڈہ ویران ہوکر یہ شہر آباد ہوگیا۔ یہ شہر جب سے آباد ہوا دو دفعہ لوٹا گیا۔ مگر جب نظام الملک آصف جاہ بہادر نے محمد شاہ نے کسی وجہ سے ناراض ہوکر دکن میں خود مختار سلطنت قائم کی اور حیدرآباد کو پایہء تخت بنایا تب سے اب تک پھر کسی طرح کا صدمہ نہیں پہنچا۔ بلکہ روز بہ روز ترقی اور رونق

رکھتے تھے۔ جناب ڈاکٹر سید محی الدین قادری زور نے اپنے فرخندہ بنیاد حیدرآباد میں حکیم گیلانی کے واقعات زندگی بیان کیے ہیں اور علم طب پر جو کام کئے ہیں اور جدوجہد کی اسکی صراحت کرتے ہوئے بتایا ہے کہ نظام الدین گیلانی کے علم طب میں ایک سو تصانیف ہیں۔ حکیم نظام الدین گیلانی ایران کے باشندے اور عبداللہ شیرازی کے بیٹے تھے انکے ایک مخطوطہ سے پتہ چلتا ہے کہ ۱۶۳۰ء میں جبکہ شاہ جہاں حکمران تھے ان کے ایک سپہ سالار مہابت خاں کے پاس ملازمت کرتے تھے بعد میں عبداللہ قطب شاہ والئی گولکنڈہ کے پاس ملازمت شروع کی۔ ان کے بہت سے فارسی مخطوطات ، ادارۂ ادبیات اردو و سالار جنگ میوزیم کے کتب خانوں میں موجود ہیں مثلاً فلسفہ ، علم الکلام ، علم طبیعیات ، علم طب ، ادب انکا ایک اور مخطوطہ تاریخ حدیقۃ السلاطین قطب شاہی فارسی ہے جسکو جناب سید علی اصغر بلگرامی نواب عزلت جنگ بہادر نے ترتیب دیا۔ اس مخطوطہ میں عبداللہ قطب شاہ کے عہد کے اہم واقعات کو قلم بند کیا گیا ہے۔ اس فارسی مخطوطہ کا ایک سال قبل جناب خواجہ محمد سرور مہتمم کتب خانہ ادارۂ ادبیات اردو حیدرآباد نے اردو میں ترجمہ کرکے اسکو شائع کیا۔ نظام الدین نے گولکنڈہ سلطنت میں مستقل رہائش اختیار کی اور دربار سے منسلک رہے انکی وفات ۱۶۵۰ء م ۱۰۵۹ ھ میں ہوئی۔ محلہ ٹولی چوکی کے شمال میں ایک بستی حکیم پیٹھ کے نام سے بنائی اسی حکیم پیٹھ کے شمالی پہاڑی پر متصل موجودہ اپالو اسپتال (جوبلی ہلز) انکا مقبرہ ہے۔ نظام الدین بلند پایہ شاعر تھے۔ انکا تعلق شیعہ مذہب سے تھا۔ انکے تحریر کردہ مخطوطات خدا بخش لائبریری پٹنہ میں محفوظ ہیں۔ جانوروں کے متعلق بھی انھوں نے ایک معلوماتی مضمون لکھا ۔ جناب رہبر فاروقی نے لکھا ہے کہ یہ مقالہ ایک نادر و نایاب نسخہ ہے ۔

فروخت ہوتے ہیں۔ موسیٰ ندی کے جنوب میں ایک بڑی مسجد بن رہی ہے (موجودہ مکہ مسجد) اگر یہہ پوری بن جائے تو ہندوستان کے مقام مساجد سے شاندار ہوگی۔ یہ پوری مسجد ایک خاص پتھر سے بن رہی ہے۔ اس پتھر کو پانچ چھ سو آدمی ایک کان سے نکال کر ہاتھیوں کے ذریعہ یہاں بھیجتے ہیں قلعہ گولکنڈہ کے جانب شمال مغرب یہاں کے بادشاہوں کی قبریں ہیں شام کے چار بجے ہر روز غریبوں کو روٹی قورمہ پلاؤ مفت تقسیم ہوتی ہے۔ یہاں کا بادشاہ ہر سال دہلی کے مغلوں کو دولاکھ پگوڈا (موجودہ نو (۹) لاکھ روپے) ادا کرتا ہے یہاں کا کپڑا ململ براہ وجے واڑہ ضلع کرشنا پانی کے جہاز کے ذریعہ مسولی پٹم سے باہر جاتا ہے۔ یہاں مقامی شراب گل موہا اور شکر سے بنتی ہے۔ یہ بڑی اچھی ہوتی ہے۔ قلعہ گولکنڈہ میں ایک ڈچ شاہی ڈاکٹر ہے جو جراحی کا کام کرتا ہے اس کا نام پیٹرڈی کلان ہے اس کے تقرر سے پہلے یہاں پر جراحی کا طریقہ علاج نہیں تھا تمام جواہرات میں ہیرا سب سے قیمتی جوہر ہے، گولکنڈہ تو جواہرات کی منڈی ہے۔ میں نے ارادہ کیا کہ ان کانوں کو دیکھوں جہاں سے یہ ہیرے نکلتے ہیں۔ ہم گولکنڈہ کے جنوب میں کرناٹک کی طرف چلے ہیروں کی کانیں ان مقامات پر تھیں۔ بلاری، درگ اور کولار ۔ یہاں کی کانوں سے ہیرے نکالکر میر جملہ کی نگرانی میں گولکنڈہ لائے جاتے ہیں۔ چٹانوں میں شگاف ہوتے ہیں ان کانوں کے مزدور ان میں برما لگاتے ہیں اور لوہے کی سلاخوں سے ان میں ہیرے ڈھونڈتے ہیں۔ اسکے بعد ہیروں کو تراشتے ہیں۔ کان کھودنے والے اور ہیرے تراشنے والے مزدور کی تنخواہ سالانہ صرف تین پگوڈا (موجودہ ۱۲ روپیے) ہوتی ہے۔ ہیرے تول کر بیچے جاتے ہیں۔ دنیا کا مشہور ترین ہیرا کوہ نور انہیں کانوں سے نکالکر گولکنڈہ لایا گیا تھا۔ کوہ نور کولار کی کان سے نکلا تھا جو دریائے کرشنا پر واقعہ ہے اس کے ملنے کی اصل تاریخ تو معلوم نہیں مگر اتنا معلوم ہے کہ وہ ۱۶۵۶ء یا ۱۶۵۷ء میں جبکہ تراشا بھی نہیں گیا تھا میر جملہ نے حاصل کیا تھا۔ اس وقت اس کا وزن ۹۰۰ رتی یا ۷۸۷ قیراط تھا۔ ۱۶۵۸ء ہیرا کوہ نور کو میں نے اورنگ زیب کے جواہر خانے میں دیکھا تھا۔ حکومت ہند کے شائع شدہ بلٹین دی انڈین انسٹیٹیوٹ آف ہسٹری آف انڈین میڈیسن کے بموجب نظام الدین احمد گیلانی، عبداللہ قطب شاہ کے دور میں بہ حیثیت حکیم حاذق کافی شہرت

کوتوال : گو یہ وزیر نہیں ہوتا تھا مگر شہر میں قیام امن کیلئے اس کی بڑی اہمیت تھی اسکی نظر باہر کے سیاحوں پر رہتی تھی بغیر اس کی اجازت کے کوئی اجنبی شہر میں داخل نہیں ہوسکتا تھا۔ شہر کے تمام فوجداری امور قابل دست اندازی اور ناقابل دست اندازی اس کی ذمہ ہوتے تھے۔ اس کے بعد بہت سے چھوٹے عہدہ دار ہوتے تھے۔ مثلاً سرشیل کہلاتے تھے جو خاص بادشاہ کی حفاظت کرتے تھے جسے آج کل اے ۔ ڈی۔ سی کہا جاتا ہے۔ اس کے صحت حوالدار اور سپاہی ہوتے تھے۔

مقامی حکومت : سلطنت مختلف صوبوں میں منقسم ہوتی تھی۔ ہر صوبہ میں ایک صوبہ دار ہوتا تھا جو مرکزی حکومت کو جواب دہ ہوتا تھا۔

محکمہ عدالت : زمانہ قدیم میں عدالت کا کوئی محکمہ الگ نہیں تھا ہندوستان میں انگریزوں کی آمد کے بعد ایک علحدہ دفتر عدالت قائم ہوئی بعد میں دیوانی اور فوجداری عدالتیں قائم ہوئیں ۔ تعزیرات ہند اور ضوابط فوجداری نافذ و شائع ہوئیں اور انگریزی عدالتی عہدہ دار مقامی روایات کے مطابق فیصلہ دیا کرتے تھے ورنہ پہلے بڑے مقدمات میں خود بادشاہ سماعت کرکے فیصلہ یا فرمان جاری کرتا تھا۔ شہرہ آفاق مؤرخ فرشتہ بھی اپنی تاریخ میں حیدرآباد اور اس کے جاہ و جلال کی تاریخ سے ان اقتباسات کا ترجمہ پیش ہے جن کا تعلق شہر حیدرآباد سے ہے۔

گولکنڈہ کا ملک اپنی عام حالت کے لحاظ سے ایک سیراب و شاداب خطہ ہے جہاں قسم قسم کا غلہ چاول ، بھینس ، بھیڑ ، بکری اور طرح طرح کے پودے اور بہت سے اجناس و کرانہ جو زندگی کیلئے ضروری ہیں پیدا ہوتی ہیں چونکہ تالاب بکثرت ہیں اس لئے وہاں مچھلی بھی بافراط ہوتی ہے ۔ خاص کر ایک قسم کی مچھلی جس کا نام مرل ہے بہت ہی مزے دار ہوتی ہے اس ملک کا صدر مقام بھاگ نگر ( موجودہ شہر حیدرآباد) ہے یہاں ایک ندی ہے جس کا نام موسیٰ ندی ہے جو مسولی پٹنم کے پاس خلیج بنگال میں گرتی ہے۔ اس کے اوپر ایک مضبوط پل ہے (موجودہ پہانا پل) اس ندی کے شمال میں ایک بڑی بستی ہے اس میں تمام تاجر اور ساہوکار و اہل حرفہ وغیرہ ہر طرح کے ادنیٰ لوگ بستے ہیں۔ (موجودہ بیگم بازار) یہاں پر ہاتھی ، گھوڑے اور اونٹ

کرتے تھے، اس خدمت پر اکثر بڑے پائے کی شخصیتیں مامور کی جاتی تھیں۔ جن کی علمی اور عملی قابلیت مسلمہ ہوتی تھی اور بالعموم میر جملہ کے عہدے پیشوائی پر ترقی دی جاتی تھی۔ میر جملہ عام طور پر یہ سمجھا جاتا ہے کہ یہ کسی وزیر کا نام ہے حالانکہ یہ ایک عہدے کا نام ہے جس کا درجہ پیشوا کے بعد آتا ہے اور کبھی اس کو امیر جملہ بھی کہا گیا ہے۔ اس کو جملۃ الملک کا خطاب ہوتا تھا اور اس عہدہ کو وزارت جملۃ الملکی کہتے تھے اس کے تحت وزارت مالیات رہتی تھی۔ اس کے تحت سلطنت کی تمام مالگزاری کی گرفت (جمع بندی (ا) اور ہر محکمہ کے خرچ کی تنقیح تھی۔ تمام سلطنت کے مداخل اور مصارف کی جانچ پڑتال اس کے سپرد رہتی تھی۔ کیونکہ مالیات کے ساتھ بالعموم حسابی تنقیح شامل رہتی تھی۔ دوسرے شعبوں کے ساتھ یہ بالخصوص کوتوالی اور فوج کی بھی تنقیح بھی کرتا تھا۔ اس طریقہ سے اس عہدہ دار کے اختیارات اور اثرات و رسوخ بہت وسیع تھے جو خود پیشوا کو بھی دستیاب نہیں تھے ۔ قدیم شہر حیدرآباد میں جو میر جملہ کا تالاب ہے وہ محمد سعید اردستانی کا بنایا ہوا ہے جو اس وقت قطب شاہی حکومت کے میر جملہ کے عہدے پر فائز تھے۔ وزیر یمین الملک، یہ محکمہ فوج کا صدر ہوتا تھا، جسکو سپہ سالار بھی کہتے تھے۔ یہ امور خارجہ اور امور دستوری کو بھی دیکھتا تھا۔ محکمہ دار یہ حکومت کی مالگزاری جمع کرتا اور سرکاری خزانہ میں داخل کرتا تھا۔ یہ میر جملہ کے تحت ہوتا تھا اور شریک کار رہتا تھا اس کا درجہ وزیر سے کم ہوتا تھا۔

ناظر: اسکو عام طور پر ناظرالملک کا خطاب دیا جاتا تھا اس کا درجہ بھی وزیر سے کم رہتا تھا۔ آمد و خرچ کا حساب رکھتا تھا۔ یہ جمع بندی بھی کرتا تھا اور خرچ کی تنقیح بھی۔ آج کل جو عدالتوں میں ناظر ہوتے ہیں اس سے اسکی کوئی مناسبت نہیں ہے ۔

دبیر: اسکو دبیر الملک اور کبھی منشی الملک کا خطاب ہوتا تھا۔ یہ بادشاہ کے خاص فرائض انجام دیتا تھا۔ یعنی شاہی فرامین اور احکام شائع کرتا تھا اور یہ فرامین فارسی اور مقامی زبانوں میں شائع ہوتے تھے، اب بھی بہت سے فرامین دفتر دیوانی اور ملکی و مال (موجودہ اسٹیٹ آرکائیوز تلنگانہ حیدرآباد میں موجود ہیں۔

تین کمانیں ہیں جو بہت خوش نما ہیں اور نیچے اوپر جو منڈیر پر بنائی گئی ہے۔ اس پر ۲۱ چھوٹی چھوٹی کمانیں اور پھر علموں کی شکل کا حاشیہ دے کر عمارت میں دیدہ زیبی پیدا کی گئی ہے۔ درمیانی کمان کے آگے تھوڑے فاصلے پر ایک لمبا حوض بنایا گیا جس میں اب مٹی بھری ہوئی ہے۔ اس کے قریب سرائے بنائی گئی جس کی جملہ ۱۸ کمانیں ہیں جو اب بھی باقی ہیں۔ شہر حیدرآباد کی بنیاد کے ساتھ ساتھ ایک شفاخانہ یعنی بیمارستان جس میں بیمار رکھے جاتے تھے اور جہاں مقیم اور غیر مقیم ہر دو قسم کے بیماروں کا علاج ہوتا تھا، قائم کیا گیا اس کے لئیے ایک عظیم الشان عمارت بنائی گئی جس کے قریب ہی ایک عمارت بناکر حضرت میر محمد مومن استرآبادی کو ٹھہرایا گیا۔ یہ عمارت دارالشفا کہلانے لگی جس کی تعمیر ۱۰۰۴ھ میں ہوئی۔ اس شفاخانہ کی وجہ سے اطراف کی آبادی بھی اسی نام سے موسوم ہوگئی اور ایک محلہ ہی آباد ہوگیا اس کے ساتھ ساتھ حسینی علم بھی آباد ہوگیا مگر اب انھیں علحدہ کرنا مشکل ہے چونکہ پرانی حویلی بھی اس سے ملحق ہی ہے۔ اس لئیے یہ محلہ بھی اس میں مل گیا اور اب دارالشفاء، حسینی محلہ، پرانی حویلی تقریباً ایک ہی محلہ بن گئے ہیں جن میں کوچہ اعجاز حسین، کوچہ توپ خانہ، کوچہ مرزا علی، کوچہ وزیر علی، کوچہ دریچہ، کوچہ مرثیہ خوان، احاطہ نظام یارجنگ اور احاطہ علی یاور الدولہ شامل ہیں اور یہ سب اب تک بہت ہی آباد و گنجان ہیں، دارلشفاء جہاں بنایا گیا تھا اس کے کھنڈر میں بعد میں ایک عاشور خانہ بن گیا مگر اس کی عمارت اب بھی باقی ہے جس میں الاوہ سرطوق ہے جو سالار جنگ میوزیم کے عقب میں ہے۔ ادارۂ ادبیات اردو اور سالار جنگ میوزیم کے کتب خانے کے مخطوطات سے یہ پتہ چلتا ہے کہ قطب شاہی حکومت کے صرف چند محکمے دفاتر ہوتے تھے جو حکومت کا سب ہی کام کرلیتے تھے اور اس محکموں کے دفاتر پیشوا (صدر اعظم) کے دفتر کے قریب ہوتے تھے۔ وزیر اعلیٰ جسکو پیشوا بھی کہا جاتا تھا، اگرچہ بادشاہ سلطنت کا نفس ناطقہ ہوا کرتا تھا لیکن حکومت کے عالمانہ فرائض کے لئے مرکز میں کئی وزیر مقررہ ہوتے تھے۔ اور فرائض و اختیارات کی تقسیم کی جاتی تھی۔ حکمران پیشوا، وزیر اعظم، وکیل مطلق یا پیشوا کہلاتا تھا جسکے ہاتھ میں امور سلطنت کی نگرانی، داخلی اور خارجی امور سلطنت رہتے تھے۔ بادشاہ بالعموم اسی پیشوا (وزیر اعظم) سے مشورہ

کرتا رہا۔ ایک مرتبہ بادشاہ نے خواب میں دیکھا کہ بھگوان رامچندرجی اس سے کہہ رہے ہیں کہ گوپنا کو رہا کردیا جائے اور جو رقم مندر کی تعمیر میں خرچ ہوئی وہ واپس کردی جارہی ہے۔ جب بادشاہ صبح کو اٹھا تو وہ پوری رقم اسکے بستر کے قریب رکھی ہوئی ہے۔ بادشاہ نے فوراً گوپنا کو رہا کردیا اور اس رقم کے زیور بنواکر اس مندر کو دان کیا، یہ کہا جاتا ہے کہ اس مندر کے موجودہ زیور اس زمانے کی یاد دلاتے ہیں۔ ہر سال رام نومی کے دن اس مندر میں بہت بڑی جاترا ہوتی ہے۔ اس لئیے گوپنا کو سب لوگ رام کے بھگت اور رام داس کے نام سے پکارتے ہیں۔ رواداری کوئی مادی شئے نہیں ہے مگر بادشاہ کے اس عطیہ سے رواداری نظر آتی ہے۔

یوں تو شہر حیدرآباد کی عمر دنیا کے قدیم شہروں کے مقابلہ میں کچھ زیادہ نہیں لیکن اس عرصے میں یہ شہر ایسے صاحب کمالوں، فن کاروں اور اہل ذوق انسانوں کا مرجع رہا ہے جنھوں نے اسے ایک خاص تمدن اور معاشرت کا گہوارہ بنادیا۔ ایک ایسی ہتذہب اور شائستگی یہاں پیدا ہوئی کہ اس ملک کے جملہ باشندوں میں خواہ وہ کسی مذہب سے تعلق رکھتے ہوں معاشرتی اور ہتذہبی نقطہ نظر سے کوئی فرق نہیں۔ حیدرآباد کے ایک قدیم ترین محلہ کا ذکر پیش ہے جو باعث دلچسپی ہوگا۔

سعید آباد یہ شہر حیدرآباد کا قدیم ترین محلہ ہے اسکے بانی حضرت میر مومن پیشوائے حکومت قطب شاہی رہے ہیں۔ آج سے ۴۰۰ سال قبل یعنی ۱۰۱۴ھ کو یہ محلہ بسایا گیا تھا اس کا اصلی نام سید آباد تھا جو مرور ایام کی وجہ سے مسخ ہوکر بعد میں سعیدہ باغ اور اب سعید آباد ہوگیا ہے۔ یہاں پر میر صاحب کی بنائی ہوئی مسجد اب بھی آباد ہے۔ اسکے متصل سرائے ہیں۔ یہ محلہ حیدراباد کے پرانے محلوں میں سے ایک ہے۔ سعید آباد سالار جنگ میوزیم کی جانب مشرق (۸) کیلو میٹر پر واقع ہے اسی پر چند کیلو میٹر آگے سلطان محمد قطب شاہ نے سلطان نگر اور حیات بخش بیگم نے شہر حیات نگر بسایا تھا۔ قلعہ نامکمل رہا، بستی حیات نگر آباد ہے۔ سعید آباد کی مسجد کے قریب ایک دیول بھی ہے جو آباد ہے اور یہ ابوالحسن تانا شاہ کہ آخری زمانے میں مادنا اور اکنا وزرا نے بنوائی۔ سعید آباد کی مسجد میں ایک کتبہ بھی ہے اس پر تاریخ ۱۰۱۴ھ درج ہے اس میں

موہن پرشاد
مولف اسسٹنٹ کمشنر لیبر

حیدرآباد۔

# حیدرآباد، مخطوطات کی روشنی میں

قطب شاہی تاریخ یا تاریخ گولکنڈہ پر اب بھی بہت سے مخطوطات مختلف کتب خانوں اور اہل ذوق حضرات کے پاس محفوظ ہیں۔ جناب عبدالمجید صدیقی مرحوم اور جناب ہارون خاں شیروانی مرحوم سابقہ پروفیسر تاریخ نے اپنی تصانیف تاریخ گولکنڈہ میں کئی مخطوطات کا ذکر کیا ہے۔ یہ مخطوطات تلگو اور فارسی دونوں زبانوں میں دستیاب ہیں۔ انھوں نے لکھا ہے کہ تلگو زبان میں قطب شاہی مخطوطات کا ذخیرہ مسٹر بھوپال راؤ مقیم صنکنڈہ ضلع ورنگل آندھراپردیش میں دستیاب ہے۔ مسٹر بھوپال راؤ اپنے آپ کو وزراء قطب شاہی اکنا و مادنا کے قریبی رشتہ دار بتاتے ہیں۔ انکے مخطوطات سے یہ اخذ ہوتا ہے کہ ابوالحسن تانا شاہ آخری بادشاہ قطب شاہی کے وزراء اکنا مادنا کے ایک قریبی رشتہ دار گوپنا، تعلقہ بھدرا چلم میں تحصیلدار تھے اور یہ علاقہ سلطنت قطب شاہی کے تحت تھا۔ گوپنا تحصیلدار بھگوان رام چندرجی کا بھگت تھا اور ہمیشہ ریاضت میں مصروف رہتا تھا۔ اس نے ایک مرتبہ خواب میں دیکھا کہ بھگوان رام چندرجی سیتاجی اور لکشمن جی نے بشارت دی اور کہا کہ اس مقام بھدرا چلم پر ایک مندر تعمیر کیا جائے۔ یہ خواب دیکھنے کے بعد گوپنا تحصیلدار نے سرکاری رقومات سے بمقام بھدراچلم ایک مندر رام چندرجی، سیتاجی اور لکشمن جی کی بنوائی، جب بادشاہ وقت ابوالحسن تانا شاہ کو یہ اطلاع ملی کہ سرکاری رقم سے یہ مندر کی تعمیر ہوئی اور اسکی اجازت کا تغلب و تصرف کیا گیا، بادشاہ نے حکم دیا کہ گوپنا تحصیلدار کو پاپیادہ بھدراچلم سے گولکنڈہ لایا جائے (ان دونوں مقامات کا فاصلہ ۳۵۰ کیلو میٹر ہے) اسکے بعد گوپنا کو قلعہ گولکنڈہ کے ایک حجرہ میں بند کردیا گیا۔ گوپنا تقریباً ۱۲ سال تک اس حجرہ میں ریاضت

کے کنارے جو سو گز اونچی اور پچاس گز چوڑی ہے جو چونے اور پتھر سے تعمیر کی گئی ہے ایک حوض بنایا گیا تھا۔ ابراہیم قطب شاہ نے پچاس ہون خرچ کرکے اس حوض کو تعمیر کیا تھا۔

داد محل میں مذہبی رسومات جیسے محرم کی عزاء داری اور جشن میلادالنبی منایا جاتا تھا۔

دروازہ شیر علی میں بیت المعمور ۔ دربار خانہ اور محل بہشت قصر ہے جو جنت نظیر تھا۔ جہاں محفل عیش و عشرت آراستہ کی جاتی تھی۔

جنوبی جانب فلک نما میں کوہ طور ہے جہاں بادشاہ سیر و شکار کیلئے جاتا تھا یہاں پر محل جو بلند مقام پر ہے حوض بنائے گئے تھے اور پانی سے بھرے رہتے ۔ فوارے لگائے گئے تھے پہاڑ کے دامن میں برج کی بھی تعمیر ہوئی تھی۔

بادشاہ نے اپنے پانچویں سنہ جلوس میں ایک شاندار محل تعمیر کروایا اور جسطرح آسمان کے طبقات ہیں اس طرح محل میں بھی طبقات قائم کئے گئے ہیں۔ اور روشن دان بڑے بڑے رکھے گئے۔ ہنر مندوں نے صناعی کا مظاہرہ کیا مصور اعلیٰ ترین مصوری کے نمونے پیش کئے اسکے سامنے ایک پر فضا باغ لگایا گیا۔

محل دیلرم میں ایک حوض تعمیر کیا گیا اس حوض کا عرض و طول دو میل ہے اور گہرائی نا معلوم ہے۔

(۱) حدیقۃ السلاطین کا ایک مخطوطہ سالارجنگ میوزیم کے شعبہ مخطوطات میں موجود ہے۔ ویسے یہ تاریخ سلسلہ مطبوعات ادارۂ ادبیات اردو نمبر ۲۸۰ کے تحت حیدرآباد سے شائع ہو چکی ہے۔ حال میں اسکا اردو ترجمہ بھی شائع ہوا ہے (مدیر)۔

ضروری ہے۔ وزیر اعظم قولچی بیگ محمدؐ امین میر جملہ وغیرہ کے پاس تشریف لے گئے۔ یہ لوگ بادشاہ کے راستے میں زربفت کے پائے انداز بچھاتے۔ سیر و تفریح کے موقع پر بھی حرم کی عورتیں شامل ہوتیں ان کی پالکیوں پر پردے پڑے ہوتے۔

بادشاہ ہر صبح درس سکھانے والوں کے ساتھ جس میں فاضل، عالم، صالح، شاعر کمالات کے ماہر مدبر بلند پایہ وذی مرتبہ شخصیتوں، امراء، وزرا، دیگر اشخاص سے بہرمند ہوتے۔ باقاعدہ علوم کی کوشش میں معروف رہتے تفسیر کی کتابوں، احادیث، فقہ، علوم حکمت، ریاضی، منطق وغیرہ میں معلومات حاصل کرتے اسکے بعد دنیاوی امور میں معروف ہوجاتے رات کے خاصہ کے بعد صاحبان فضل و کمال سے مستفید ہوتے سہ شنبہ کو تعطیل ہوتی۔ شعراء و دانشور مختلف دواوین اور دوسرے کتابوں کی شرح کے ساتھ موجود ہوتے۔ بادشاہ انکی صحبت سے فائدہ اٹھاتے شہر کے باہر باغات میں جلسے ہوتی جس میں ایلچی اور سفیر بھی شامل ہوتے۔

بیرونی افراد پر بھی نوازش ہوتی یہ لوگ گولکنڈہ کو ایک وطن سمجھتے تھے۔ بادشاہ اپنے رشتہ داروں کا ادب اور انکی دیکھ بھال کیا کرتا۔ دادی اور چچا کا خاص خیال رکھتا بادشاہ کو فن تعمیر سے بھی خاص لگاؤ تھا۔ اس نے کئی محل بنوائے اور قلعوں اور فصیلوں کی مرمت بھی کروائی جیسے میدان دربار کی عمارت چار بازار کے دوکانات، چار مینار کی تعمیر ان تعمیرات پہ تین لاکھ ہون خرچ کئے گئے۔ الہیٰ محل، محمدیٰ محل، حیدر محل اور دیگر سات منزلہ محلات یہہ سب سلطان محمدؐ قطب شاہ نے تعمیر کروائے تھے۔ بعض باغات کو ایران و عراق کی طرز پر لگایا گیا ہے اور معمار بھی وہیں سے بلائے جاتے تھے جو ماہرین فن شمار ہوتے تھے۔

لنگم پلی کے قلعہ کو مؤلف بہشت برین کے مانند بتلاتا ہے۔ جو محمد قلی قطب شاہ کا بنا کردہ ہے اسکے اطراف جنگل تھا اس طرح کا محل نعمان بن منذر نے بہرام گور کیلئے بنایا تھا، یہاں پہ ایک پہاڑ ہے جس کا نام نبات گھاٹ یعنی مصری کا پہاڑ رکھا گیا ہے اسکے اطراف باغات کو بہترین طریقہ پر سجایا گیا ہے اس پہاڑ کے اطراف چھ میل تک باغات کا سلسلہ ہے۔ جہاں ہمہ اقسام کے میوہ جات اور مختلف قسم کے پھول درخت اور شاندار عمارتیں ہیں۔ یہاں ایک دیوار

جس میں براق کو دکھایا جاتا ہے جبرئیل اور فرشتوں کی فوجوں کو ظاہر کیا جاتا۔ ایک جگہ حضرت یوسف زلیخا اور مصری عورتوں کی تصویر کشی کی گئی ہے اور کہیں خسرو پرویز و شیریں کے داستان عشق کو تصویری رنگ دیا گیا جنگ رستم اور سفید دیو کو بتلایا گیا ہے غرض ساری نادر و نایاب فنون لطیفہ کی چیزیں یہاں جمع ہیں۔

تخت شاہی جو اس جگہ رکھا ہے وہ سونے کا بنا ہوا تھا اس پر قیمتی جواہرات جڑے تھے اس محفل میں مشہور و معروف رقاص بھی موجود تھے۔ لیکن سوچئے تو میلاد النبی سے رقص و سرود کا کیا تعلق ۔ اور بازی گر اپنی اپنی بازی گری میں مصروف تھے۔ مسخرے اور ہزل گو بھی اودھم مچائے ہوئے تھے۔ اور اس موقع پر عورتیں صندل مشک اور عنبر استعمال کرتی تھیں۔ نان اور قورمہ سب میں بطور تبرک تقسیم کیا جاتا تھا عہدہ دار بادشاہ کو نذر پیش کرتے اور انعام و اکرام بادشاہ کی طرف سے پاتے۔ آتش بازی کی جاتی یہہ سلسلہ بارہ دن تک جاری رہتا اس جشن کا خرچ ہر سال تیس ہزار ہون بتلایا جاتا ہے۔

ان تمام خوشی کے موقعوں کے ایک وقت ایسا بھی آتا ہے کہ ریاست میں قحط پڑجاتا ہے اسوقت کا حال کچھ اس طرح بیان کیا گیا ہے قحط سے نجات کے لئے بادشاہ نے حکم دیا کہ تین دن تک روزہ رکھیں اور جمعہ کے دن نماز استسقاء ادا کی جائے سب علماء فضلا اور متقیوں نے تین روز تک روزہ رکھا اور اسکے بعد پیشوا کے پاس برہنہ پاگئے اور کیا بچے کیا بڑے سپہ، فقیر، مسکین امراء وزیر تک سب لوگوں نے جنگل کا رخ کیا ندی محل کے مجاذی ایک میدان تھا اس میں سب جمع ہوئے اور اللہ سے بارش کے لئے دعا مانگی سب لوگوں میں رقم تقسیم کی گئی۔ بادشاہ کے حکم سے کئی لنگر خانے قائم کئے گئے اور غذا تقسیم کی گئی، کھانے کے دیگ بازاروں میں پھرائے گئے محلوں میں باؤلیاں کھودی گئیں۔ نسل انسانی کی بقا کیلئے وسیع انتظامات کئے گئے۔

ان تمام باتوں کے علاوہ ہندو بیرون ہند کے ایلچی اور سفیروں کی آؤبھگت کی جاتی تھی انعام و اکرام و خلعت سے نوازا جاتا ہاتھی گھوڑے انعام دئے جاتے۔ بادشاہ امراء کے محلوں میں اپنے جرم کے ساتھ تشریف لے جاتے تھے۔ تحفہ تحائف قبول کرتے جسکی یہاں تفصیل غیر

رسومات میں تمام رعایا کیا ہندو کیا مسلمان سب جوش و خروش اور عقیدت سے حصہ لیتے تھے اسکا سلسلہ آصف جاہی دور میں بھی قائم رہا۔ یہہ قطب شاہوں کی رواداری اور قومی یک جہتی کی اچھی مثال ہے۔ ہندو بھائی بھی محرم کو بہت ہی اعتقاد سے مناتے ہیں عورتیں اور لڑکیاں شربت کی ٹھیلیاں اپنے سروں پر رکھ کر عاشورخانہ لے جاتیں اور وہاں کے خداموں کو تقسیم کرتیں اور اگر عشرہ میں کوئی لڑکا پیدا ہوتا اسکا نام حسین رکھا جاتا۔

اس کے بعد مؤلف نے ایک اور مذہبی عید میلاد سرکار دوعالم صلی اللہ علیہ وسلم کی تفصیل بیان کی ہے محمدؐ قطب شاہ کے دور میں یہہ جشن موقوف کردیا گیا تھا اور اسکی رقم کو علماء فضلاء اور اتقیاء میں تقسیم کیا جاتا تھا ابراھیم قطب شاہ کے عہد میں اس کا اعادہ کیا گیا جسکا بیان نظام الدین نے اسطرح کیا ہے۔

جشن داد محل میں منایا جاتا تھا اس میدان کے تین جانب بازار اور دوکانیں ہیں دوکانوں میں ہمہ اقسام کے جواہرات موجود ہوتے ہمہ اقسام کے معدنیات موجود رہتی تھیں۔ اس میدان میں دو عمارتیں تھیں ایک چاوڑی تھا نہ دوسرا کوتوال خانہ یہ عمارتیں ایک دوسرے کے محاذی ہیں اور ہر عمارت چار منزلہ ہے اور ایک دوسرے سے متصل ہے۔

میدان میں ڈیرے ڈال دیئے جاتے ہیں بڑے خیموں میں زردوزی کی جاتی ہے اور ایسا معلوم ہوتا ہے کہ آسمان زمین پر اترآیا ہے۔

۱۷/ ربیع الاول کو صنعت و حرفت کی نمائش آراستہ کی جاتی تھی تمام دنیا کے تماشائی اس میدان میں جمع ہوجاتے اور سیرو تماشہ کے منتظر رہتے ہزارہا عجیب و غریب کارنامے اور عجائبات ظاہر ہوتے اضلاع و اطراف و اکناف کے لوگ یہاں موجود رہتے یہاں پر جو منظر نگاری اور آرائش کی جاتی وہ ہند ایرانی تہذیب کو ظاہر کرتی ہے حالانکہ اسلام میں جاندار چیزوں کی تصاویر اتارنا منع ہے پھر بھی ہندوستانی و قبل اسلام ایرانی تہذیب کا اثر ان میں عیاں نظر آتا ہے یہاں کی دیواروں اور چھتوں پر فرشتوں کی تصاویر، بادشاہ کے دربار کی منظر کشی حضرت سلیمان علیہ السلام کی مجلس و محفل کی مصوری وحشی جانوروں اور پرندوں کی تصاویر معراج نبوی کی تصاویر

ادائیگی کا بیان بھی بہت تفصیل سے کرتا ہے۔ رسوم تعزیہ داری کی تفصیل کچھ اسطرح بیان کی ہے کہ محرم کا چاند نظر آتے ہی تمام سامان عیش و نشاط موقوف کردیا جاتا ماتمی لباس پہن لیا جاتا غم و اندوہ کی فضاء طاری ہوجاتی شاہی احکام باورچیوں کو صادر ہوتے کہ خاصہ کی غذاؤں میں گوشت نہ شامل کیا جائے اور سیندھی تاڑی اور دیگر منشیات کو ایام عزاء میں موقوف کردیا جاتا قصابوں اور پان فروشوں کی دوکانیں بند رکھی جاتیں اور حجام کو حکم ہوتا کہ کسی کا سر نہ تراشیں۔ یہہ احکام مسلمانوں کے ساتھ ساتھ غیر مسلموں پر بھی لاگو ہوتے۔ خزانہ عامرہ سے کئی ہزار سیاہ لباس اور سیاہ آبنوسی عصا رعایا اور امراء میں تقسیم ہوتے دو عاشور خانے تعمیر کئے گئے تھے جہاں علم مبارک چہاردہ معصومین کے نام سے منسوب کرکے ایستادہ کئے جاتے ایک تو خود دولت خانہ میں اور دوسرا عاشور خانہ دارالسلطنت کے بازار میں تھا ان میں سبز قالین بچھے ہوتے فرش سیاہ سے آراستہ کیا جاتا اور چھتوں کو کالے اطلس کی چھت گیروں سے ڈھانکا جاتا اس کی دیواروں پر کاشی کاری کی گئی تھی جہاں چہاردہ معصومین کی مرغوب دعائیں کندہ کی گئی تھیں اور اسی عمارت میں دس طاقچوں کی صفیں بنائی گئی تھیں جن میں چراغ روشن کئے جاتے تھے ہر رات ایک صف بڑھادی جاتی تھی اسطرح دسویں تک تمام دس صفوں میں چراغاں کئے جاتے تھے اور یہہ چراغ دس ہزار سے زیادہ ہوتے قدآدم موی شمعیں روشن کی جاتی، ذاکر و مرثیہ خوان صبح و شام عزاء سیدالشہداء برپا کرتے، وقت عصر بادشاہ لباس سیاہ میں ملبوس رہتے۔ اہل خاندان کے ساتھ داد محل سے تشریف لاتے مرثیہ خوان مرثیہ پڑھتے چلے جاتے جب بادشاہ عاشور خانہ کے دروازہ پر پہنچتے تو یہاں سے علم مبارک تک پیدل جاتے اور خود اپنے ہاتھ سے پھولوں کا سہرا چڑھاتے اور پھر مجلس عزاء برپا ہوتی بعد فاتحہ خوانی بادشاہ یہاں سے محل دولت خانہ تشریف لے جاتے یہاں پر آدھی رات تک ذکر سید الشہدا ہوتا تبرک تقسیم کیا جاتا جو شربت اور طعام کے صورت میں ہوتا۔ اس طرح دس دن کی مصروفیات کا ذکر کیا ہے جس میں لنگر وغیرہ بھی شامل ہے جو طوالت کے لحاظ سے چھوڑدیا گیا۔

یہ تمام رسوم بادشاہ کی ائمہ معصومین سے عقیدت اور وابستگی کو ظاہر کرتی ہیں اور ان

اور اسقدر تھا کہ جسکا شمار نہیں کیا جاسکتا۔

سپہ سالار عادل شاہ مرہری خود شہر کے دروازے پر آیا تاکہ ملکہ کو وداع کرا کے لے جائے اور قطب شاہ عادل شاہی لشکر کے ساتھ عادل شاہ کی بہن سے ملاقات کیلئے گیا۔ مرہری پہلے تو زمین بوس ہوکر آداب بجالایا اور پھر زرسرخ وسفید کے تین تھال دلہن پر سے نثار کئے ایک عربی ایک عراقی گھوڑا ۔ زرین لگام تین قطار ہاتھی نو عدد خوان جس میں اعلیٰ و نفیس اشیاء تھیں بادشاہ کے ملاحظہ کیلئے پیش کئے گئے اور بادشاہ نے مرہری کو خلعت بخشا اور اسکے ساتھ چھ گھوڑے اور دو قطار ہاتھی عنایت کئے۔

شاہی صیغہ حساب کے محاسب جہیز کی قیمت پانچ لاکھ بتلاتے ہیں اور خلعت وغیرہ جو عنایت کئے گئے ہیں اسکا تخمینہ پچاس ہزار ہون لگایا گیا ہے۔ اس کے بعد بھی ڈیڑھ ماہ تک محلات میں عیش و عشرت کے ہنگامے برپا رہے۔ دلہن کو وداع کرنے کیلئے امراء زرنگار پالکیوں میں بیٹھے ہوئے گولکنڈہ تک گئے دلہن جب گلبرگہ پہنچی تو وہاں بھی عیش و طرب کی محفلیں منعقد کی گئی اور امراء میں خلعت و انعام تقسیم ہوئے میر جملہ کو پوشاک پہنائی گئی دوسرے دن خود عادل شاہ آئے اور ملکہ کے ڈیرے کے محاذی ڈیرہ نصب کیا اور ملکہ کے ڈیرے میں تشریف لائے اور جواہرات ملکہ پر سے نثار کئے اور اسی شب ملکہ کی سواری زر نگار پالکی میں بیجاپور پہنچی۔ اور راستوں میں شہر کے بازاروں کو خوب آراستہ کیا گیا تھا، چراغان کئے گئے آتش بازی ہوئی۔

ایک جگہ مؤلف شہزادہ کی روزہ کشائی کی رسم کی تفصیلات بیان کرتا ہے۔ اس موقع پر محل میں کندوری تیار کی گئی اور شربت بیٹھائیاں وغیرہ باورچی خانہ میں تیار ہوئے نیک اور فاضل اشخاص کو کیسہ زر پیش کیا گیا۔ فقراء اور مساکین کو پارچہ جات و کھانے کی اشیاء تقسیم کی گئی۔ عید رمضان کے بیان میں لکھتا ہے کہ دربار میں آنیوالوں کی زعفران اور مشک سے تواضع کی گئی رمضان میں سیندھی ، شراب ، بھنگ اور دیگر خلاف شرع چیزیں حتیٰ کہ پان کی دوکانیں بھی بند رہتی تھیں۔ بادشاہ بھی روزہ رکھتے تھے۔

عیش و نشاط کی دلآویز محفلوں کے ساتھ ساتھ مؤلف نے مذہبی مجلسوں اور رسومات کی

امرا میں ترک اور دکنی سب موجود ہوتے۔ یہہ لوگ وفادار ہوتے لیکن حیلہ سازی و بہانہ بازی میں کمال رکھتے ہیں۔

بادشاہ ہفت منزلہ عمارت پر سب سے بلند مقام پر جلوہ افروز ہے۔ بادشاہ کا تاج سونے جواہرات اور لاقیمت ہیروں سے مزین ہوتا اور گاؤتکیہ کا سہارا لئے ہوئے بیٹھے ہیں اور گاؤتکیہ ہیرے اور جواہرات سے مزین شدہ ہے۔

ایک اور رسم یعنی محمد قلی قطب شاہ کی دختر کی شادی کا واقعہ بیان ہوا جسکو عادل شاہ سے بیاہ دیا گیا تھا۔ اس شادی کی تفصیل کچھ اسطرح ہے۔ توشہ خانہ کے عہدہ دار شاہی حکم سے برات کے استقبال کے لئے گئے اور نصیر الملک کریم خاں سرنوبت اور خاصہ فیل کے حوالہ دار بھی فوج کے ساتھ گئے اور تحفہ و تحائف پیش کئے برات کیلئے شیر علی کا دربار جس میں چالیس محل تھے برات کی رہائیش کیلئے آراستہ کیا گیا۔ صبح و شام رقص و سرود کی محفلیں منعقد ہوتی ہیں دوسرے دن بادشاہ ہاتھی پر سوار ہوئے جسکی زنجیریں طلائی تھیں عماری ہیرے جواہرات سے مزین تھی۔

بادشاہ کے ہمراہ مصاحب، امراء اور پہلوان تھے۔ پیادہ فوج کثیر تعداد میں موجود تھی شاہ کوہ طور کی جانب جوسے اور تخت شاہی پر جلوہ افروز ہوئے سب درباری اپنے اپنے مقام مقررہ پر بیٹھ گئے بجانے والے اور دوسرے لوگ مرصع اور مزین عصاء ہاتھ میں لئے اپنے اپنے کام میں مصروف تھے عادل شاہ کے اپلچی کو طلب کیا گیا، عادل شاہی خواتین کو جواہرات کے ساتھ تحفہ و تحائف دئے گئے اور قطب شاہی حرم میں ٹہرایا گیا۔ شہزادی کا عقد عادل شاہ سے ہوا زر مہر تین لاکھ ہون طئے پایا اسوقت عادل شاہ کی بہن کو ایسے بیش قیمت تحائف دئے گئے کہ جنکا تصور بھی نہیں کیا جاسکتا۔ کریم خاں سرنوبت دو سردار چار سو سوار ملکہ کی پالکی کے ساتھ رکھے گئے یہہ پالکی سنہری تھی اور جواہرات سے سجی سجائی ہوئی تھی اور بیس پالکیان اسکے ہمراہ تھیں اسکے علاوہ ایک سو پچاس پالکیاں تھیں جن میں سلطنت کے سازو سامان تھے۔ ہاتھی اور ترک و تازی گھوڑے بھی دلہن کے ساتھ دئے گئے تھے، اونٹوں پر سامان لدا ہوا تھا۔ سامان بہت قیمتی تھا

موسم برسات پر بادشاہ واپس شہر تشریف لاتے تھے۔

ہر صبح و شام فراش صفائی کا کام کرتے اور بہشتی مشکوں سے پانی چھڑکتے۔ رقاص اور گانے والے مقام تلنگانہ سے، حیدرآباد سے کرتب دکھانے والے، کرناٹک سے رقاصائیں، احمد آباد سے گانے والے اور ناچنے والیاں، کابل اور لاہور سے خوبصورت طوائفیں، آگرہ اور برہانپور سے طبلچی اور ڈھول بجانے والے آئے ہوئے تھے۔ اس موقع پر جو خوشبو استعمال کی جاتی تھیں ان میں عطر، مشک، عنبر اور لباس میں زربفت و کمخواب کی پوشاکیں ہوتی تھیں۔ صندل، زعفران اور مشک بڑے بڑے چاندی اور سونے کے عود دان میں رکھے جاتے تھے۔

اس کے ساتھ ہی پھولوں کا بھی بیان ہے۔ مولسری، چمپا، موگرہ، سیوتی، یاسمین کے گلدستے طرح طرح کے گلوبند خوبصورت حسینوں میں تقسیم کئے جاتے تھے مختلف مغزیات و مشروبات بھی تھے جو عوام کیلئے سونے اور چاندی کی کشتیوں میں رکھ کر تقسیم کیے جاتے اور خاص امراء کیلئے جڑاؤ کشتیوں میں امراء کیلئے ریشم اور زربفت کے فرش کئے جاتے تھے۔

دربار کا حال کچھ اسطرح تھا مختلف بادشاہوں کے نمائندے ہند وبیرون ہند سے آئے ہوئے، سفیروں کی جگہ دربار میں مقرر تھی معتمد اشخاص، خواجہ سرا اطراف و اکناف ایستادہ رہتے۔ شاہی محلات کے خصوصی تیس ہزار افراد دور کھڑے تخت شاہی کے اطراف نگرانی میں مصروف ہیں اور صوبیدار و محلدار نگرانی میں مصروف رہتے بادشاہ کے سامنے اور پیچھے ترکی غلام دو صف میں ایستادہ رہتے حبشی غلام بھی ہیں جن میں بعض سونے کے عصاء ہاتھ میں پکڑے ہوئے اور کچھ چاندی کی چھڑیاں اٹھائے ہوئے رہتے۔ سلح دار کو خاصہ فیل کہا جاتا ہے۔ ان میں سے چار ہزار نفوس جنگجو ایک سوار نیزہ انداز اور شجاعت میں لاثانی ہے اور ہر ایک اپنی جگہ کھڑا ہے۔

ہاتھی اور عربی گھوڑے بھی یہاں موجود رہتے۔ جنہیں زربفت اور قیمتی کپڑوں سے سجایا جاتا ہے زردوزی عبائیں پہنائی جاتی اور لگامیں چاندی اور سونے سے تیار کردہ ہوتیں ان جانوروں کو محلات کے اطراف کھڑا کیا جاتا۔

جسکا ترجمہ ہدیہ سامعین ہے۔ بوقت عصر محمد قطب شاہ مرحوم کی نعش کو ایک زرنگار سواری پر رکھا گیا۔ امراء، وزراء، حضرات علماء، سادات، پا پیادہ جنازہ شاہی کے ہمراہ چلتے رہے جنازہ لیجایا گیا اور ایک شاندار گنبد جس کی بنیاد بادشاہ سلامت مرحوم نے رکھی تھی اور ایک عظیم المرتبت خزانہ کے ماتحت شاہ کے جسد کو سپرد لحد کردیا گیا۔

عبداللہ قطب شاہ کی تخت نشینی کے متعلق جو فاضل مؤلف نے لکھا ہے اسکا ترجمہ پیش ہے۔

آخر کار چودہ جمادی الاول ۱۰۳۵ھ صبح کے وقت شاہی نقار خانہ سے نوبت و نقارہ کی بلند آوازیں آنی شروع ہوئیں۔ محل کے قریب افواج کا ہجوم تھا امراء اور افراد عملہ اطراف موجود تھے ایک روح پرور نظارہ تھا دربار شاہی میں آرائش کی گئی تھی بادشاہ تخت پر جلوہ افروز تھا اراکین حکومت اپنے اپنے مقام پر کھڑے تھے شاہ کو مبارک باد دینے کا سلسلہ شروع ہوا۔ مرصع آلات و خلعت فاخرہ عہدداروں اور قلعہ داروں کو عطا کئے گئے۔ عوام میں، گھوڑوں اور ہاتھیوں پر رکھ کر شکر اور روپیہ بازاروں میں تقسیم کیا گیا اور قیدیوں کو آزاد کیا گیا۔

بیرون ملک سے ذی مرتبہ اشخاص آنے شروع ہوئے اور بادشاہ کی خدمت میں گھوڑے ہاتھی اور مرصع آلات حرب بطور تحفہ بھیجے گئے اور سفیروں نے پہلے تعزیت پیش کی پھر مبارکباد۔ اور بادشاہ انھیں انعام و اکرام سے سرفراز کیا اور ان کی رہائش کا انتظام عالیشان عمارتوں میں ہوا۔

چونکہ ہندوستان کی آب و ہوا سیر و شکار کیلئے موزوں تھی بادشاہ اپنے فرصت کے اوقات سیر و شکار میں گذارتے (جس وقت موسم سازگار ہوتا) اس وقت بادشاہ اور امراء کے محلات بھی ساتھ ہوتے عورتوں کیلئے علیحدہ خیمے نصب ہوتے یہاں بھی عیش و نشاط کی محفلیں منعقد ہوتی تھیں۔ ارباب نشاط کیلئے علحدہ رواٹھیاں بنائی جاتیں۔ شکار اکثر کوہ طور نامی پہاڑ کے دامن میں کیا جاتا اور اس پہاڑ پر ایک محل تعمیر کیا گیا تھا جہاں بادشاہ ٹھہرتے اسکے اطراف واکناف وسیع باغات تھے اس میں میوہ کے درخت لگائے گئے تھے ایک ماہ تک یہہ محفل سجی رہتی اور ختم

تربیت کیلئے اتالیق مقرر کئے گئے اور ہر روز شہزادہ کی تعریف بادشاہ کو دی جاتی اور اتالیق کے ساتھ دو خواجہ سرا بھی مقرر ہوئے جو شہزادہ کی تعریف دریافت کرتے اور شاہ کی خدمت میں سب واقعات عرض کرتے۔ اسکے ساتھ ہی ساتھ بادشاہ مذہب سے غافل نہیں تھا بلکہ شہزادوں کو مذہبی تعلیم دی جاتی اور اس کام کیلئے میر محمد مومن اور مولانا حسین شیرازی جیسے متقی اور عالم مقرر کئے گئے تھے اور ساتھ ہی شہزادہ کو دوسرے علوم جیسے شمشیر چلانا تیروتفنگ چلانا گھوڑ سواری کی تعلیم بھی دی جاتی تھی۔

جب بارہ سال کی مدت گذرگئی تو شہزادہ کے محل سے لیکر بادشاہ کے دولت خانہ تک زربفت و کمخواب کا فرش کیا گیا شہزادہ اس پر سے چلتے ہوئے آیا اور زر و جواہر شہزادہ پر سے نثار کئے گئے۔

دربار میں شعراء ۔ علماء ۔ ادباء و فضلاء موجود رہتے تھے انھیں خاطر خواہ انعام و اکرام دئے جاتے تھے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بادشاہ علم پرور و عالم دوست تھے۔ خوشی کے موقع پر تحفہ تحائف کا تبادلہ عمل میں آتا تھا بادشاہ سب کو تحفہ و تحائف عطا کرکے اور امراء وزراء سے نذر قبول کرتے تھے اور ایسے موقعوں پر طالب علموں ۔ مدرسوں اور مخلقین کی بے دریغ مدد کی جاتی تھی۔

محمد قطب شاہ کی بیماری کا جو ذکر کیا گیا ہے اس سے ہمیں یہہ معلوم ہوتا ہے کہ دربار میں ہندوستانی حکماء کے علاوہ عراقی حکیم بھی موجود تھے جن سے علاج و معالجہ میں مشورہ کیا جاتا تھا۔ محمد قطب شاہ کی وصیت سے ہمیں بادشاہ کے مسلک کا پتہ چلتا ہے کہ وہ چودہ ہزار سکہ ابراہیمیہ چودہ معصومین علیہم السلام کے لئے بطور امانت محفوظ رکھا تھا اور وصیت کی تھی کہ اسکی وفات کے بعد یہہ رقم زیارت و حج وغیرہ کروانے میں صرف کی جائے۔ ایران کے درباروں کی طرح قطب شاہی دربار میں بھی بادشاہ کی تخت نشینی کے وقت زمین بوس ہوکر شاہ کو سجدہ کرنے کا رواج تھا۔ اور بازاروں میں منادی کروائی جاتی تھی، پہلے شہزادہ کی تخت نشینی کی رسم ادا کی جاتی اور اسکے بعد بادشاہ کی تجہیز و تکفین کا انتظام کیا جاتا۔ جسکا منظر نظام الدین نے اسطرح کھینچا ہے

تصنیف کی کہ انکا شمار گیارھویں صدی کے ادباء میں ہونے لگا۔

یہ زمانہ ادب کی اشاعت اور تصنیف و تالیف کے عروج کا زمانہ تھا۔ اسلامی ممالک میں علماء اور ادباء سب جمع ہوگئے تھے ان کی سرپرستی کی جارہی تھی اور ساتھ ہی ساتھ احترام اور عزت بھی ہوتی تھی۔

یہ تاریخ ۴۳ سال کے حالات پر مشتمل ہے اس میں جو وقائع بیان کئے گئے ہیں ان کا انداز بہت شریں ہے اور ان کے بیان میں فصاحت و بلاغت سے کام لیا گیا ہے۔

اس کتاب کے مطالعہ میں واقعات کا اسقدر تنوع ہے کہ شروع سے آخر تک قاری کی دلچسپی باقی رہتی ہے اور اسکا ذہن تھکنے نہیں پاتا اسکی ہر فصل میں ایک نیا واقعہ اور ہر باب میں ایک جدید خبر موجود ہے۔

مؤلف کبھی سلاطین کا ذکر کرتا ہے تو کبھی علمائے کرام کا اور کبھی رزم و بزم کی طرف جاتا ہے تو کبھی اصحاب نظر اور دلاوروں کا بیان کرتا ہے اور کبھی خونریز جنگوں کا ذکر کرتا ہے اور کبھی محفل عیش و نشاط کی طرب انگیزی تو کبھی قصر ہائے شاہی، محلات شاہی اور بوستان دولت کا بیان کرتا ہے کبھی سیر و شکار کبھی ذکر امراء واہل دولت و بزرگان ملت اور کبھی دوسرے ممالک سے آئے ہوے سفیروں کے حالات ۔ اسی طرح محرم کی رسم عزاء و جشن و میلاد کبھی لالہ زار و چمن و تالاب کے خوش آیند مناظر سے پڑھنے والے کے دل کو سرور پہنچاتا ہے ۔ غرض اسطرح حدیقہ السلاطین کا شمار بہترین کتابوں کی صف میں ہوتا ہے مؤلف نے اسکی تالیف میں تحقیق و باریک بینی کے فرائض بھی انجام دیتے ہیں (تصویر نمبر ۴)

اس کتاب کا آغاز عبداللہ قطب شاہ کی پیدائش سے ہوتا ہے جہاں ہمیں یہہ معلوم ہوتا ہے کہ بادشاہ مافوق الفطرت قوتوں پر اعتقاد رکھتا ہے اور اسکے ساتھ ہی ساتھ نجوم ورمل پر یقین کرتا ہے۔ جب بچہ کی ولادت ہوتی ہے تو دربار میں نجومی بلائے جاتے ہیں تاکہ بچہ کے مستقبل کے حالات کے مطابق نجوم بتلائیں۔ جب نجومیوں نے بتلایا کہ بارہ سال تک بچہ کو بادشاہ سلامت سے الگ رکھا جائے تو اسی پر عمل کیا گیا اور شہزادہ کو ایک علحدہ محل میں رکھا گیا۔ شہزادہ کی

ڈاکٹر زیب حیدر
ریڈر شعبہ فارسی
جامعہ عثمانیہ حیدرآباد۔

# حدیقتہ السلاطین: عہد قطب شاہی کی تمدنی تاریخ کا ماخذ

کسی بھی ملک کا تمدن وہاں کے ماحول، آبادی ، وسائل، آب و ہوا اور رسم و رواج کا آئینہ دار ہوتا ہے۔ آب و ہوا ، وسائل اور معاشی حالت کا اثر تمدن پر بہت پڑتا ہے اس کتاب میں فاضل مؤلف نے جہاں جہاں تمدنی حالات بیان کئے ہیں وہاں اسکے ساتھ ساتھ وہاں کی آب و ہوا اور وہاں کی پیداوار وغیرہ کے بارے میں بھی بیان کرتا چلا ہے۔ پوری کتاب کے مطالعہ سے یہہ اندازہ ہوتا ہے کہ اسوقت دکن قدرتی وسائل سے مالا مال تھا۔ یہاں کی آب و ہوا خوشگوار تھی یہاں پر میوہ اور غلہ کی بہتات تھی اور سلطنت کا خزانہ بھرا ہوا تھا بادشاہ بھی فیاض تھا جسکی وجہہ سے رعایا بھی خوشحال تھی۔

سید علی اصغر بلگرامی صاحب اس کتاب کے بارے میں یوں رقمطراز ہیں۔ " این کتاب کہ آلان تقدیم ناظرین محترمین می شود نامش حدیقتہ السلاطین قطب شاہی است و مؤلف اویکی از اجلہ علماء و ادباء عصر سلطان عبداللہ قطب شاہ می باشد و نام مؤلف مرزا نظام الدین احمد الصاعدی الشیرازی است ۔۔۔۔۔۔ این کتاب مستطاب دارائے ترجمہ و شرح سوانح بادشاہ ہفتم این سلسلہ ذکیہ سلطان عبداللہ والمتوفی ۱۰۸۳ھ می باشد وسال تولد آن شہریار ۱۰۲۳ھ تا سنہ ہفتم جلوس ۱۰۵۳ھ است و موضوع این کتاب علم تاریخ است " (۱)۔

آگے مؤلف کتاب کے بارے میں لکھتے ہیں کہ وہ بہت بڑے ایرانی عالم اور ادباء میں شمار ہوتے تھے جو اپنے وطن سے ہجرت کر کے ہندوستان آئے تھے اور اپنی علمی قابلیت واستعداد کی وجہہ سے مقرب بارگاہ قطب شاہی ہوئے۔ اور علامہ شیخ محمد ابن خاتون العاملی قدس سرہ کے حوزہ علمیہ میں شریک رہے۔ اور انھیں کی تربیت کا فیض ہے کہ نظام الدین نے اپنی اہم کتاب

مقصد اس تاریخ کی تدوین سے مسلمانوں کی تاریخ لکھنا تھا لیکن غیر اداری اور غیر شعوری طور پر انھوں نے حیدرآباد کا تذکرہ تفصیل سے کیا ہے۔ عماد سالار جنگی میں شہر حیدرآباد اپنے روز اول سے عہد محبوبی تک ممکنا اور چمکتا نظر آتا ہے۔ جہاں مولوی محمد اسماعیل نے اس شہر کی تاسیس میں بحث کی ہے۔ وہیں عہد بہ عہد اس کی ترقی کا احوال بھی بیان کیا ہے۔ اس حیثیت سے "جمیع تاریخ المعروف عماد سالار جنگی" شہر حیدرآباد کی تاریخ کا ایک اہم ماخذ ہے۔ اہل حیدرآباد نے اپنے اس شہر خوباں کی تاریخ بڑی دلبستگی اور دلآویزی سے لکھی ہے تاہم مولوی محمد اسماعیل کا خلوص اس قابل ہے کہ ہم احترام کی نگاہوں سے دیکھیں اور ایمانداری سے اس کا اعتراف کریں

(دیکھئے تصویر نمبر ۳)

نوٹ :- یہ قطع تاریخ ، انگداشت اسٹیٹ کے موقع پر کہا گیا ہے مدکہ سرفرازی وزارت پر (مرتب)

○ ○ ○

مدارالمہام سرکار عالی میں مڈل کامیابی نواب سالار جنگ بہادر کی اطلاع فرمایا۔ اس سلسلہ گذارش سے مدار المہام سرکاری عالی پیشگاہ اقدس اعلیٰ حضرت بندگان عالی میں عرضداشت گذارنے جس کی بہتیت حضرت بندگان عالی نے اپنی شاہی خسروانہ اور اس خاندان کا لحاظ سے ادا فرمائی۔ جسکا شکریہ آپ کی والدہ ماجدہ پیشگاہ اعلیٰ حضرت میں گذارنی۔

مندرجہ بالا واقعہ سے پتہ چلتا ہے کہ اس زمانہ میں میڈل کلاس کا پاس ہونا کتنا غیر معمولی واقعہ تھا جبکہ آج پی ایچ ڈی کی ڈگری کا حصول بے حد معمولی واقعہ بن کر رہ گیا ہے۔

مولوی محمد اسماعیل نے جب عماد سالار جنگی کو تکمیل کیا اس سال نواب یوسف علی خاں کو عہدہ جلیلہ وزارت و مدار المہامی (۱) سرکار عالی سے سرفراز کیا گیا تھا۔ چنانچہ انھوں نے اس پر مسرت موقع پر قطع تاریخ کہا:

سالار جنگ اپنے ہوئے اسٹیٹ کے مختار
صد شکر کہ مختار یہہ سالار ہوئے آج
تاریخ کی جب فکر ہوئی مجھ کو یکایک
ہاتف نے کہا۔ لیجئے وہ مختار ہوئے آج

۱۳۳۰ھ

عماد سالار جنگی میں جہاں ہمیں شاہ دکن میر محبوب علی خاں کے سفر دہلی و کلکتہ کا ذکر ملتا ہے۔ وہیں دوسالہ قحط ۱۲۹۳ھ زلزلہ ۱۲۹۳ھ طغیانی رود موسیٰ ۱۳۶۵ھ م ۱۸۷۶ء و ۱۳۲۱ھ م ۱۹۱۳ء اور آندھی و غبار ۱۴/ ربیع الاول ۱۳۳۱ھ کا حال و احوال بھی ملتا ہے۔ میر عالم اور ارسطو جاہ کی آپسی اختلاف کے نتیجہ میں میر عالم کو قید ہوئی۔ مولوی محمد اسماعیل رقم طراز ہیں۔ میر عالم بظاہر اس سزا کے مستحق نہ تھا شاید ٹیپو سلطان کی اسلامی حکومت برباد کرنے کے جرم میں یہ سزا نصیب ہوئی تو عجب نہیں۔

جمیع تاریخ اصل میں مسلمانان ہند کی جامع تاریخ ہے۔ چونکہ اس کا تعلق نواب سالار جنگ سے رہا ہے اس لئے بشرط وفاداری اس کا نام عماد سالار جنگی بھی تجویز کیا۔ بلاشبہ ان کا

عماد سالار جنگی یوں تو کوئی اعتبار ایک اہم تاریخی دستاویز ہے۔ تاہم حیدرآباد کے تمدن اور تہذیب کو بہت اچھے انداز میں بیان کیا گیا ہے۔ وقتاً فوقتاً حیدرآباد میں جو معاشی ، صنعتی اور تعلیمی ترقیاں ہوئی ہیں۔ ان کا ذکر بھی ملتا ہے۔ چنانچہ حیدرآباد میں ریل کی بناء ۱۲۸۷ ھ میں پڑی۔ انتظام ملکی کے تحت ضلع بندی ۱۳۵۰ ف اور ہر ضلع میں عدالت قائم ہوئی۔ ۱۸۷۲ء میں مجلس عدالت خاص دار السلطنت میں قائم ہوئی۔ آبرسانی محکمہ رجسٹری اور چار وزراء کا تکرر صیغہ مال گزاری ، صیغہ کوتوالی ، صیغہ عدالت اور صیغہ فوج کا قیام عمل میں آیا۔ محصول ٹیپہ خانہ ۱۳۱۴ ھ سکہ ۱۲۵۸ جدید سکہ ۱۳۱۳ ھ افتتاح کلاک مینار فتح میدان ۲۲/ شوال ۱۳۱۳ ھ روز سہ شنبہ اسی طرح تیاری جدید گھڑیاں دروازہ میاپل افضل گنج ۱۳۱۳ ف تاریخ بھی کہی گئی۔

نمائش گاہ باغ عامہ کی ابتداء ۲۷/ جنوری ۱۹۰۶ء میں ہوئی۔ مہاراجہ کشن پرشاد نے احکام جاری کیئے اور اس کے پہلے صدر منتظم یا ڈائرکٹر لیاقت علی لیاقت جنگ بہادر ، اول تعلقدار ضلع رائچور تھے۔ یہ نمائش چار ماہ تک چلتی رہی۔ پہلی نمائش بمسرت جشن سالگرہ منعقد ہوئی تھی۔

مولوی محمد اسماعیل نے اپنے آقا اور مالک جن کے وہ نمک خوار تھے کا بھی ذکر بعد عقیدت و محبت کیا ہے۔ چنانچہ باب ہفتم میں نواب میر یوسف علی خاں سالار جنگ بہادر کے خاندانی حالات کا ذکر موجود ہے۔

اس کے علاوہ اس کتاب میں امیر کبیر تیغ جنگ بہادر امیر پائیگاہ اور ان کے خاندان کا بھی ذکر اس دیانتداری سے کیا ہے جس دیانت داری کی توقع ، ہم ایک وسیع النظر اور فارغ دل مورخ سے کرتے ہیں۔ ہر دو خانوادوں کی تفصیلات میں گئے بغیر میں ایک دلچسپ واقعہ کا ذکر یہاں کرونگا۔ اس واقعہ سے اس دور کی تعلیمی حالت اور اس کی قدردانی کا اندازہ ہوتا ہے۔

" میر یوسف علی خاں کا میڈل پاس ہونا " کی ضمنی سرخی کے ساتھ لکھا ہے۔ " از فضل ایزدی تعالیٰ آپ نے درجہ میڈل کی کامیابی حاصل فرمائی اور آپ کی کامیابی میڈل کی اطلاع یابی رائے للتا پرشاد ناظم صاحب اسٹیٹ نے بمقام شہر دھلی منسٹر ڈلاپ صاحب معتمد مال سرکار عالی کو رپورٹ فرمائی۔ من بعد معتمد صاحب ممدوح نے بعد واپس مہاراجہ بہادر یمین السلطنت۔

رہا چونکہ تمام قرص کا گہن تھا - اندھیرا ہوگیا تھا - تارے صاف نظر آنے لگے تھے - یہہ حالات کوئی دس پل رہے ہوں - کہا جاتا ہے کہ ایسا گہن دوسو برس پہلے ہوا تھا اور اسی سال ابتداء ذیقعدہ میں نواب افضل الدولہ کا مزاج ناساز ہوگیا - حکیم شفائی خاں، حکیم نادر علی، حکیم محمد اشرف اور فیض اللہ خاں نے علاج کیا - ۱۳ / ذیقعد سنہ ۱۲۸۵ھ م ۲ فروری سنہ ۱۸۶۹ء روز جمعہ انتقال ہوا -

مولوی محمد اسماعیل اصل میں عہد محبوبی سے تعلق رکھتے ہیں - چنانچہ میر محبوب علی خاں سے ان کی جذباتی وابستگی سمجھ میں آنے والی بات ہے - اس عہد کا ذکر بھی انھوں نے بڑے تفصیل سے کیا ہے اور ہر چھوٹے بڑے واقعہ کا ذکر بھی ملتا ہے - انھوں نے میر محبوب علی خاں کو آصف سادس قدر آقا، چراغ دکن، اور سلامت شہزادہ کے القاب سے یاد کیا ہے - تسمیہ خوانی کے واقعہ کو بیان کرتے ہوئے وہ لکھتے ہیں -

" ۱۱ / شعبان سنہ ۱۲۸۷ھ ۵ نومبر سنہ ۱۸۷۰ روز شنبہ جشن تسمیہ خوانی ہنلت پر تکلف سے ترتیب دیا گیا - نواب مختار الملک بہادر نے اپنی جانب سے ہنلت تکلف سے مہندی لائے اور جملہ اراکین ریاست ہمراہ مہندی گئے تھے - تمام حیدرآباد کے کوچہ بکوچہ مانند دلھن کے بنی ہوئے تھے " -

زیبا باغ آصف نگر میں حضور نظام کی آمد کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ سنہ ۱۲۹۱ ہجری میں اعلی حضرت کی سواری مبارک جلوس بڑی شان و شاہانہ سے خاص محل مبارک سے آصف نگر کے باغ میں رونق افروز ہوئے ہاتھیوں فوجیوں اور امراء کی سواریوں کا اہتمام تھا - ۲۱ توپوں کی سلامی دی گئی - باغ کے پہنچنے سے قبل درگاہ حضرت یوسفین پر حاضری دی " عماد سالار جنگی " میں جگہ جگہ حیدرآبادی تہذیب و کلچر کی جھلکیاں ہمیں اس دور میں ملتی ہیں - اسی طرح تخت نشینی جشن مہتابی، جشن نوروز اور ولادت مبارک سعادت آقائی ولی نعمت حضرت نواب میر عثمان علی خاں بہادر کا ذکر بھی کیا گیا ہے اور کتاب کے آخر میں آصف جاہ سابع کی عقد خوانی کا تذکرہ بھی کرتے ہیں -

کہ محمد قطب شاہ نے شہر کے مشرقی طرف قلعہ کی بنیاد ڈالی اور ۹ لاکھ ہن کی منظوری دی سنہ ۱۰۲۷ھ میں ۳ ہزار ہن کے صرفہ سے مسجد کی بنیاد رکھی ۔ عبد اللہ شاہ اور تاناشاہ کے علاوہ عالمگیر نے بھی اس مکہ مسجد کی تعمیر میں حصہ لیا ۔ یہہ مسجد سنہ ۱۱۵۴ھ کو تکمیل پائی ۔ محمد قطب شاہ نے گنبدوں کے قریب ایک شہر سلطان پور کے نام سے بسایا ۔ عبداللہ قطب شاہ کے عہد میں باغ لنگم پلی ، گوشہ محل اور حوض بنے اور اسی عہد میں بخشی بیگم نے لنگر جاری کیا ۔ تاناشاہ کے عہد میں حضرت شاہ راجو قتال حسینی کی گنبد تعمیر ہوئی ۔ یہ گنبد اپنے عہد کی نادر تعمیر ہے ۔ سنہ ۱۶۸۶ء میں تاناشاہ کی شکست کے بعد انھیں دولت آباد کے قلعہ میں قید کیاگیا۔ جہاں ان کے انتقال کے بعد حضرت خواجہ بندہ نواز رحمتہ اللہ علیہ کے والد بزرگوار حضرت شاہ راجو قتال حسینی رحمتہ اللہ علیہ کی درگاہ واقعہ خلد آباد میں دفن کیاگیا ۔ اس کے بعد حیدرآباد پر برے دن آئے تا آنکہ میر نظام علی خاں آصف جاہ ثانی کے عہد میں شہر دوبارہ پائے تخت قرار پایا ۔ اس بیچ شہر حیدرآباد مختلف مغل شہزادوں اور گورنروں مثلاً شہزادہ محمد سلطان ، شہزادہ محمد اعظم خواجہ عابد خاں بہادر ، رستم دل خاں ، شہزادہ کام بخش ، بہادر شاہ ، دلاور خاں ، ابوالمنصور خاں اور فرخ سیر کے زمانہ میں میر آصف جاہ نظام الملک بہادر کا صوبہ رہا۔

مولوی محمد اسماعیل نے خانوادہ آصفیہ کے تذکرہ کے سلسلہ میں ( باب چہارم ) ، میں بھاگ متی اور بھاگ نگر کے واقعہ کو دوہرایا ہے اور بھاگ نگر کا معنی خوش نصیب شہر بتایا ہے

خانوادہ آصفیہ کے تاجداروں نے شہر حیدرآباد سے اپنی خصوصی دلچسپی کا اظہار کیا اور اس شہر جنت نشان کی رنگ امیزی میں بڑھ چڑھ کر حصہ لیا ۔ حضرت ناصرالدولہ کے زمانہ میں مختلف محلات کے علاوہ چادر گھاٹ پل بنا ۔ افضل الدولہ کے عہد میں آفتاب محل مہتاب محل ہتیت محل اور افضل محل تعمیر ہوئے ۔ مسجد افضل گنج بھی اسی دور کی یادگار ہے ۔ عماد سالار جنگی میں مولوی محمد اسماعیل نے سورج گہن کے ایک واقعہ کا ذکر اسکی طرح کیا ہے ۔ ۲۸ ربیع الثانی سنہ ۱۲۵۸ھ روز سہ شنبہ پہر دن سے سورج گہن شروع ہوا ۔ اور اس کا عمل دو پہر تک

چاہے آرام نہیں ہے میں چاہتا ہوں کہ ندی کے اوس طرف عمارت شاہی کی بنیاد ڈالی جائے اور آبادی شہر چار راستوں اور چار بازاروں پر قرار پائی جس میں چار طاق و چودہ ہزار دکانیں اور بارہ ہزار محلیں ہوں - چنانچہ ان تعمیرات کے بحال رکھنے کے لئے ایک بڑی رقم جمع ہوئی - میر ابوطالب خزانہ دار نے لکھا ہے کہ ان تعمیرات کی تیاری میں دو کروڑ روپیہ سے زیادہ صرف ہوئے - وسط شہر میں چار کمان رفیع الشان اور ہر کمان کے محاذی راستہ کشادہ ترتیب دیا گیا -

محمد قلی قطب شاہ کے عہد میں دارالشفاء، حمام خاص محل شاہی، حوض، لنگار خانہ، محل شاہی (لکڑی صندل کی میخیں سونے کی تھیں) - جامع مسجد، ندی محل، بی باغ آخری چہارشنبہ کے جلسہ کے لئے ادبا کی دفع کے لئے دولت خانے کے قریب ۱۰۰۳ھ میں خرچ ساٹھ ہزار روپیہ امام باڑہ بنوایا جسکو اب بادشاہی عاشورخانہ کہتے ہیں - اس کے متصل ایک مسجد بنوائی - جو اب موتی مسجد کے نام سے مشہور ہے - اس کے سوا چندن محل، رنگین محل، داد محل، کوہ طور، محمد محل، حیدری محل حسنی و حسینی محل بنوایا - غرض کہ اس بادشاہ کو منظور تھا کہ آبادی شہر مثل شہر مقدس صوت پکڑے - چنانچہ اس نے بجائے روضہ حضرت امام ضامن علی موسی رضا کے چاربینار تعمیر کروایا جس کی تیاری میں قریب دو لاکھ کا صرفہ ہوا یہہ چاربینار ۱۰۰۰ھ میں تیار ہوا - تمام حیدرآباد جو اس وقت بھاگ نگر یا بھاگیہ نگر کہلاتا تھا - اس کے معاصر شاعر خواصی کا شعر ملاحظہ ہو:

ترا نگر جو حیدرآباد آج اس کا ناوں ہے
سو بے گماں بے شبہ ہے اونکر بندر فتح کا

مندرجہ بالا شعر میں خواصی نے واضح طور پر کہا ہے ترا نگر جو حیدرآباد آج اس کا ناوں ہے - اس کا مطلب یہی ہے کہ حیدرآباد کا پہلا نام ---- نگر تھا - البتہ اس میں کیا، کسی شاعر میں اتنی ہمت نہیں تھی کہ شہر کا پورا نام بھاگ نگر کہتا -

مولوی محمد اسماعیل نے محمد قلی قطب شاہ کے تینوں جانشینوں کا ذکر کیا ہے اور شہر حیدرآباد کی تعمیر توئین کے سلسلہ میں ان کے کارناموں کا بھی ذکر کیا ہے - انھوں نے لکھا ہے

اسماعیل حیدرآباد سے وابستہ اور خانوادہ سالار جنگ کے نمک خوار ہونے کے باوجود ٹیپو سلطان شہید سے غیر معمولی عقیدت رکھتے تھے اور ساری ہمدردیاں انہی سے وابستہ تھیں ۔ اس سے مولوی صاحب کی جرات مندی اور صداقت پسندی کا اندازہ ہوتا ہے ۔

جہاں تک شہر حیدرآباد کے تذکرہ کا معاملہ ہے مولوی محمد اسماعیل نے اس شہر فرخندہ بنیاد سے اپنی گہری دلچسپی اور اس کی تاریخ سے اپنے انہماک کا اظہار کیا ہے ۔ حیدرآباد کی جلوہ گری عماد سالار جنگی میں بہت واضح اور نمایاں ہے ۔

مولوی محمد اسماعیل نے ابراہیم قطب شاہ کے کارناموں کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ اس بادشاہ کا یادگار تالاب ابراہیم پٹن تالاب کنگسور وبدویل ، کالا چبوترہ گولکنڈہ ، تالاب حسین ساگر بصرف دو لاکھ ہون با اہتمام حضرت حسین شاہ ولی رحمتہ اللہ علیہ اور پل قدیم ہے تعمیر پل کی وجہہ مؤرخین نے یوں لکھی ہے کہ اس کا بیٹا محمد قلی مسماۃ بھاگمتی نام کے ایک طوائف کا عاشق تھا اور وہ موضع پخلیم جہاں شہر حیدرآباد واقع ہے رہا کرتی تھی ۔ ایک روز حسب عادت قلعہ گولکنڈہ سے نکل کر ندی پر آیا اور اس وقت ندی طغیانی پر تھی ۔ اسکو غلبہ عشق نے بے چین و بے خود کر دیا ۔ ندی میں گھوڑا ڈالدیا اور پار ہوگیا ۔ خفیہ نگار نے اس سانحہ کی اطلاع بادشاہ کو دی ۔ حکم ہوا کہ بہت جلد پل تیار ہو جائے میر تعمیر اس کی تعمیر میں متوجہ ہوا اور دوسری موسم بارش تک قریب دو لاکھ ہن کے صرف ہوئے ۔ اس میں چار ہزار باقی رہ گئے تھے ۔ حکم دیا کہ اوس کا کھانا پکاکر غریبوں کو کھلایا جائے ۔ ایک شخص نے بناء پل کے تاریخ صراط المستقیم لکھ کر بادشاہ کے نظر گزارنی تو دیکھ کر خوش ہوا اور پانچ سو اشرفیاں اس کے صلہ میں مرحمت کیا ۹۸۱ ھ عہد میں ایک پہاڑ کوہ مولا کے نام سے شہرہ ہوا اور اسی کے عہد میں بیجاپور سے تبرک نعل صاحب کا آیا اور لنگر بارہ امام تعمیر ہوا ۔ (ص ۲۵۴)

محمد قلی قطب شاہ بادشاہ کا یادگار شہر حیدرآباد ہے ۔ اور اس کی آباد ہونے کی وجہہ مؤرخین نے یوں لکھی ہے کہ بھاگمتی طوائف جو اس کی داشتہ تھی اس کا خیال تو تھا ہی حکم دیا کہ قلعہ گولکنڈہ جاہ و حشمت کے نمایاں نہیں ہے ۔ وزراء امراء دولت و ارکان سلطنت کو ، جیہ

تالیف کیا۔ اس تاریخ کا قلمی نسخہ کتب خانہ نواب سالار جنگ میں موجود ہے مولوی نصیرالدین ہاشمی نے فہرست کتب مرتب کی ہے اور کتاب نمبر تاریخ ۱۰/ ۲۳ ۸ میں اس کا ذکر شامل ہے۔ اس قلمی نسخہ میں مصنف کا نام محمد اسماعیل تاریخ تصنیف سنہ ۱۳۳۰ھ کتابت سنہ ۱۳۳۰ھ سائز ۶۲ × 1/2 ، صفحہ ۱۱۵۶ سطر ۲ ، خط نستعلیق کاغذ ولایتی مصنف سالار جنگ ثالث کے استاد تھے ، ابتدائی تعلیم نواب صاحب کو دی تھی ۔ اور خاتمہ گذر امیدہ غریب الدیار خاکسار احقر العباد محمد اسماعیل استاد اولین نواب سالار جنگ بہادر ثالث حال مدد گار مہتمم کتب خانہ مرقوم ۲۶ / ربیع الاول ۱۳۳۰ھ روز دو شنبہ ۔

مندرجہ بالا تفصیلات سے پتہ چلتا ہے کہ محمد اسماعیل صاحب نارائین کھیڑ کے متوطن تھے تلاش روزگار میں حیدرآباد پہنچے ۔ اس لئے انھوں نے خود کو حیدرآباد میں غریب الوطن اور غریب الدیار لکھا ہے ۔ یہاں انھوں نے بہر طور سالار جنگ کے دربار میں رسائی حاصل کی اور نواب میر یوسف علی خاں کے ابتدائی تعلیم کے زمانہ میں بحیثیت استاد ملازم ہوگئے ۔ اس لئے انھوں نے خود کو استاد اولین لکھا ہے ۔ اور پھر ایام آخر میں کتب خانہ سالار جنگ سے مدد گار مہتمم رہے اس زمانہ میں انھوں نے جمیع تاریخ المعروف سالار جنگی لکھی اور سالار جنگ ثالث کی خدمت میں ۲۲ / ربیع الاول سنہ ۱۳۳۰ھ میں بعد ترمیم و اضافہ کے پیش کی۔ محمد اسماعیل نے اس تاریخ کے لکھنے کی ابتداء سنہ ۱۳۲۳ھ میں کی اور ۲۳ / ماہ شعبان سنہ ۱۳۲۴ھ روز شنبہ بعرصہ ایک سال دو ماہ میں ختم کیا ۔ نظر ثانی کے بعد ۲۶ / ربیع الاول سنہ ۱۳۳۰ھ کو نواب سالار جنگ ثالث کی خدمت میں پیش کی گئی ۔ اس طرح یہ کتاب پائے تکمیل کو پہنچ کر آج دس ماہ ربیع الاول سنہ ۱۴۱۱ھ کو اپنے پورے اسی ۸۰ برس ہوگئے ۔

مولوی محمد اسماعیل نے عماد سالار جنگی میں ابتداً آنحضرت صلی اللہ علیہ و سلم کے حالات درکان دین کی فہرست اور ازدواج مطہرات کا سرسری ذکر کیا ہے ۔ سلاطین ہند ۔ سلاطین دکن خصوصاً سلاطین گولکنڈہ کی تفصیل پیش کی ہے ۔ انھوں نے حملات حیدری سے ٹیپو سلطان اور س کے حالات زندگی نقل کئے ہیں ۔ اس خصوصیت سے اندازہ ہوتا ہے کہ مولوی محمد

ڈاکٹر طیب انصاری
- گلبرگہ یونیورسٹی
گلبرگہ، کرناٹک

# حیدرآباد "عماد سالار جنگی" کے آئینہ میں

فرخندہ بنیاد، حیدرآباد روز اول ہی سے محبوب و فسوں کار رہا ہے ۔ یہاں کی سرخرو صبح دلوں کو مسحور اور سربلند، شام نگاہوں کو محو نظارہ کرتی رہی ہے ۔ شاہوں نے اس کو آباد، امراء نے شان اور مصوروں نے اپنے خون جگر سے رنگیں و پربہار کیا ۔ داستان گو نے داستانیں کہیں، افسانہ نگاروں نے افسانے لکھے اور مؤرخوں نے صفحہ دل پر اس کی تاریخ کو محفوظ و مامون کیا ۔ بھلا شعراء کیسے پیچھے رہتے ؛ جی بھر کر، جی کھول کر داد سخن دی ۔ حیدرآباد کل بھی بے مثال تھا ۔

اور آج شہر حیدرآباد کے اس جوبن اور بھبن نے چار سو برس بیت جانے کے باوجود جشن منانے پر ہمیں مجبور کیا ہے ۔

حیدرآباد کے موضوع پر جن مؤرخوں نے قلم اٹھایا ہے ان میں مولوی محمد اسماعیل بھی شامل ہیں ۔ مولوی محمد اسماعیل کے بارے میں ویسے بہت زیادہ معلومات تو ہمیں نہیں ملتے تاہم انھوں نے اپنی تصنیف "جمیع تاریخ المعروف عماد سالار جنگی" میں اپنے بارے میں یوں لکھا ہے :

" یہ احقرالعباد غریب الوطن ہیچمداں مسمی محمد اسماعیل ابن غلام محی الدین فاروقی استاد اولین عالیجناب خورشید رکاب معلی القاب سراج خاندان نواب میر یوسف علی خاں سالار جنگ بہادر الحال عمرہ دام اقبالہ و متوطن ضلع بیدر محمد آباد تعلقہ نارنین کھیڑ علاقہ پائیگاہ خاص نواب شمس الامراء امیر و کبیر بہادر یہ احقر نیاز کش کمترین عقیدت گزیں نے کہ چند کتب تاریخات کے ذریعہ سے امداد الحصول مطالب مواد پر بناء ضمیمہ حالات متفرقات رونق کا شمع شبستان کو روشن کیا کہ اپنی ذہانت و خیال پر ترجیح کیا ۔ اور یادگار حالات تر و تازہ و گرد کے جواہرات بے بہا جس میں حالات نواب سالار جنگ بہادر اور اس کتاب کا نام " جمیع تاریخ المعروف عماد سالار جنگی

ہے۔

چند اشعار ملاحظہ کیجئے:

ہر اک تیرا پلک ہے رام کا بان ہر اک سو کا ترا ہے جیوں کٹارا

(عبداللہ قطب شاہ)

درس تیرا سو دین کا دیوا لٹ تری کفر کی ہے دیوالی

(غواصی)

رنگ بھریا مجہ گھر میں آج آیا بسنت غیب تھے تازا طرب لیا یا بسنت

(غواصی)

چمن کے جھاڑ سب خوش ہو سنگل پھولاں منے تیرا سہیلا گاوتے پاتاں کے تاباں سوں بجاتا لہ

(غواصی)

سنو لوگ میری پرم کی کہانی کہ پیلا ہے رنگ عاشقی کی نشانی

(محمد قلی قطب شاہ)

(۱) مخطوطہ "ماہ نامہ" مخزونہ سالار جنگ میوزیم سے معلوم ہوتا ہیکہ ابراہیم قطب شاہ کی بیوی کا نام "بھاگ رتی" تھا (مدیر)

ملاحظہ ہوں ۔

موہن مدن متی نے بنی ہے پھول مالا
یا چاند کے گلے میں حلقہ ہوا ہے پالہ
لٹ بیل ہے بنفشہ آنکھو پر اک نرگس
مکہ پھول سیونتی کا رخسار جیوں ہے لالا
صدقے بنی کے بھایا عبداللہ شہ کے من کوں
تیرا یو ناز غمزہ ، تیرا یو چھند چالا

قطب شاہی عہد کے دیگر غزل گو شاعروں میں احمد ، سالک ، غواصی ، طبعی ، ابن نشاطی اور شاہ ابوالحسن کے نام ملتے ہیں ۔ ان شعرانے قطب شاہی دور میں غزل کی روایت کو آگے بڑھانے میں محمد قلی یا غواصی کی طرح اہم کردار انجام نہیں دیا بلکہ دیگر اصناف شعر کے ساتھ ساتھ انکا دکا غزلیں بھی اپنی یادگار چھوڑی ہیں ۔

بحیثیت مجموعی قطب شاہی عہد اردو کی نشوونما اور ارتقاء کے سلسلہ میں غیر معمولی اہمیت کا حامل ہے ۔ اس دور کے دو عظیم المرتبت صاحب دیوان شعراء ملک الشعراء غواصی اور محمد قلی قطب شاہ غزل کی تاریخ میں سنگ میل کی حیثیت رکھتے ہیں ۔ غزل میں ہندوستانی ماحول کی ترجمانی اور مقامی روایات اور رجحانات کی عکاسی اس دور کے شعراء کا اہم کارنامہ ہے ۔ اردو شاعری کے بارے میں عام طور سے یہ اعتراض کیا جاتا ہے کہ یہ ہندی نژاد ہونے کے باوجود ہندوستانی رنگ و روپ سے کوئی علاقہ نہیں رکھتی ۔ اس کے سارے قدوخال ایرانی ہیں ۔ اس کی نہروں میں دجلہ و فرات کی روانی ہے ۔ اس کی بہاریں لالہ وگل کھلاتی ہیں ۔ اس کے باغوں میں قمری و بلبل نغمہ سنجی کرتے ہیں غرض اس کی تمثیلات تشبیہات اور تلمیحات اور شاعری کے تمام عناصر عجمی ہیں ۔ یہ خیال سنہ ۱۷۰۰ء کے بعد شمالی ہند میں نشوونما پانے والی شاعری کی حدتک درست معلوم ہوتا ہے لیکن قطب شاہی عہد یا دبستان دکن کی شاعری پر اس کا انطباق نہیں ہو سکتا ہو کہ دکنی شاعری میں ہندوستانی ماحول اور ہندوستانی فضاء کی بھر پور ترجمانی ملتی

دل میں اک بات ہے کسے نہ کہوں　　کہ پھیٹے گی دو بات یاں واں پڑ

اے سجن تجھ کوں یاد کر پل پل　　رووں اپس میں ایچ میں ڈھل ڈھل

غواصی کو اپنی بلندی فکر اور شاعرانہ کمال کا شدید احساس تھا، وہ اپنے پیش رو یا ہم عصر شعرا میں کسی کو کاپنا مد مقابل نہیں سمجھتا تھا ۔ واقعہ یہ ہے کہ غواصی نہ صرف دبستان دکن کا ایک بلند پایہ غزل گو ہے ۔ بلکہ جدید غزل گو شعرا مومن ، حسرت ، جگر اور فراق سے بہت قریب نظر آتا ہے ۔ اس کے کلام میں بیسیوں اشعار موجود ہیں جن میں اس نے اپنی شاعرانہ صلاحیتوں اور زمانہ کی قدر نے شناسی کی طرف اشارہ کیا ہے ۔ وہ ایک بڑے فن کار کی طرح اپنے ہم عصروں سے اپنے فن کی داد چاہتا ہے درج ذیل اشعار محض شاعرانہ تعلی نہیں معلوم ہوتے ۔

غواصی جو ہیراں جوتی تولی دھرتا جنوں میں آ
کہاں دو جوہری پارک جو پرکھے جوہراں میرے
جگری عارف کے صاحب بچے ہیں سوکتے ہیں یوں
کہ یاں تو کوئی نہیں قدست غواصی کے قرینے کا

مملکت گولکنڈہ کا ساتواں تاجدار سلطان عبداللہ قطب شاہ ، اپنے نانا محمد قلی قطب شاہ کی طرح علم و ہنر کا قدردان ، فنون لطیفہ کا مداح اور دکنی اردو کا ایک خوش گو شاعر بھی تھا ۔ عبداللہ قطب شاہ کا مکمل دیوان ہنوز منظر عام پر نہیں آیا ۔ موجودہ صورت میں اس کا دیوان ۱۱۸ صفحات پر مشتمل ہے ۔ جس میں صرف ردیف " ث " تک ۹۷ غزلیں اور ایک مرثیہ شامل ہے سادگی و پرکاری عبداللہ کی غزل کی اولین خصوصیت ہے، اس نے اپنے مشاہدات اور تجربات زندگی کو سیدھے سادے الفاظ اور رواں پیرایہ بیان میں پیش کرنے کی کوشش کی ہے ۔ اس کی غزلوں میں محمد قلی کی سی شگفتگی اور رعنائی ہے اور نہ غواصی کی طرح تجربہ کی تہہ داری اور جذبات کی گہرائی لیکن سراپا نگاری اور محبوب کے حسن و جمال، قدوقامت ، رفتار و گفتار ، لب و رخسار اور رخسارو چشم کی تعریف و توصیف عبداللہ کی غزل کے خاص موضوعات ہیں ۔ چند شعر

نبی صدقے بسنت کھیلے قطب شاہ رنگیلا ہو رہیا تر لوک سارا

ملک الشعراء غواصی قطب شاہی دور کا ایک عظیم المرتبت غزل گو شاعر ہے ۔ غواصی کی تین مثنویوں بداست ونتی ، سیف الملوک و بدیع الجمال اور طوطی نامہ کے علاوہ غزلوں، قصیدوں اور رباعیوں پر مشتمل ایک دیوان بھی منظر عام پر آیا ہے ۔ موجودہ معلومات کی روشنی میں وہ ایک باکمال غزل گو ، بلند پایہ مثنوی نگار ، کامیاب قصیدہ گو اور بے مثال رباعی نگار کی حیثیت سے سامنے آتا ہے ۔ جہاں تک غزل گوئی کا تعلق ہے غواصی دبستان دکن کا سب سے بڑا شاعر ہے ۔ غزل کے میدان میں قطب شاہی دور کا کوئی شاعر اس کے مرتبے کو پہنچتا ہے اور نہ عادل شاہی دور کا کوئی شاعر اس کا مقابلہ کر سکتا ہے ۔ اس کے کلام میں بھرتی کے شعر یا ایسے اشعار بہت کم نظر آتے ہیں جن میں گہرا تاثر نہیں پایا جاتا ۔

دکن کے دوسرے شاعروں کی طرح غواصی کے کلام کی نمایاں خصوصیت اظہار بیان کی سادگی اور حقیقت پسندی ہے لیکن جو چیز اس کو دکنی شعرا میں منفرد مقام بخشتی ہے اور اردو کے صف اول کے شعرا میں لاکھڑا کرتی ہے وہ تاثر کی فراوانی ، سوزوگداز ، گھلاوٹ اور شعریت ہے ۔ غواصی کو زبان وبیان پر بے پناہ قدرت حاصل ہے ۔ اس کے انداز میں اعتدال ، ٹھہراؤ اور توازن نظر آتا ہے ۔ اس کا لہجہ مدھم ، دل نشین اور اپنے معاصرین یا متقدمین سے مختلف ہے ۔ غواصی دکنی غزل کے لئے ایک نئے اسکول کا بانی ہے جس کے طرز سخن کی بعد کے بلند پایہ شاعروں خصوصاً ولی نے پیروی کی ہے ۔

غواصی کی شاعری بنیادی طور پر جذبات اور احساسات کی شاعری ہے ۔ محسوسات کی موثر ترجمانی اور قلبی واردات کی فن کارانہ عکاسی کی وجہ سے اس کی غزلیں غنائیت کے کیف وسرور میں ڈوبی ہوئی معلوم ہوتی ہیں ۔ یہی سبب ہے کہ باوجود انتہائی سادگی کے کلام میں بلا کا اثر ہے ۔ وہ پر درد سروں کو غزل کے ساز پر کچھ اس طرح چھیڑتا ہے کہ سننے والا بھی اپنے دل کے تاروں میں ارتعاش محسوس کرتا ہے :

دل کی دیوانگی نہیں جاتی پھونکتا ہوں جتا دھایاں پڑ

تنوع کا تعلق ہے محمد قلی نہ صرف دبستان گولکنڈہ بلکہ دبستان دکن کا سب سے بڑا شاعر قرار پاتا ہے ۔ غزل کے لئے جس داخلی کیفیت اور خارجی ماحول کی ضرورت ہوتی ہے وہ محمد قلی کو میسر تھا شاید اس لئے غزل اس کی محبوب صنف سخن بن گئی یہاں تک کہ اس کی وہ تخلیقات بھی جنھیں ڈاکٹر زور نے نظموں کے عنوان دیئے ہیں دراصل مختلف موضوعات کے تحت کہی ہوئی مسلسل اور مربوط غزلیں ہی ہیں ۔ (تصویر نمبر ۱۵)

محمد قلی کی غزلوں میں سوزوگداز ہے اور نہ فکر کی گہرائی ، درد غم کے عناصر کی فراوانی ہے اور نہ قنوطیت ، اس نے اپنی زندگی کی بہاریں عیش و نشاط اور راگ رنگ میں گزاریں اس لئے اس کے کلام میں رنگینی ورعنائی ہے ۔ تازگی و شگفتگی ہے ۔ سیرابی و سرمستی ہے ۔ چونکہ وہ ایک عظیم الشان سلطنت کا مطلق العنان بادشاہ تھا اس لئے اس کی تمناؤں اور آرزوؤں کے آسودہ نہ ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ۔ محمد قلی کا تصور محبوب اردو شاعری میں ایک منفرد حیثیت کا حامل ہے ۔ یہ محبوب تصوری یا خیالی پیکر نہیں بلکہ اسی عالم رنگ و بو میں رہنے بسنے والا گوشت پوست کا انسان ہے جسے وہ سہیلی ، سودھن ، سندری ، نھنی سانولی ، پیاری ، چھیلی وغیرہ ناموں سے یاد کرتا ہے ۔

محمد قلی ہندوستانیت کا بہت بڑا پرستار ہے ۔ اس کی رگ و پے میں ہندوستانی تہذیب سرائیت کر گئی ہے ۔ وہ ایک تلنگی عورت ' بھاگیہ وتی ' (۱) کے بطن سے تھا ، اتحادپسندی اور رواداری اسے اپنے ورثے میں ملی تھی ۔ اسے ہندوستانی مزاج سے وہی مناسبت تھی جو امیر خسرو یا اکبراعظم کو حاصل تھی ۔ اس نے اسلامی عیدوں کے ساتھ ساتھ ، بسنت ، نوروز ، آمد برسات ( مرگ ) دیوالی وغیرہ خالص ہندوستانی تہواروں کو بھی ایک بین قومی تقریب کی حیثیت سے رائج ۔ اس کا کلام اس کے ماحول اور اس کی رنگا رنگ طبیعت کا آئینہ دار ہے ۔ چند شعر ملاحظہ کیجئے

بسنت کھیلیں عشق کی آپیارا　　تمہیں ہیں چاند میں ہوں جوں ستارا
بسنت کھیلیں بمن ہور ساجنا یوں　　کہ آسماں رنگ شفق پایا ہے سارا

تارے کتے نیناں کوں تجہ ، تاریاں میں مستی تو نہیں
شب بولتے تجہ زلف کوں ، شب میانے اتنی تارکاں
جانا ہے جیو پیارے ملک بیگ آکرم کر
تجہ درس دیکھنے کوں انکھیاں میں دم رکھیا ہوں

وجہی کی پندرہ غزلوں میں سے چھ ریختیاں ہیں جن میں صنف نازک کے جذبات ، احساسات اور کیفیات عشق کی ترجمانی کی گئی ہے - ریختیوں میں ایک ہندوستانی شوہر پرست عورت کے جذبات کو بےنقاب کیا گیا ہے - یہ ایک ایسی عورت ہے جس کی تمناؤں اور آرزوں مرکز اس کا " پیو " ہے جس پر وہ اپنا سب کچھ نچھاور کر دینا عین زندگی سمجھتی ہے اور صرف ایک ہی کی ہوکر رہنا چاہتی ہے :

یکتائش سہیلی مرنا ، دل دوجے پر نا دھرنا
اس پیو کوں اپنا کرنا اس پاپی جیوکوں کھوئے کر
پیو اپنے کوں ملک آج میں نس سپنے دیکھی سوے کر
جب پیو چلاسٹ بیچ مجہ تب سوتی اٹھی روئے کر

مملکت گولکنڈہ کا پانچواں فرماں روا سلطان محمد قلی قطب شاہ نہ صرف ایک عظیم الشان سلطنت کا رعایا پرور حکمراں ، دکنی تہذیب و تمدن کا معمار اور فن تعمیر اور رقص و موسیقی کا دل دادہ تھا بلکہ اردو کا پہلا صاحب دیوان شاعر بھی تھا - محمد قلی نے کم و بیش تمام اصناف سخن میں طبع آزمائی کی ہے - اس کے کلیات میں حمد ، نعت ، منقبت ، عید میلاد ، شب معراج ، شب برات ، عید رمضان - بقرعید ، عید غدیر ، جلوہ ، سالگرہ ، برسات ، محلات شاہی وغیرہ موضوعات پر مسلسل غزلیں ، ریختیاں ، قصیدے ، رباعیاں ، مرثیے اور ایک ناتمام مختصر مثنوی بھی شامل ہے - رباعیوں اور مثنویوں کو چھوڑ کر اس کا تمام کلام غزل کے فارم میں ہے - محمد قلی نے صنف غزل پر سب سے پہلے باقاعدہ طور پر توجہ کی ہے - جہاں تک غزلوں کی تعداد اور موضوعات کے

قطب الدین قادری فیروز بیدر کا متوطن تھا اور بہمنی سلطنت کے آخری زمانے میں اپنے مرشد حضرت مخدوم جی شیخ محمد ابراہیم (متوفی ۱۵۶۴ء) کی ایماء پر گولکنڈہ چلاآیا تھا۔ اس کی ایک مختصر مثنوی کے علاوہ دو تین غزلیں دستیاب ہوئیں ہیں۔ محمد قلی کے علاوہ ابن نشاطی اور وجہی نے فیروز کو استاد سخن کی حیثیت سے یاد کیا ہے۔

فیروز کے مقابلے میں محمود کا نسبتاً زیادہ کلام دستیاب ہوا ہے۔ ڈاکٹر جمیل جالبی کا بیان ہے کہ اس نے اردو کے علاوہ پنجابی اور افغانی میں بھی شعر کہے ہیں لیکن اس کی شہرت کا دارومدار صرف اردو شاعری پر ہے۔ محمود نے غزل کے علاوہ ڈھولنا، کبت، قصہ اور دوہرے بھی کہے ہیں لیکن اس کے کلام کا بیشتر حصہ غزلوں پر مشتمل ہے۔

محمود طبعاً ایک غزل گو شاعر ہے۔ اس کی غزلوں کا نمایاں وصف برجستگی، سادگی اور موسیقیت ہے۔ اس کے کلام میں سادگی و پرکاری کے ساتھ ساتھ حقیقت پسندی، تاثر کی فراوانی اور سوز و گداز کا حسین امتزاج بھی نظر آتا ہے۔ اس کی غزل "گفتگو بہ زنان" کے موضوعات تک محدود نہیں بلکہ مختلف مسائل حیات اور زندگی کے گوناگوں مشاہدات اور تجربات کی ترجمانی بھی کرتی ہے۔

ملک الشعراء اسد اللہ وجہی قطب شاہی دور کا ایک عظیم المرتبت شاعر اور ادیب ہے۔ مثنوی قطب مشتری "سب رس" اور فارسی دیوان کے علاوہ دکنی اردو میں اس کی پندرہ غزلیں بھی دستیاب ہوئی ہیں۔ اس کی نو دریافت غزلوں کے مطالعہ سے اندازہ ہوتا ہے کہ وہ قدیم اردو کا ایک پختہ مشق اور قادرالکلام غزل گو بھی تھا اور اس نے فارسی کے ساتھ اردو میں بھی کئی دیوان اپنی یادگار چھوڑا ہوگا جو دست برد زمانہ کی وجہ سے ہم تک نہیں پہنچ سکا۔ وجہی کی غزلیں اس دور کے دیگر غزل گو شعرا کے مقابلے میں زیادہ رواں اور پر اثر معلوم ہوتی ہیں۔ چند شعر ملاحظہ ہوں

ہے دل میں تیرا عشق لئی کیوں کر سرے گا دیکھنا
کو لگ مجے عالم منے رسوا کرے گا دیکھنا

ڈاکٹر محمد علی اثر
ریڈر شعبہ اردو
عثمانیہ یونیورسٹی، حیدرآباد۔

# قطب شاہی دور میں اردو غزل کا نشو نما

اردو ادب کے دکنی دور میں مثنوی کی صنف تمام اصناف شاعری پر مسلط نظر آتی ہے۔ لیکن فارسی شاعری کے اتباع میں قدیم دکنی شعرا نے مثنوی کے ساتھ ساتھ عروس غزل کو بھی سنوارنے کی کوشش کی ہے۔ بہمنی دور کے شاعر نظامی بیدری کی مثنوی "کدم راؤ پدم راؤ" اردو کی پہلی تصنیف ہے۔ اور پھر نظامی کے معاصرین میں مشتاق، لطفی، اور قریشی کے نام ملتے ہیں جن کی غزلیں اردو شاعری کے قدیم ترین دور سے تعلق رکھتی ہیں۔

جہاں تک قطب شاہی عہد میں اردو غزل کی نشونما کا تعلق ہے اس دور میں صنف غزل کو مقبولیت اور ہر دل عزیزی حاصل ہوئی اور ایک سے زائد صاحب دیوان غزل گو شعراء پیدا ہوئے۔ دبستان گولکنڈہ کے اولین غزل گو شعراء فیروز، محمود اور خیالی ابراہیم قطب شاہ کے دور سے متعلق ہیں۔ خیالی کی صرف ایک غزل دستیاب ہوئی ہے۔ اس لئے اس کے رنگ تغزل کے بارے میں کوئی رائے قائم کرنا دشوار ہے۔ البتہ فیروز اور محمود کی نو دریافت غزلوں سے یہ اندازہ لگانا دشوار نہیں کہ یہ دونوں شعرا اپنے عہد کے اساتذہ سخن اور باکمال غزل گو بھی تھے۔ محمد قلی قطب شاہ اپنے کلام میں فیروز اور محمود کی سی روانی اور جدت طرازی کو دیکھ کر کہہ اٹھتا ہے کہ "اگر فیروز اور محمود میرے کلام کو دیکھتے تو کوئی تعجب نہیں کہ ظہیر فاریابی اور انوری کی طرح وہ بھی بے ہوش ہوجاتے:

اگر فیروز ہور محمود بے ہوش ہوتیں عجب کیا ہے
ہوئے مجہ وصف نا کر سک ظہیر ہور انوری بے ہوش



← مصنف نے یہ بتلایا ہے کہ اسکے مخطوطات کتب خانہ ، جامعہ ، عثمانیہ میں ہیں ۔ (مدیر)

دستور نہ تھا۔ کوچ کے دوران سواری بہ کمال آہستگی رواں ہوتی اور بجز آواز نقیب اور گھوڑوں کے ٹاپوں کی آواز کے اور کوئی شوروغل سنائی نہ دیتا تھا۔ اور راستہ کے گردوغبار سے لباس جو گرد آلود ہوتا تھا اس کو مقام پر پہونچنے کے بعد کہتے تھے کہ " یہہ حکومت کی گرد ہے اور ہم نے دعاؤں کے ذریعہ حاصل کی ہے۔ اور یہہ گردان اولیاء کے نعلین کی ہے کہ جس کے باعث ہماری حکومت قائم و دائم ہے۔ فقرائے صاحب باطن بعض آشکارا اور بعض مخفی لشکر میں قیام رکھتے ہیں اور یہہ ہر مشکل میں میری رہنمائی اور مدد کے لئیے کوشاں رہتے ہیں۔ اپنے منصبداروں امیروں وغیرہ کو تاکید تھی کہ میری خوشنودی کی خاطر کوئی ایسا کام انجام نہ دیں جس سے رعایا مصیبت میں گرفتار ہو، اور اس کو شر خواہی تصور کریں۔ شر خواہی یہہ ہے کہ شر دوجہاں چاہے کہتے تھے کہ ملک و دولت دو لشکروں کی اعانت اور مدد سے زندہ و پائندہ ہے۔ ایک لشکر دعا و دوم لشکر دغاء ۔ لشکر دعا ہمیشہ مظفر ہے۔ اس لشکر کی وجہہ سے کسی بھی جگہ ہزیمت نہیں اٹھانی پڑتی ۔ اور اہل علم و فضل کی قدردانی اور عزت نفس کا بہت خیال رکھتے تھے۔ آصف جاہ تقریب عید کے موقع پر اکثر مشائخ کے گھر جایا کرتے تھے۔

دیوان دکن بخشی دکن اور میر آتش کے دفاتر کا نام لال کچہری تھا اور ابتداء میں اس دفتر کے کاغذ بھی سرخ ہوا کرتے تھے اور اسم نویسی منصبدار سرخ کاغذ پر زرفشاں تحریر ہوا کرتی تھی۔

ضابطہ دربار آصفی تھا کہ ہفتہ میں دوروز، تعطیل ہوا کرتی تھی۔ سہ شنبہ و جمعہ اور باقی تمام دن مردم ہر روز دیوان خانہ میں حاضر ہوتے اور بہ وقت دوپہر واپس لوٹتے تھے اور سہ پہر اشخاص مخصوص دربار میں آتے تھے۔

آصف جاہ کا خیال تھا کہ " شب محمود نیست " کیونکہ ہم نے آزمایا ہے کہ رات میں طئے شدہ کام اور فیصلے فائدہ مند نہیں ہوئے۔ اور کام میں ترقی نہیں ہوتی " جعل اللیل لباساً وجعل النھار معاشاً " منسرام کا بیان ہے کہ نواب شہید نے اس طریقہ کو تبدیل کرکے دربار شب مقرر فرمایا کیا فائدہ پایا۔

(۱) شعبہ مطبوعات ، سالار جنگ میوزیم میں اس کتاب کے کئی نسخے موجود ہیں مثلاً تاریخ فارسی ۵۳۶ مگر فاضل ←

درحضور آصف جاہ کسی اور کو لفظ نواب سے مخاطب نہیں کرتے تھے اور خطوط میں بھی لفظ نواب سے مخاطبت سے احتراز کرتے تھے۔ اس زمانے میں عمدہ ترین القاب خاں صاحب اور رائے صاحب تھے اور عام لوگوں کو میر، مرزا، لال ولی وغیرہ سے مخاطب کرتے تھے۔ اہل ہنود رسم ایام نشاط مثلاً ہولی، دیوالی اور اہل اسلام محرم و رسم عید کی تقریبات تین دن سے زیادہ مناتے تھے وکالت پیشہ عام طور پر برہمن ہوا کرتے تھے۔ اور دفتری کام کے لئے کائیستھ و کھتری ہوتے تھے۔

کوئی شخص اوقافی جائداد میں مفت رہائش اختیار نہیں کرسکتا تھا بلکہ کرایہ ادا کرتا وہ روپیہ بیت المال میں جمع ہوتا اور مساکین و غرباء کو دیا جاتا تھا۔

ایک شخص کو دو تعلقے عطا نہیں ہوتے تھے اور کہتے تھے کہ تعلقات کی منصفانہ تقسیم سے لوگوں کو روزی میسر آتی ہے اور ان کے رزق میں توسیع ہوتی ہے۔ عمدہ تعلقہ جات پر اپنے رشتہ داروں کو مامور کرتے تھے اور کہتے تھے کہ اول خویش بعد درویش اور تعلقہ پر رخصت کے وقت ان کو تاکید کی جاتی تھی کہ کوئی ایسا کام نہ کریں کہ خدا اور خلق سے شرمندہ ہوں۔

خواص میں صرف چار اشخاص کو باریابی کی اجازت تھی۔ اول دیوان خانہ، دوم منشی، سوم داروغہ ہرکارہ، چہارم عرض بیگی۔ اور ان چاروں عہدوں پر جامع الکمل کا انتخاب کرتے تھے۔

آصف جاہ اول کو موسوی خاں کی جدائی کبھی منظور نہ تھی کہتے تھے کہ "درتمام عمر یک ابوالفضل بہم رسانیدہ ام۔"

سپاہی، منصدی اور رعایا کی فلاح و بہبود کے لئے ہر دم کوشاں رہتے تھے۔ لشکر کا کوچ زیادہ از چہار پنج گروہ نہ ہوتا تھا اور ایک کوچ کے بعد دو مقام اور اگر کارہم درپیش ہوتی تو دو کوچ پر ایک مقام عمل میں آتا تھا۔ اور میر امتامان، ہراول میمنہ و میسرہ کو تاکید تھی کہ کوچ کے دوران رعایا کی جائیداد و املاک کا نقصان نہ ہونے پائے اور معمول سے زیادہ کے حصول کی خاطر رعایا کی تکلیف اور مصیبت کا باعث نہ بنیں اور نذر سواری وغیرہ جس کا آج کل معمول ہے طریقہ و

محصول کی ادائی سے ساقط الذمہ ہے۔ ورنہ سوداگر عاجز آجاتے ہیں اور مال لانے سے کتراتے ہیں اور مال کی قیمت میں اضافہ اپنے نفع اور محصول کی ادائی کے لئے اضافہ کرتے ہیں۔ اس طرح مال کی قیمت گراں ہوجاتی اور یہہ غرباء کے حق میں دشواری کا باعث بنتا۔

ضابطہ بادشاہی تھا کہ وکیل ہر جگہ منصبداروں کو بے تغلب متصدی نقدی حاصل کرتے تھے۔ منصبداری کی جانب سے طلب کے لئے خدمتگار کی حاجت نہ تھی۔ اور جوانان چوکی کو ہردو وقت سرکار کی جانب سے طعام پہونچتا تھا۔

وکالت پیشہ کچہری میں حاضر رہتے اور اپنے موکلوں کی عرضی پیش آنے کے وقت روبرو آتے اور چہار وکیل خاص بادشاہ کے حضور میں حاضر رہتے۔ چوبداران و قراولان اہل طرب کو تاکید تھی کہ تلوار اپنے ساتھ نہ رکھیں لکڑی اپنے ہاتھ میں رکھیں۔

دربار میں حاضرین بادشاہ کی موجودگی میں ایک دوسرے کو سلام نہیں کرتے اور صرف درباری ملاقات پر اکتفا کرتے تھے۔ اور سوائے تقریب شادی ، غمی و عیدین ایک دوسرے سے ملاقات نہ کرتے تھے۔ عامل معزول کے لئے لازم تھا کہ متصدیاں دربار سے رجوع ہو اور محاسبہ ادا کر کے فارغ خطی معہ مہر دیوان حاصل کرے۔

زر تحصیل اکثر ہنڈویات کی صورت میں پہونچتا تھا اور کوتوال کو تاکید تھی کہ اجنبیوں کے شہر میں داخلے پر کڑی نظر رکھی جائے اور اگر کوئی داخل ہونا چاہے تو اہل حرفہ کی ضمانت لی جائے اور اس کے بغیر داخلہ ممکن نہ تھا۔ کیونکہ خدشہ رہتا تھا کہ کہیں کوئی چور داخل ہوجائے۔

بازار میں غلہ کے نرخ ہر ہفتہ نرخ نویس مقرر کرتا اور اس پر کڑی نظر رکھی جاتی تھی کہ وزن یا فروخت میں تفاوت نہ ہو اور جو کبھی تفاوت کا پتہ ہرکارۂ اخبار سے چلتا تو اس چودھری کی دکان تاراج کردی جاتی تھی۔

آصف جاہ نے ملزم کے لئے قتل کا پروانہ جاری نہ کیا اور اگر کبھی واجب القتل مجرم گرفتار ہوتا تو قاضی کے سپرد کرتے تھے اور آہستہ سے قاضی بلدہ سے کہتے تھے کہ اس امر میں حیلہ شرعی سے اسکی جان بچائی جائے تو بہتر ہے۔

کاغذات خیرات منسارام کے تفویض تھے اور دستخط کے بعد وہ کاغذات دیوان دکن اور پھر منشی الممالک اور میرآتش کی دستخط کے بعد دفترشاہی میں داخل کیئے جاتے تھے ، اور پھر میر ضیاء الدین حسین خاں صدر کے پاس پیش کیئے جاتے اور اس ترتیب ضابطہ کی شدت سے عمل پیرائی کی جاتی تھی۔ جسکی ایک مثال پیش ہے۔

ایک روز میر ضیاء الدین حسین خاں صدر نے قریب وقت برخاست دربار بسم اللہ شاہ کے یومیہ کے سلسلہ میں آصف جاہ کی تاکید کے سبب منسارام کی غیر موجودگی کی بناء پر خود لکھ کر ملاحظہ کے لئے پیش کیا۔ درخواست پر نظر پڑتے ہی فرمایاکہ کس شخص نے لکھا ہے جواب دیا غلام نے کہا ہے پوچھا پیشکار کہاں ہے۔ ضیاء الدین حسین خاں نے عرض کیا چونکہ گرسنہ تھا اس لئے غلام کی اجازت سے گھر روانہ ہوا ہے فرمایاکہ اس کے گھر بھیج کر فرد لکھواکر منگوائی جائے کیونکہ اس طرح گم شدگی کا احتمال رہتا ہے اور جب ہم اس کے بارے میں سوال کریں گے وہ ناوانستگی کی بناء پر جواب نہ دے گا۔ اس طرح سررشتہ ، دفتر کہاں باقی رہیگا۔ اسی اثناء میں منسارام حاضر دربار ہوئے اور وہ فرد جو ایک سطر سے زیادہ نہ تھی لکھ کر حضور میں پیش کی۔ کہا کہ جب پیش کار کا کام تم انجام دوگے لازم ہے کہ کارِ شما پیشکار انجام دے گا۔ آئندہ احتیاط لازم ہے بقول کہ " کار خود کن کار بیگانہ مکن "

دربار آصفی میں سب سے پہلے مثل دعاگو یاں ، خیرات ہرروز حضور میں گذاری جاتی تھی۔ اس کے علاوہ ضرورت مندوں کو بہ قدر احتیاج لڑکی کی شادی ، روانگی حج اور تحصیل علم کے لئے نقدی عنایت کی جاتی تھی۔ اور کم سے کم ہردربار میں تیس چالیس ہزار روپیہ اربابِ استحقاق کو عطا کیا جاتا۔ اور یہہ رقم یومیہ اور انعام سے سوا ہوتی تھی۔

دور آصفجاہی میں دستور تھا کہ سوداگر ایک جگہ محصول ادا کرتا اور اس کی رسید حاصل کرتا اور اس کے بعد اسکو شہر میں کسی بھی جگہ داخلہ پر مزاحمت پیش نہ آتی تھی۔ اور اگر ایک جگہ شہر میں مال فروخت نہ کرپاتا تو دوسری جگہ لے جاتا تھا۔ وہاں اس سے نصف محصول وصول کیا جاتا تھا۔ یہہ اس لئے کہ جب ایک جگہ محصول ادا کردیا جاتا ہے ہر جگہ وہ عمل شاہی میں

کی آواز سنی اسی وقت کھانے سے ہاتھ کھینچ لیا اور ماما تپل اصیل سے کہا کہ شمع اٹھائے تاکہ باہر جاؤں دستک کی آواز ازدست غیر معلوم ہوتی ہے۔ شاید کوئی ضروری امر ہے۔ اسی وقت خبر جاننے کے لئے دیوڑھی پر پہونچے دیکھا کہ ہرکارہ کھڑا ہے اس سے آنے کی غرض و غایت پوچھی عرض کیا از لشکر باپو نایک آیا ہوں۔ کہا کہ وہ کہاں ہے ہرکارہ نے جگہ کا نام لیا کہا وہ مکان اس جگہ سے پنجاہ گروہ فاصلہ پر ہے تو کب روانہ ہوا۔ جواب دیا آج شش پاس پہراس جگہ سے نکلا ہوں، اور اس کا لشکر پرسوں اس جگہ پہونچے گا۔ اس کے ارادے خطرناک ہیں۔ آصف جاہ نے کہا کہ امکان نہیں ہے کہ تونے پنجاہ گروہ مسافت اس عرصہ میں طے کی۔ کہا علی الصبح اس جگہ سے نکل کر صبا رفتاری سے آیا ہوں اور میری خبر میں کوئی اختلاف نہیں ہے۔ کہا وہ مکان سواری شاہراہ کے تمام طارزار ہے کہ ایک شخص دشواری سے گزر سکتا ہے وہ راستہ اس جگہ سے تیس گروہ ہے شاید تو اسی راستے سے آیا ہے جواب دیا درست فرمایا۔ اسی وقت اس ہرکارہ کو دس روپیہ انعام دیا اور فرمایا اپنے داروغہ سے کہو کہ میں اس جگہ جلوس کرتا ہوں اور کسی ہرکارہ سے کہہ کر منشی کو میرے پاس بھیجے۔ فی الفور داروغہ اور منشی حاضر ہوئے۔ اور جابجا لوگوں کے لئے احکام جاری کیئے کہ جلد بہ جلد اس جگہ حاضر ہوں اور لفافوں پر مہر اپنے جیب خاص سے نکال کر ثبت کی۔ جسے بعد میں داروغہ نے ہرکارہ کے سپرد کی۔ اس طرح ہر وقت کی چوکسی سے خطرہ ٹل گیا۔ پھر فرمایا کہ ایک غریب ہرکارہ نے ہمکو غفلت سے آگاہ کیا ورنہ معاملہ اچھا نہ تھا۔ منسارام نے یہ واقعہ ماما تپل اصیل سے سنا اور پھر ترک ہرکارہ سے تحقیق کی پھر بعد میں سالار جنگ درگاہ قلی خان سے ملاقات پر اس واقعہ کی تصدیق کی۔ کیونکہ اس زمانہ میں چھاونی کو بلکنڈہ سے منسارام رخصت حاصل کرکے اورنگ آباد گئے تھے۔

بارگاہ آصفی میں سوائے پانچ چھ افراد خاص کر کسی کو بھی داخلہ کا پروانہ حاصل نہ تھا۔ اور جلسہ عام زائد از چہار گھڑی و کم تراز دو گھڑی نہ ہوتا تھا۔ دفتر کھولنے اور بند کرنے کے اوقات مقرر تھے، اور کاغذات گھر پر نہیں لے جاسکتے تھے اور اہل مطلب اپنے معاملہ کے لئے صرف دربار سے سروکار رکھتے تھے۔

باریابی ممکن نہ تھی۔ اس کے بعد ہی فرد اسم نویسی تحریر کی جاتی تھی۔ تاکید تھی کہ دامن جامہ فرش پر غلطان نہ ہو اور گریبان تنگ نہ ہو اور شال کو سر پر ڈالا جائے۔ امراء اور درباریوں کے لئے جواہر پوشی صرف بہ روز عید مخصوص ہوتی تھی۔ اس کے بارے میں آصف جاہ کے الفاظ ہیں کہ جواہر پوشی ہم بہ قدر حال نہ آن کہ تمام مرصع زریں شوند۔ لباس میں جامہ سات پاٹ سے زیادہ اور نیمہ پانچ پاٹ سے زیادہ نہیں بخشتے تھے اور لباس کے بارے میں قیمت ملحوظ نظر نہ رہتی تھی بلکہ یہ لازم تھا کہ دستار از جامہ اعلیٰ و جامہ از پاجامہ اشرف باشد"

ہر نووارد جبکہ باریاب خلوت ہوتا اسے اپنے ہتھیار مشرف دیوان خانہ کے پاس رکھنے پڑتے تھے اور بہ وقت روانگی حوالہ کئے جاتے۔ کئی سپاہی یا افسر اپنا تیر وکمان، سپر و شمشیر خدمت گار کے حوالے نہ کرتے تھے بلکہ اپنے ساتھ ساتھ رکھتے تھے۔ ہر افسر کے ساتھ ایک خدمت گار برای نگاہبانی پاپوش، صراحی یا بستہ، کاغذ کے ساتھ خلوت میں داخل ہوتا لیکن بستہ اور قلمدان مشرفان اور متصدیان خدمت گار کی تحویل میں رہتے لیکن پیشکار دستگی افراد خود اپنے جیب میں رکھتے تھے۔ کوئی سپاہی بغیر حکم دولت اپنے گھوڑے کو رنگ نہیں کرسکتا تھا۔ بیمار اور ضعیف میانہ و ڈولی میں سوار ہوتے اور پالکی پر بغیر اجازت سواری نہ کرتے تھے۔

عہد آصفی میں یہ بھی دستور تھا کہ گماشتہ ہائے ساہوکار بہل ہائی چھتری چورس سوار ہوتے تھے اور بہل ہائے بنگہ دار صرف متصدی پیشکاران کے لئے مخصوص تھی اور پیشکار اور دیوان رتھ پر سواری کرتے تھے۔

آصفجاہ کے دارالانشاء میں مسودات امور عظیمہ حضور بادشاہ اور معاملات جنگ موسوی خان کے تفویض تھے اور مسودات احکام تعلق رام سنگھ منشی کے ذمہ تھے اور یہ منشی قلمدان بردار خاصہ مہر کلاں آصفجاہ کے حضور مستقل حاضر رہتے۔ ہرکارے بہ واسطہ ناںک آصفجاہ کی خدمت میں اخبار بیان کرتے تھے۔ چنانچہ ایک وقتی چھاونی کوہلکنڈہ میں ترک نامی ہرکارہ چالیس گروہ سے قریب آدمی رات کو زنانہ دیوڑھی پر پہنچا۔ اتفاق سے ناظر دیوڑھی کو خواب تھا۔ ہرکارہ مذکورنے خود دستک دی۔ آصفجاہ جو اس وقت دستر خوان پر خاصہ تناول فرمارہے تھے کہ دستک

ڈاکٹر رفیق فاطمہ
صدر شعبہ فارسی
عثمانیہ یونیورسٹی،
حیدرآباد - ۷

# قانون دربار آصف

نواب میر قمر الدین علی خاں نظام الملک آصفجاہ اول نے صوبہ دار دکن مبارز خاں کو جنگ شکر کھیڑہ میں شکست دی اور دکن میں ایک نئی آزاد و خود مختار سلطنت یعنی سلطنت آصفیہ کی ۱۱۳۷ھ م ۱۷۲۴ء بناء ڈالی۔ آصفجاہ اول نے تقریباً ربع صدی تک دکن میں حکومت کی۔ اپنے دور حکومت میں انھوں نے دکن کی ترقی اور خوشحالی کے لئے بہت زیادہ دلچسپی لی۔ اور اپنی حکومت کو مستحکم اور پائیدار بنانے کے لئے از سر نو ایسی اصلاحات کیں کہ جس کے اثرات دکن کی تہذیب و تمدن پر دیرپا ثابت ہوئے۔ انھوں نے حکومت اور دربار سے متعلق جو قوانین اور ضابطے مقرر کئے ان کو لالہ منسارام بن بھوانی داس غازی الدین خانی، نبیرۂ بالکشن عابد خانی نے جو خدمت صدارت کل پر فائز تھے ان ضوابط و قوانین کو ایک رسالہ بنام "قانون دربار آصف" سے قلم بند کردیا (۱) - اس رسالہ میں دربار میں داخلہ اور دربار کی تمام کاروائیوں کی تفصیل لکھی ہے۔ اور اس کی تفصیل حسب ذیل ہے۔

کسی نووارد کو دربار میں داخلہ پانے کے لئے فرد اسم نویسی پر مشرف دیوان خانہ کی دستخط لازم تھی۔ اور جب فرد اسم نویسی پر تاریخ اور وسطہ ملازمت کے ساتھ مشرف دیوان خانہ کی دستخط اور اجازت کے بعد دفتر میں داخل کردی جاتی تب تا مدة العمر دیوان خانہ داخلہ کے لئے کوئی مزاحمت درپیش نہ ہوتی تھی۔ دیوان خانہ میں داخلہ سے پہلے مشرف دیوان خانہ تعلیم پوشاک سے آگاہ کرتا اور دستار موافق ضابطہ سرکار اور بدش خلاف ضابطہ نہ ہو یعنی دو حصہ نہ ہو اور اس کا رنگ سرخ یا خام نہ ہو۔ اسکی تفصیل بیان کرتا ۔ کیونکہ اس پر عمل آوری کے بغیر دربار میں

(۹) کتاب خانہ سالار جنگ میوزیم حیدرآباد میں اس کے دو نسخے موجود ہیں ، نمبر تصوف فارسی ۵۵ و ۵۹ - (مرتبہ)
(۱۰) کتاب خانہ سالار جنگ میوزیم حیدرآباد میں اسکا ایک نسخہ موجود ہے۔ نمبر تصوف فارسی ۴۹ - (مرتبہ)
(۱۱) کتاب خانہ سالار جنگ میوزیم حیدرآباد میں اسکا ایک نسخہ موجود ہے۔ نمبر تصوف فارسی ۱۰۱ - (مرتبہ)

البتہ آثار خستگی سے بہت متاثر ہے۔ کل ۱۰۵۶ صفحات ہیں ہر صفحہ ۲۱ سطری ہے، بہت کم صفحات پر حواشی چڑھے ہوئے ہیں۔ بلکہ اول صفحہ سے ثابت ہوتا ہے کہ عوارف المعارف کی تین سطور کی شرح غائب ہے جو ایک دو صفحہ میں ہو سکتی ہے۔

عوارف المعارف کی ایک اور شرح مناظر اخص الخواص ہے الشیخ محب اللہ الہ آبادی مکتوبہ ۱۱۳۳ھ م ۱۷۳۰ء بھی اس ذخیرہ میں محفوظ ہے۔ یہ تصنیفات شاہ بندہ نواز کی جامع العلوم شخصیت کی ہمہ جہتی حیثیات ہیں جو کہیں ملفوظات میں جلوہ گر ہوئیں تو مریدین و طلاب کے لئے تعلیمات و تدریسات بنیں اگر مجالس میں ظہور پذیر ہوئیں تو پاس انفاس اور افکار و اشغال کے سوتے کم پھوٹے اور پیراہن کاغذ پن پر آئیں تو سی پارۂ دل بن کر آنکھوں کو نور، دل کو سرور اور روح کو پر فتوح بنادیا۔

آگیا در پہ ترے شوکت مسکین تیرا　　تو ہے پاک بندہ نواز میں نیاز آگیں
دل کی امیدیں برآئیں علم کی دولت ملے　　میں مدارج طے کروں صدقہ، صولت ملے
عشق کی تلوار دے دولت کردار دے　　خواجہ گیسودراز خواجہ بندہ نواز

حواشی:

(۱) مراۃ الاسرار - از شیخ عبدالرحمن چشتی جلد دوم ص ۳۱۹، ۱۹۸۲ء
(۲) دائرہ المعارف اسلامیہ جلد ۱۷، ص ۵۸۹
(۳) اس بارے میں اختلاف ہے (مدیر)
(۴) رئیو ص : ۲۲۷
(۵) تاریخ فرشتہ، دائرہ المعارف
(۶) حضرت گیسو دراز کے تاریخی مادے ہیں- جن سے آپ کا سال وفات برآمد ہوتا ہے " سہ سپہر ولایت بودند " دوسرا تاریخی مادہ ہے " سہ سپہر ولایت بجیں "
(۷) یہ بات یقین سے نہیں کی جاسکتی کہ سلسلہ نمبر ۹ اور ۲۳ تا ۲۵ نمبر پر دی گئی مخطوطات حضرت بندہ نواز گیسو دراز کی ہی ہوں (مدیر)
(۸) دائرہ المعارف اسلامیہ جلد ۱۷، ص ۵۸۷ ←

یہ کہا جاسکتا ہے ایک دو صفحات نہیں ہیں۔ اس لئے آخر صفحہ ۲۵۶ پر قولہ : قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا احب اللہ عبداً الخ کی بحث کی ہے۔

شاہ گیسو دراز نے انہیں کیفیات جذب و کیف سے بسط و شرح بیان فرمائی ہے ۔ یہ عوارف و معارف کی عزیز الدھر شرح ہے جو صرف اسی ادارے کی زینت ہے ، اس کی اب تک کوئی کاپی دستیاب نہیں ہو سکی ہے (۱۱)۔ انڈیا آفس کے کتب خانے میں ایک اور شرح محفوظ ہے وہ بھی کافی ضخیم ہے اور ہندوستانی صوفی عبدالقدوس بن اسمٰعیل غزنوی متوفی ۹۴۵ ھ م ۱۵۳۸ء کے رشحات قلم کا نتیجہ ہے۔

آربری نے اپنے ذخیرہ کے علاوہ اس کی دوسری کاپی کہیں نہیں دیکھی اس اعتبار سے اگر انڈیا آفس میں یہ اپنی نوعیت کی انوکھی تصنیف ہے تو اس سے کہیں پہلے کی شرح ٹونک میں محفوظ ہے۔

ہمارے نسخہ کی تقطیع کلاں ہے۔ بادامی کاغذ دولت آبادی ، دیمک خوردہ ، خط عربی قدیم ، آخر سے ناقص ہونے کی وجہ سے کاتب و کتابت کا صحیح پتہ نہیں چل سکا۔ پھر بھی روشن تحریر اور کاغذ کی ساخت پرداخت ، قلم کی روشنی ، دور ، دامن ، نشست ، کرسی ، دانگ ، سطح اور جوف کے پیمانے اس امر پر دلالت کرتے ہیں کہ اس کی کتابت دسویں صدی ہجری کے اواخر یا گیارھویں صدی ہجری کے اوائل میں ہوئی ہوگی۔ اس لئے کہ حروف کی کتابت کی بھی تاریخ ہے ہر صدی کی روش اور ہر صدی کے اعتبارات و خصوصیات اپنی اپنی جگہ تاریخ لیے ہوئے ہیں۔ خط نسخ رواں ہوتے ہوئے بھی قلم کی مہارت نظر آتی ہے۔ کہیں کہیں ثلث کے آثار نمایاں ہیں۔ حائے مدور اور یائے معروف اور دوسرے حروف تو نسخ کی روش لئے ہوئے ہیں۔ پھر بھی دال ، واؤ ، ذال ، کاف وغیرہ ہم کہیں کہیں ثلث کے زیر اثر نظر آتے ہیں۔

مخطوطہ کافی شکستہ ، خستہ ، پیوند نمودہ اور آب رسیدہ ہونے کی باوجود ہنوز صاف ہے

انقباض کو انشراح، جلال کو جمال، قال کو حال، جذب کو کیف، کیف کو سرمستی، سکر کو صحو، صحو کو استغراق اور استغراق کو فیضان معرفت کا جامہ پہنادیا ہے۔ اور عوارف المعارف کی وہ نکتہ پردازیاں پیدا کردی ہیں کہ جو جزئیات و تخلیات بے حجابانہ جلوہ گر ہوکر حیرت سامانیوں میں نظر آنے لگی، جہاں حیرت سامانیاں جلوہ نمائیاں نیرنگیاں اور نیرنگیاں انوار و تجلیات بن بن کر نکھرنے لگیں اور یوں عوارف المعارف کھلنے لگے جیسے کوہساروں سے آبشار پھوٹتے ہیں یا نازک شاخوں پر سے غنچے چٹک کر اٹھتے ہیں۔

۵۷ صفحات تک متن کے موضوعات اور عنوانات لکھے ہوئے ہیں۔ اول صفحہ پر سرخی لکھی ہوئی ہے جو بغایت غور و خوص کے بعد اس طرح ہے جس سے مخطوطوں کا عنوان اور شارح کا پتہ چلتا ہے۔ پھر بھی ایک جگہ ایک دو حروف محوشدہ اس طرح شنگرفی نوشتہ ہے۔

من شرح عوارف المعارف المساۃ ۔۔۔۔ العوارف

تصنیف حضرت مخدوم سید محمد حسن گیسو دراز، عارف شاہباز، بلند پرواز قدس سرہ ۔۔۔۔
عوارف سے پہلے کوئی حرف مقطوع نظر آتا ہے ۔ اس لئے اس شرح کا نام معارف العوارف ہے۔ اصل کتاب کا نام عوارف المعارف ہے اس کی صوتی ہم آہنگی اور ترکیب مقلوبی کا لحاظ رکھتے ہوئے شارح نے اپنی شرح کا نام معارف العوارف رکھا ہوگا جو قرین قیاس ہے۔ ستاون ۵۷ صفحات تک بالترتیب' لکھ کر مواد دو متن کے بارے میں سرخیاں لکھی ہیں ان میں سے چند حسب ذیل ہیں۔

روحانیت، ابراہیم اوہم تلمیذ امام الاعظم فی ترک تعلم الفقہ، احمد بن حنبل معنی حضوری قلب عند الفقہاء، العمل بعلم الدراسۃ پھر علم الوارثہ کی بحث کی ہے۔ طریق اکتساب الحال وغیرہ وغیرہ ان صفحات کے بعد کہیں کہیں حواشی اور کاتب کے نوشتہ اشارے پائے جاتے ہیں۔ آخر سے ناقص ہے۔ اس لئے ترقیمہ وغیرہ نہیں ہے پھر بھی اصل متن سے تقابل کرنے کے بعد

کی صورت میں سناکر اصلاح بھی لی ہے۔" اس اعتبار سے یہ ملفوظات اہمیت اور ثقاہت کا درجہ رکھتے ہیں۔ اس تصنیف کی حکایتوں اور نصیحتوں میں اخلاقی اور روحانی نتائج بھی ملتے ہیں اور متوسلین و مریدین کے لئے آداب رشد و ہدایت بھی۔ اس تصنیف لطیف میں قرآن و حدیث سے استنباط کیاہے۔ اور بزرگان دین کے واقعات و حکایات، انبیاء کرام کے احوال کی روشنی میں یہ ملفوظات بیان فرمائے ہیں۔ (ملاحظہ ہو تصویر نمبر ۲)

## شرح عوارف المعارف:

حضرت صدر الدین ابوالفتح محمد شاہ باز" شاہ نواز بلند پرواز، پاکباز بندہ نواز گیسو درازؒ نے عوارف المعارف کی شرح اس شرح و بسط کے ساتھ فرمائے ہیں۔ جو ان کے تبحر شخصیت اور عالمانہ بصیرت کی رونمائی کرتی ہے۔ متن کی اس انداز سے وضاحت کی ہے کہ شرح خود اپنی جگہ مربوط و بسوط دلربائے حقائق و دقائق اور مخازن معانی و مطالب میں رونما ہوگئی ہے۔ آیات قرآنیہ اور احادیث نبویہ کی روشنی میں تصوف کے ایسے رموز و نکات بیان فرماتے ہیں۔ جس سے ایک طرف سلوک و تصوف کا ایک بیش بہا سرمایہ وضع ہوتا ہے تو دوسری طرف صوفی صافی کے لئے پند و نصائح اور مکارم اخلاق کا خزینہ جلوہ گر ہوتا ہے۔ اصل کتاب عوارف المعارف شہاب الدین ابوالحفص عمر بن عبداللہ السہروردی متوفی ۶۳۲ ھ م ۱۲۳۴ء مذھب و تصوف و سلوک پر ایک طرح کی دائرۃ المعارف ہے۔

حضرت گیسو درازؒ نے بہت تفصیل کے ساتھ بڑے حسین پیرائے میں عربی زبان میں شرح فرمائی ہے۔ اس کتاب میں توضیحات و تعلیقات اس پایہ کی ہیں کہ اگر ان کا بالاستیعاب مطالعہ کیا جائے تو ایک مرید اور ایک طالب موصوف کے اس قول کی ترجمانی کرتے ہوئے کہ " مرید کو کتب سلوک کا مطالعہ کرنا چاہیئے۔ خود طالب، شیخ کامل، سالک و عامل اور پیر طریقت بن سکتا ہے۔

روئے انور پر مودبانہ نظر رکھے۔ مرید کو پیر کے ساتھ بہت تیز اور بہت آہستہ نہیں چلنا چاہیئے۔ طالب کو سخی ہونا چاہیئے۔ اس درجہ تک مال و منال متاع و سامان جاہ و رسم و عادت، اہل و ولد و بلد سب کچھ پیر پر قربان کردے۔ مرید کو اخلاق ذمیمہ، حرص و حسد، غیظ و غضب سے پرہیز کرنا چاہیئے۔ طالب کو چاہیئے کہ جو کار خیر انجام دے اس کا اظہار کسی سے نہ کرے جو بمنزلہ ریاکاری ہے بلکہ یہ جانے کہ میں نے کچھ نہیں کیا ہے۔

شاہ بندہ نواز گیسو دراز نے ذکر نوم کے باب میں ارشاد فرمایا کہ مرید کو چاہیئے غفلت سے آرام نہ کرے بلکہ خواب و بیداری کے درمیان آرام کرے۔ آپ نے طہارت کے باب میں اس طرح ترقیم فرمایا کہ وضو اور طہارت میں اتنا مبالغہ نہ ہو کہ اوراد و وظائف پورے نہ ہوسکیں اور بیشتر وقت طہارت میں ہی ختم ہوجائے اور شاہ گیسودراز نے تزکیہ نفس کے باب میں شاندار ارشاد گرامی تحریر فرمایا ہے:

"برائے تذکیہ نفس راہیچ شرط نیست جز مخالفت نفس"

"برائے توجہ ہیچ شرط نیست جز دافع خطرات" نیز گیسودراز نے ارشاد فرمایا کہ اگر مرید ابدال کے درجہ پر فائز ہوجائے تو اس کا اظہار نہ کرے۔ مرید کو درجات عالیہ حاصل ہونے پر عام آدمی ہی تصور کرنا چاہیئے۔ مرید کی کنیزیں اور عورتیں زیادہ نہیں ہونی چاہئیں۔ مرید کی عاجزی و انکساری اور فوقیت و برتری کے اظہار کرنے کے متعلق اس طرح بیان فرمایا۔

خودرا بزبان خود ستودن رسوائی رسوائی رسوائی است
خودرا بزبان خود شکستن رعنائی رعنائی رعنائی است

جوامع الکلم: (۱۰) یہ ملفوظات نو مہینہ کی روزانہ مجالس کے اقوال و اخبار و کلم اور فصوص الحکم پر مشتمل ہیں۔ شاہ گیسودراز کے خلیفہ اور فرزند اکبر خواجہ محمد اکبر حسینی نے ۱۸/ رجب ۸۰۲ ھ سے ۲۲ ربیع الثانی ۸۰۳ ھ تک کی ان مجالس کو ترتیب دیا ہے اور روزآنہ ان ملفوظات کو شیخ

ہے۔ صاحب تحریر کا نام اور مہر منقوشہ ہے اس کی تصنیف بے بہا میں اس طرح عنوانات قائم کئے گئے ہیں۔

| | | |
|---|---|---|
| ذکر دوام وضو | ذکر مراقبہ | ذکر تہجد |
| ذکر خواب صوفیہ | ذکر ملاقات خضر | ذکر بیداری |
| ذکر تقلیل آب | ذکر طے | ذکر دوکس نخسپلد |
| ذکر نوم | ذکر صوم | ذکر اعتکاف |
| انواع اعتکاف | ذکر طعام خوردن | ذکر سما |
| آداب سماع | ذکر میزبانی | ذکر صوفیاء |
| آداب مرید باپیر | بیان شرائط طالب | بیان تذکیہ، نفس۔ |

دربیان مذہب (دیکھئے تصویر نمبر ۱)

ان مذکورہ بالا عنوانات میں سماع، آداب المریدین اور سلوک سے متعلق فقہی مسائل سے تفصیل کے ساتھ بحث کی گئی ہے۔ اور احادیث کی روشنی میں بہت سے مسائل فقہ و سلوک حل کئے گئے ہیں۔

مریدین و متوسلین کے بارے میں جو آداب و احکام جس منظر انداز میں بیان کئے گئے ہیں۔ ان میں چند اس طرح ہیں۔

گیسو دراز فرماتے ہیں :۔ مرید پیر کی رہنمائی کے بغیر منازل سلوک طے نہیں کرسکتا۔ مرید کو اپنے پیر سے کس حالت میں بھی بدگمانی و بداعتقادی نہیں رکھنا چاہئیے۔ مرید کو چاہئیے کہ خوارق عادت و کرامات کا طالب نہیں رہے۔ مرید کسی کا عیب پیر کے سامنے بیان نہ کرے اور اہل دنیا سے پرہیز کرے۔ مرید پر لازم ہے کہ سلوک کی کتابوں کا مطالعہ کرے۔

مرید جب شیخ کی خدمت میں حاضر ہو تو اپنی نظر پشت یا سینہ پر رکھے یا شیخ کے مبارک

شاہ کمال

قہرہ لطفہ ، لطفہ قہرہ

لا تجلی فی صورہ مرتین

• تجلی کی تکرار نہیں حقیقت کو تبدل نہیں •

شاہ کمال

الواحد فی الواحد

با این ہمہ صورت دوئی باقی است

اسمارالاسرار

دو ذات ایک وجود

دو چیز برائے سالکین لازم است

تزکیہ نفس و توجہ نام

( مراد انہماک و مواظبت)

شغلی ارہ تجلی جلالی است

شغل ارہ تجلی جلالی ہے جس سے جسم پرزہ پرزہ ہوجاتا ہے اور تجلی رحمانی سے اصلی حالت پر لوٹ آتا ہے۔

• عشق جان کائنات است • (۸)

• عشق لاعین ولاغیراست •

ان اقوال زرین پر چند نایاب تصانیف محتوی ہیں جن کا ذکر ازبس ضروری ہے۔ ان میں آپ کی تصنیف • خاتمہ آداب المریدین • بھی اہمیت کی حامل ہے۔

" خاتمہ آداب المریدین " (۹)

مریدین و متوسلین کے لئے تلقین آداب پر یہ ایک مربوط و مبسوط دستاویز ہے جو سلوک و تصوف کا بیش بہا سرمایہ ہے اور قرآن و حدیث سے مستنبط ہے۔ اس کا ایک نسخہ ہمارے ادارے میں محفوظ ہے۔ اس کی کتابت ۱۰۶۷ھ م ۱۶۵۷ء سے قبل کی ہے۔ اس لئے کہ ۱۰۶۶ھ میں یہ کسی نے اپنے فرزند خواجہ عبداللہ کو تحریر کے ساتھ بخشا ہے جو کتاب کے سرورق سے ظاہر

(۱۴) مرید العاشقین

(۱۵) تفسیر القرآن بطرز کشاف

(۱۶) حواشی بر کشاف (کشاف پر الگ سے حواشی ہیں)

(۱۷) ترجمہ شلدق

(۱۸) شرح فصوص الحکم (اس کا ذکر جوامع میں ہے)

(۱۹) حواشی قوت القلوب

(۲۰) شرح رسالہ ابن العربی

(۲۱) شرح قصیدہ حافظیہ

(۲۲) شرح تعرف

(۲۳) معراج العاشقین (۷)

(۲۴) ضرب الامثال

(۲۵) شکار نامہ

ان تصانیف سے چند اقوال زرین اور مواعظ دلنشین پیش کئے جا رہے ہیں۔ ان میں مریدین و متوسلین کے لئے آداب کی تلقین بھی ہے اور شریعت و طریقت کے رموز و نکات بھی۔

یہ خود اپنی جگہ ایک ایسا سرمایہ حیات اور زبدۂ راہ نجات ہے جو تصوف کے مختلف موضوعات بن کر بسط و شرح کا متقاضی ہے جیسے " الشریعۃ افضل من الطریقۃ " دیوانہ باخدا باش و ہشیار با محمد " (محبت نامہ)

(باخدا دیوانہ باش و با محمدؐ ہوشیار)

ماہیت او تعالیٰ عین ذات اوست (ماہیت حق غیر ماہیت خلق ہے)

مختصر رسالہ الموسومہ مجلس حیران اور شرح عوارف المعارف ایسی تصانیف ہیں جو ہمارے اس انسٹی ٹیوٹ میں سرمایہ افتخار کا درجہ رکھتی ہیں۔ ان تصانیف میں شرح عوارف المعارف نادر الوجود اور نایاب ترین ہے۔ اس پر الگ سے گفتگو کی جائے گی۔ آپ کی جو تصانیف دستیاب ہوچکی ہیں اور مختلف اداروں اور کتب خانوں کی زینت بنی ہوئی ہیں وہ مندرجہ ذیل ہیں:

| | |
|---|---|
| (۱) شرح آداب المریدین | شیخ شہاب الدین سہروردی کی عربی تصنیف آداب المریدین کی شرح عربی و فارسی میں ہے۔ |
| (۲) شرح زبدۃ الحقائق | (تمہیدات عین القضاۃ ہمدانی) |
| (۳) شرح رسالہ قشیریہ | (شیخ عبدالکریم ہوازن قشیری) |
| (۴) حدائق الانس | الموسوم "بجواہر العشاق" |
| (۵) شرح الحامات غوث الاعظم | الموسوم "بجواہر العشاق" |
| (۶) استقامت الشرعیہ و طریقۃ الحقیقہ | (تالیف ۷۹۱ ھ) |
| (۷) اسمار الاسرار | (تالیف قبل ۸۲۵ ھ) |
| (۸) شرح فقہ اکبر | (امام ابو حنیفہ) |
| (۹) دیوان شاہ گیسو دراز | الموسوم بہ "انیس العشاق" (اس دیوان میں تین ہزار ابیات ہیں) |
| (۱۰) رسالہ برہان العاشقین | (مختصر رسالہ چیستان کی متعدد شرحیں ہوچکی ہیں)۔ |
| (۱۱) جوامع الکلم | (ملفوظات) |
| (۱۲) مکتوبات گیسودراز | مرتبہ ابوالفتح علاء الدین قریشی تالیف ۸۵۲ ھ |
| (۱۳) تفسیر ملتقط | (مخزونہ کتب خانہ گلبرگہ شریف) |

شان تعلیمی ادارے اور جاندار روایات باقیات الصالحات ہیں۔ آپ نے چالیس خلفاء کبار چھوڑے ہیں۔ (۵)

تصانیف : ۔ مخدوم دین و دنیا ۔ (۶) مہ سپہر ولایت ۔ مجمع الاولیاء شاہ بندہ نواز گیسودراز کی گیسوئے شب دراز کی طرح ان کی عمر بھی دراز تھی جو اپنی مابہیت و حیثیت سے خود ایک طویل دور ، ایک عہد اور ایک قرن تھا جس میں عہود وقرن اقدار و آثار ، روحانیت و تجلیات کے فیوض، انور حقیقی ، علوم ظاہری کے عوارف و معارف ، احوال و کوائف کے دفتر کے دفتر ملتے ہیں۔

یہ تصانیف اہل سلسلہ اور ارباب شریعت و طریقت کے لئے مروج الذہب اور معدن الجواہر کا جلوہ رکھتی ہیں۔ ایک طرف اگر امام غزالی کی کیمیائے سعادت اور احیاء العلوم کی بو نظر آتی ہے تو دوسری طرف شیخ سہروردی کے عوارف و معارف بھی۔

جہاں آداب المریدین اور ابن العربی کے فصوص الحکم نظر آتے ہیں۔ وہاں غوث الاعظم کے الھامات میں ۔ جواھر العشاق ۔ دکھائی دیتے ہیں۔

ایک طرف تمہیدات ہمدانی زبدۃ الحقائق میں دکھائی دیتی ہے تو دوسری طرف امام اعظم ابوحنیفہ کی شرح اسمار الاسرار میں جلوہ نما ہوتی ہے۔ ان تصانیف کو یکجاکرنے اور ان کی تلاش و جستجو ترتیب و تہذیب طباعت و اشاعت میں درگاہ گیسو دراز بندہ نواز پیش پیش ہے۔ اکثر و بیشتر تصانیف و تراجم شائع ہوچکے ہیں۔ بعض ناپید ہیں بعض نادر الوجود اور عزیز الدھر ہیں۔ ہمارے ادارے ریسرچ انسٹی ٹیوٹ ٹونک میں بھی چند اہم تصانیف محفوظ ہیں جن سے مجھے بحث کرنا ہے۔

۔ جوامع الکلم ۔

شرح آداب المریدین بفارسی

بارہویں پشت سے ان کے جد امجد حضرت ابوالحسن جنیڈی رائے پتھورا پرتھوی راج چوہان ۱۱۱۴ء /۵۳۶ھ تا ۱۱۹۱ء / ۵۸۷ھ فتح ترائن سے پہلے مجاہدین کی جماعت کے ساتھ ہرات سے دلی آئے تھے وہیں شاہباز وشاہنواز بلند پرواز، گیسو دراز بندہ نواز پیدا ہوئے۔

سال ولادت میں اختلاف ہے۔ ۷۲۰ھ - ۲۱ ہجری سے ۷۲۵ھ تا ۷۳۲ھ ہجری بتلائے گئے ہیں۔ لیکن ۷۲۱ھ کو تذکرہ نگار حضرات نے زیادہ مستند تسلیم کیا ہے - (۲) بدایوں دروازہ مہر ولی میں سکونت تھی۔ لڑکپن سے ہی ہدایت منتقی، پابند صوم و صلوۃ، نیک خو، پاک باطن، پاک طینت اور پاک خصلت تھے - خواجہ برہان غریب" شمارا نعمتی از اخوند مولانا محمود برسد" تلقین فرمایا تھا۔ جیسا کہ آپ نے اپنے ملفوظات میں لکھا ہے - اس تلقین پر آپ نے خود حیران ہوکر آگے یہ لکھا تھا" حیران بودم کجا ماوکجا دلی" آخرکار ۷۳۵ھ م ۱۳۲۵ء ۱۵ سال کی عمر میں والدہ کے ساتھ دلی تشریف لے آئے۔ سولہویں سال کی عمر میں حضرت نصیر الدین" چراغ دہلوی کے مرید ہوئے۔ حظیرہ شیر خان میں ریاضت و مجاہدہ کیا اور وہیں علماء کبار سے علوم معقول ومنقول حاصل کیئے۔

اپنے شیخ طریقت کی وفات سے پہلے ۷۵۷ھ میں مسند رشاد پر فائز اور خرقہ خلافت (۳) سے سرفراز ہوئے۔ ۸۰۳ھ م ۱۴۰۲ء میں انھوں نے تیمور کے حملے اور دلی کی تباہی کی پیشن گوئی کی تھی اور خود ۸۰۴ھ میں دولت آباد چلےگئے۔ پھر گلبرگہ شریف گئے - راستہ میں گجرات ہوتے ہوئے آئے جہاں شیخ رکن الدین کان شکر کی صحبت سے بھی بہرور ہوئے۔ (۴) ۲۱ سال تک گلبرگہ میں رشد و ہدایت کا کام سرانجام دیا فیروز شاہ بہمنی اور اس کے جانشین احمد شاہ بہمنی نے آپ کی کافی عزت کی۔ ۱۴ ذیقعدہ ۸۲۵ھ م ۱۴۲۱ء میں احمد شاہ بہمنی کے جلوس کے فورا بعد آپ کا انتقال ہوگیا۔

آپ کا عالی شان مقبرہ بھی احمد شاہ بہمنی کا بنوایا ہوا ہے جس میں ایک شاندار کتب خانہ عالی

بنادیا، جس کے اشعۃ اللمعات نے گیسودراز کو بندہ نواز بنادیا، جس کے گیسوکاکل میں فزا مشکیں اور لمہ عنبریں کی دلنوازیاں، دلپذیریاں اور بندہ نوازیاں کسی کو پابند نیاز اور اسیر گیسو کئے دیتی ہیں۔ جس کے لقب صدر الدین سے صدر دین اور شرح صدر کی راہیں ہموار ہوتی ہیں۔ اور جس کی کنیت ابوالفتح سے فتوحات و تسخیرات، تجلیات باطنی اور تحلیلات روحانی کے دریچے کھلتے ہیں۔ جس کے گیسودراز سے عمر دراز کا ساز بے ساز، نیاز بے نیاز کا نمونہ بن کر ساز بے ساز کو ساز اور نیاز کو شان بے نیازی دیتا رہتا ہے۔ جس کے ایک ہی سلسلہ گیسودراز سے کئی سلاسل بندہ نواز اور سلاسل بندہ نواز سے راز و نیاز بندگی، اور راز و نیاز بندگی سے راز ہائے حقیقی اور راز ہائے حقیقی سے بندہ نوازی اور بندہ نوازی سے ناز و انداز، خودی و بیخودی نمودار ہوتے ہیں۔

اپنے شیخ طریقت سے غلبہ عشق سرمدی نے ایک طرف اگر نصیر الدین چراغ دہلوی کے جنوب میں چراغ روشن کئے تو خلیفہ بزرگ کے گیسوئے شب چراغ سلسلہ کو اتنا دراز کیا کہ درازی شب چراغی سے گیسودراز کی گیسودرازی اور بندہ نوازی شان بے نیازی میں جلوہ گر ہوکر گلبرگہ شریف کو شاہجہاں آباد دلی کی جلوہ نمائیوں کا محور بنادیا اور دلی کو گلبرگہ شریف کی حیرت سامانیوں کا مرکز۔

شاہ گیسودراز کی حیات باکرامات سے ان کی جامع العلوم اور مجمع الفنون شخصیت کا بھی اندازہ ہوتا ہے۔ اور اس طویل مقدس زندگی کی پہنائیوں، گہرائیوں اور گیرائیوں میں جو انوار اور اخبار اور مواعظ و نصائح مضمر ہیں، ان کا مطالعہ بھی ہوتا ہے۔

یہ مطالعہ ایک طرف اگر مشاہدہ نظر آتا ہے تو دوسری طرف مجاہدہ و مکاشفہ بھی نظر آتا ہے جو ان کی مجاہدانہ زندگی کا عکس لئیے ہوئے ہے۔ نام محمد، لقب صدر الدین، کنیت ابوالفتح، عرفیت گیسودراز، والد کا نام نامی ابن یوسف عرف راجو قتال ہے۔ آپ کا سلسلہ نسب حضرت امام حسین تک پہنچتا ہے۔ آبائی وطن خراساں ہے۔ حنفی المذہب اور چشتی المشرب تھے۔

شوکت علی خان
ناظم، عربک اینڈ پرشین ریسرچ انسٹی ٹیوٹ
ٹونک، راجستھان - ۳۰۴۰۰۱

# خواجہ دکن شاہ بندہ نواز گیسو دراز کی تصانیف

کسی کی مقدس یاد میں ذکر و فکر، اشغال و تصور، ہجر و وصال، سکر و صحو وجد و حال میں کسی نے زلف شب دراز میں موتی پروئے رات بھر - کہ خود کوئی گیسو دراز اور بندہ نواز ہوگیا جس کے حسن بندگی میں شان بندہ نوازی تھی، جس کے ذکر و فکر میں انداز دلربائی اور جس کے طیر و سیر میں ادائے خود آگاہی تھی۔ جس کے پاس انفاس میں انداز مسیحائی، جس کے گفتار و کردار میں رسم پارسائی، جس کی دلنوازی طوق جہانبانی، جس کی فقیری میں امیری اور امیری میں تاجوری تھی، جس نے فقیری میں شہنشاہی کی ہو، جس کی درگاہ فضیلت مآب میں آج بھی سلطنت و امارت کے آثار ہویدا ہوں، جس کے حسن کردار میں شہنشاہوں کی جلالت، فقیروں کی سیادت اصفیاء و اتقیاء کی فضیلت، جس کے قول و فعل میں اخیار و ابرار کی منزلت اور جس کے ملفوظات میں ابدال و اقطاب کی رشد و ہدایت ہو، جس نے فقیری میں جہانبانی کی ہو اور جہانبانی میں جہاں و جہانیاں کی پاسبانی کی ہو اور بندگان خدا کی بندہ نوازی کی ہو، آن " معدن (ا - عشق و همدم وصال، آن کلید مخازن حضرت ذوالجلال، آن مست الست، نغمات بے ساز محبوب حق " بندہ نواز، گیسو دراز، شاہنواز کا نام نامی محمد ہے۔ وہ محمد جس کی نسبت شاہانہ سے لطائف روحانی اور کوائف سبحانی ایک مرکز پر سمٹ آتے ہیں جس کے شغل سے روحانیت کی دولت ملتی ہے اور جس کے ذکر خیر کے فیوض و برکات نے فقیر کو امیر، امیر کو شہنشاہ اور شہنشاہ کو جلالت پناہ اور فضیلت مآب بنادیا ہو، جس کے فیضان نسبت نے کسی کو سلطان الهند، معین دین کسی کو قطب دین کے رکن رکین کسی نظام دین کو محبوب الٰہی، کسی نصیر دین کو چراغ دین

دوسرے میر محمد کاظم حسینی متخلص بہ کریم ہیں۔ جنھوں نے "کامروپ اور کام شد" کے قصے کو فارسی زبان میں لکھا تھا۔ آپ کے علاوہ محمد مراد لائق بدیع العصر جامی، ربیع انجی، منشی علی رضا حمت خاں، آقا مہدی اور محمد دلیر نے بھی اس قصہ کو فارسی میں لکھا ہے۔

حیدرآباد سے جہاں سے بے شمار قلمی نسخے باہر گئے وہاں سے بہت سے قیمتی نسخے دوسری جگہوں سے بھی یہاں آئے ہیں، اسٹیٹ میوزیم حیدرآباد میں جامی کی مثنوی "نی نامہ" کا وہ خوبصورت قلمی نسخہ موجود ہے جس کی کتابت محمد محسن نے کی تھی اور جو برہان نظام شاہ کو پیش کیا گیا تھا اور جس پر انکی مہر بھی ہے۔ (۱)

آخر میں، میں اس مقالہ کو علامہ اقبال کے اس شعر پر ختم کرتا ہوں:

اڑائے کچھ ورق لالے نے کچھ نرگس نے کچھ گل نے
چمن کے پتے پتے پر لکھی ہے داستاں میری

(۱) یہ مضمون نہایت مختصر ہے ورنہ دنیا کے تقریباً ہر کتاب خانہ میں حیدرآباد کی کتابت شدہ مخطوطات موجود ہیں (مدیر)

یہ سب تو وہ نسخے تھے، جو حیدرآباد میں لکھے گئے تھے، اب میں ایک غیر مطبوعہ مثنوی کا تعارف کروانا چاہتا ہوں، جس میں تلنگانہ اور حیدرآباد کی طرح طرح سے توصیف کی گئی ہے، ترکی کے سفر میں استنبول کی بلنزید لائبریری میں مجھے "روایع گلشن قطب شاہی" کا ایک بہت خوبصورت مطلا و مذھب نسخہ ملا جسے الفی یزدی نے لکھا تھا اور جس کی عبدالغنی شعرباب ابن لطف اللہ مشھدی نے ۱۰۵۱ ہجری م ۱۶۴۱ عیسوی میں کتابت کی تھی۔ غالباً اس مثنوی کا یہ سب سے قدیم نسخہ ہے۔

اس مثنوی میں تلنگانہ اور حیدرآباد کے پھلوں، پھولوں، مسجدوں، عمارتوں، محلوں اور دروازون کا ذکر کیا گیا ہے۔ محلوں اور دروازوں میں لال محل، حسینی محل، چندن محل، دولت محل، داد محل، حیات محل، گگن محل، حیدر محل، ندی محل، امان محل، الھی محل اور دروازہ شیر دل کی خاص طور پر تعریف کی گئی ہے۔ پھلوں اور پھولوں میں آم، انناس، سنترہ، کیلے، یاسمین، چمپا، مولسری، رائے، بیلا، سیوتی اور ریان کا خاص طور سے نام لیا گیا ہے۔ تہواروں میں شاعر نے "عید پوری" کا یوں ذکر کیا گیا ہے:-

بسعادت بدل نہ ھوست اللہ عیس اللہ پورہ عبداللہ پوری

شاعر نے عبداللہ قطب شاہ کی خاص طور سے مدح کی ہے، بہار فیض ازل قطب شاہ عبداللہ کہ یافت نشاہ عدلیس سرتلنگانہ سواد دین عالم شود اگر گرد، زنور معدلتش کشور تلنگانہ - نیز تلنگانہ کے حسن کی یوں تصویر کشی کی گئی ہے:

تلنگی مھوشان سبز سو و چالاک که سروستان للمست از سیامشان خاک

بباغ ار قد رعنابسر فرازند گلستان راثمال از جلوہ سازند

یہاں عبداللہ قطب شاہ کے دو درباری شاعروں اور ادیبوں کا بھی ذکر ضروری ہے جن کے کارنامے ابھی تک شائع ہوکر منظر عام پر نہ آسکے ان میں سے ایک میر رضی دانش مشھدی ہیں۔ جن کے اس ایک شعر پر دارا شکوہ نے ایک لاکھ روپیہ انعام دیا تھا:

تاک راسیراب کن ای ابرنیساں دربہار قطرہ ای گری تو اند اللہ چراگوھر شود

(شمس العلماء احمد عبدالعزیز نائطی (خان بہادر عزیز جنگ) حیدرآباد ۔

۱۹۰۹ء مطبوعہ عزیز المطابع "

اس نسخہ کے آخر میں کاتب کی یہ عبارت بھی ہے جس سے پتہ چلتا ہے کہ ۱۲۳۱ ہجری م ۱۸۱۶ عیسوی میں اسکی کتابت ہوئی تھی۔

" تمت الرسالہ ...... بتاریخ چہاردھم ذیقعدہ ، روز یکشنبہ ۱۲۳۱ ہجری درفرخندہ بنیاد حیدرآباد بیداقل اضعف العباد محمد اسمعیل مشہدی بن مرزا محمد ابراھیم اختتام یافت "

دوسرا نسخہ " کلیات ظہیرفاریابی " کا ہے جس پر بعینہ وہی مطبوعہ عبارت چپکائی گئی ہے جو کلیات انوری کے نسخہ پر ہے۔ نیز اس کے آخر میں کاتب کی حسب ذیل عبارت ہے جس سے پتہ چلتا ہے کہ اس نسخہ کی کتابت ۱۲۴۰ ہجری م ۱۸۲۵ عیسوی میں ہوئی تھی۔

" این نسخہ قصائد و قطعات ظہیرفاریابی بتاریخ بیست و یکم شعبان المعظم ۱۲۴۰ ہجری روز دوشنبہ یک نیم پاس روز برآمدہ در قلعہ محمد نگر عرف گلکنڈہ پیوستہ بحیدرآباد فرخندہ بنیاد ...... بخط فقیر حقیر کثیر التقصیر سید احمد علی ولد سید جعفر علی خان الموسوی ....... برای مطالعہ خود کہ شوقبی بہلت داشت ھمگی درعرصہ بیست روز مع الخیر و خوبی انصرام یافت حق سبحانہ وتعالیٰ توفیق مطالعہ دہد اما چون بنیاد عمر برفناست امیراز گروہ اھل اسلام چناں دار کہ ھرکس کہ بمطالعہ آرد دوکلمہ دعاء ومغفرت ازیں مجرم مانع ندارد و بدعای خیریاد آمدہ " اس سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ گولکنڈہ کا دوسرا نام " محمد نگر " تھا۔

میں نے پنجاب یونیورسٹی پٹیالہ کی لائبریری میں " دیوان ظہیرفاریابی " کا وہ نسخہ دیکھا ہے جس سے صاحب ھفت اقلیم ، امین احمد رازی ، جو اکبر کے حکم سے فاریاب گئے تھے، وہاں سے لائے تھے۔ اس میں مجھے تقریباً چالیس ایسی غزلیں ملی ہیں جو ابھی تک چھپی نہیں ہیں۔ اور جو عنقریب تہران کے ایک وقیع رسالہ میں شائع ہوجائینگی۔ فورٹ ولیم کالج کے کلیات ظہیر فاریابی کے قلمی نسخہ میں بھی بہت سا ایسا کلام ملا تھا، جو اب تک شائع شدہ مطبوعہ نسخوں میں شامل نہیں کیاگیا۔

" بابت ملا عبداللہ بن ملک التجار بتاریخ ہشتم ماہ محرم الحرام " مگر پتہ نہیں چلتا کہ یہ ملک التجار کون تھے؟"

دوسرا قلمی نسخہ علم نجوم میں ہے اور جس کا نام " نجوم السماء " ہے۔ یہ نسخہ سلطان محمد قطب شاہ کے شاہی کتب خانہ کے لئے ۱۰۳۳ ہجری م ۱۶۲۳ عیسوی میں لکھا گیا۔ نیز اس کے آخر میں یہ عبارت دی ہوئی ہے۔

" بتاریخ اواخر شہر محرم الحرام ۱۰۳۳ در دارالسلطنت حیدرآباد ...... برسم خزانہ کتب اعلی حضرت الخاقان الاعظم ...... سلطان محمد قطب شاہ ...... سید محمد مومن مشہور بہ عرب شیرازی بہ سمت تحریر یافت ...... "

اس نسخہ کی ایک خصوصیت یہ بھی ہے کہ اس پر لکھنو کے دوسرے بڑے مجتہد " سید محمد بن سید دلدار علی مجتہد ...... " کی مہر بھی ہے۔ جس کا یہ مطلب ہوا کہ یہ نسخہ حیدرآباد سے نکلا اور پھر واپس حیدرآباد آیا ہے۔ یہاں یہ بھی بتا دیا جائے کہ مولانا سید دلدار علی صاحب کو لکھنو میں غفران مآب " سے ملقب کیا جاتا ہے۔

فورٹ ولیم کالج کی بے شمار کتابیں نیشنل آرکائیوز آف انڈیا میں موجود ہیں جن میں سے قلمی کتابوں کی فہرست شائع ہوگئی ہے۔ ابھی حال میں میں اس ذخیرہ کو دیکھ رہا تھا کہ میری نظر جب ایسے دو مخطوطوں پر پڑی جنکی کتابت حیدرآباد میں ہوئی تھی اور جو یہاں سے ریذیڈنٹ کو پیش کی گئی تھیں۔ ان میں سے ایک نسخہ " کلیات انوری " کا ہے۔ جس پر چھپی ہوئی یہ عبارت درج ہے:

(نشان کتاب)

آنریبل ہیف سی روڈویر ئی سی ایس ، سی ایس آئی برٹش ریذیڈنٹ حیدرآباد کی علمی سرپرستی کی یاد گار میں ۔

کتب خانہ بورڈ آف اکزامینرس کلکتہ کو

منجانب

بیخودی ، بیخودی روملو ، امیر ہمدانی متخلص بہ بیخودی ، ملاحاجی لاہوری نامدار خان متخلص بہ بیخود و بیخودی ، امیر بیخودی اسوائینی ۔ جہاں یہ نسخہ اس لئے اہم ہے کہ خود قطب شاہی کتب خانے میں رہا ہے ، وہاں یہ بھی تعجب کی جگہ ہے کہ اسکا شاعر بالکل نامعلوم ہے ۔ اس لئے کہ کسی تذکرہ میں ذکر نہیں ، نیز اوپر دیئے ہوئے ناموں میں سے کوئی بھی اسکا مصنف نہیں ہے اس لئے کہ تذکروں میں دیئے ہوئے ان کے اشعار اس دیوان میں نہیں ملتے ۔

ان دواوین کے علاوہ علیگڈھ کے راجہ اصغر آباد کے ذاتی کتب خانہ میں دو جلدوں میں " ادعیہ " کا مطلا و مذہب نسخہ موجود ہے ، جس میں یہ لکھا ہے :۔

" رحمتہ ...... فقیر غمگین ملا نظام الدین خوشنویس ولد حافظ عباد اللہ مرحوم قطب شاہی ۔ "

مگر پتہ نہیں چلتا کہ کس قطب شاہی بادشاہ کے عہد میں اسکی کتابت ہوئی تھی ۔ اس کے علاوہ علیگڈھ ہی میں مسلم یونیورسٹی کے کتب خانہ میں قصائد شمس طلبی کا ایک قلمی نسخہ موجود ہے ۔ میں نے کتابوں کی تلاش میں ایک عمر گذاری ہے ۔ نیز ہندوستان اور ہندوستان سے باہر کونے کونے میں تلاش کیا ہے ۔ مہاراشٹرا کے ضلع اکولہ میں بالا پور میں خانقاہ نقشبندیہ ہے جہاں کے سجادہ نشین میرے عزیز دوست ہادی نقشبندی صاحب ہیں ان کے کتب خانہ میں " مطول کا ایک خوبصورت قلمی نسخہ ملا ، جسے محمد سعید ہروی نے ۹۷۰ ہجری م ۱۵۶۲ عیسوی گولکنڈہ میں تحریر کیا تھا ۔ اس نسخہ پر شیخ فرید ملقب بہ مرتضیٰ نے فرخ سیر کے زمانہ میں حواشی لکھے تھے ۔ اس نسخہ میں محمد قلی قطب شاہ اور سلطان محمد قطب شاہ کی مہریں بھی ہیں جس کا مطلب یہ ہے کہ نسخہ قطب شاہی کتب خانہ میں رہ چکا ہے ۔

اسٹیٹ میوزیم حیدرآباد میں دو اور اہم قلمی نسخے ہیں ان میں سے ایک " زیارت نامہ " ہے ۔ جسے ملک التجار نے بطور تحفہ کے ۱۰۲۴ ھجری م ۱۶۱۵ عیسوی میں محمد قطب شاہ کی خدمت میں پیش کیا تھا نیز اس پر خود سلطان محمد قطب شاہ کے ہاتھ سے لکھی ہوئی یہ عبارت درج ہے ۔

" زیارت نامہ " تحفہ ملا ملک التجار ، راقم سلطان محمد قطب شاہ بتاریخ غرہ رمضان المبارک ۱۰۲۴ ھجری اور آخری یہ عبارت ہے :۔

کتب خانہ کی زینت تھا۔ نیز اس نسخہ کے آخر میں یہ عبارت آج بھی موجود ہے جس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ نسخہ ۱۰۲۴ ہجری م ۱۶۱۵ عیسوی میں لکھا گیا تھا۔ " درکتا بخانہ، عالی سلطان محمد قطب شاہ در دارالسلطنت حیدرآباد ، بخط حسن بن عبدالحسین برادر زادہ مولانا بیکسی بیست و ہفتم ماہ ربیع الاول ۱۰۲۴ ھ "

دوسرا اہم قلمی نسخہ " دیوان شریف کاشی " کا ہے۔ سراج الدین شریف الحق متخلص بشریف ۹۹۴ ہجری م ۱۵۸۶ عیسوی میں اپنے وطن کاشان سے ہندوستان آئے۔ سب سے پہلے آپ مرزا عبدالرحیم خانخاناں اور اس کے بعد گولکنڈہ میں محمد قلی قطب شاہ کے دربار سے متوسل ہوئے۔ بہرحال " دیوان شریف کا وہ نسخہ جو آج انڈیا آفس کی زینت ہے اسے خود شریف نے ۱۰۲۶ ہجری م ۱۶۱۷ عیسوی میں سلطان محمد قطب شاہ کو پیش کیا تھا اس نسخہ کے آخر میں یہ عبارت درج ہے :

" دیوان محمد شریف کہ خود برسم تحفہ در دولتخواہ مبارک گذارمیدہ ، بتاریخ ۲۶/ صفر ۱۰۲۶ ھ کے بجائے ۲۸ اور ۲۹ بھی پڑھا جاسکتا ہے۔ بہر حال اس پر خود محمد قطب شاہ کی مہر ہے۔ نیز یہ نسخہ بھی انکے شاہی کتب خانہ میں رہ چکا ہے۔

تیسرا اہم اور مطلا اور مذہب قلمی نسخہ " دیوان بیخودی " کا ہے جسے نعمت اللہ نے حیدرآباد میں ۱۰۲۴ ہجری م ۱۶۱۵ عیسوی میں سلطان محمد قطب شاہ کے شاہی کتب خانہ کے لئے لکھا تھا۔ دیوان کے اس قلمی نسخہ کے آخر میں یہ عبارت دی ہوئی ہے : -

" تمام شد دیوان بیخودی درکتاب خانہ ..... سلطان محمد قطب شاہ ..... دواز دہم ماہ ربیع الاول بخط نعمت اللہ در دارالسلطنت حیدرآباد - " ایک عرصہ ہوا میں نے اس نسخہ کو حیدرآباد کے اسٹیٹ میوزیم کے کتب خانہ میں دیکھا تھا۔ اور اسکا مائکروفلم حاصل کیا۔ مگر یہ پتہ نہ چل سکا کہ یہ بیخودی کون تھا۔ بیخود اور بیخودی تخلص کے کئی شعراء گذرے ہیں۔ جیسے ابو حفص جوزی متخلص بہ بیخودی ، مولانا بیخودی ، معاصر شاہ طہماسپ بیخودی ، بیخودی سمنانی ، معاصرشاہ عباس کبیر بیخودی شیرازی باجتابدی ، شاہنامہ خوان شاہ عباس بیخودی باغی یوسف ذہنی فراہی متخلص بہ

پروفیسر سید امیر حسن عابدی
شعبہ فارسی، دہلی یونیورسٹی
دہلی ۔ ۷

# حیدرآباد کے بکھرے ہوئے اوراق

میں ۱۹۴۴ء سے برابر حیدرآباد آتا اور یہاں کے کتب خانوں سے استفادہ کرتا رہا ہوں۔ مجھے اب تک یاد ہے کہ عثمانیہ یونیورسٹی کے ہوسٹل سے کبھی کبھی پیدل افضل گنج آتا اور کتب خانہ آصفیہ میں بیٹھ کر مطالعہ کرتا تھا۔ میرے اس زمانہ کے کرم فرما حضرات میں پروفیسر نظام الدین صاحب مرحوم ، پروفیسر عبدالمجید خاں صاحب خاص طور سے قابل ذکر ہیں۔ پروفیسر محی الدین قادری زور صاحب مرحوم اور مرحوم پروفیسر عبدالقادر سروری صاحب کی عنایتیں بھی یاد آتی ہیں، جن سے آج حیدرآباد خالی نظر آتا ہے ۔ بہر حال اب سالار جنگ میوزیم نے تحقیق کے لئے ایک نیا دروازہ کھول دیا ہے جس میں بیٹھ کر میں نے ہفتوں اپنا وقت صرف کیا ہے۔ اس لئے بے حد خوشی اور مسرت کا مقام ہے ، کہ یہاں اس سمینار میں شرکت کے لئے ہم سب جمع ہوئے ہیں۔ میرا ایک عرصہ سے ' قطب شاہی کتب خانہ کے بکھرے ہوئے اوراق ' کے عنوان سے ایک مفصل تحقیقی مضمون لکھنے کا ارادہ تھا، مگر وقت اور وسائل کی کمی کی وجہ سے یہ کام پورا نہ ہوسکا۔ نیز اس تنگ وقت میں وہ مضمون تمام چیزوں کے احاطہ سے قاصر ہے۔

میں نے ۱۹۴۳ء میں بمقام سینٹ جانس کالج ، آگرہ، محقق طوس خواجہ نصیر الدین طوسی پر ایک مفصل مقالہ لکھا تھا میرے اس زمانہ کے استاد پروفیسر حامد حسن قادری مرحوم تھے جنکی داستان تاریخ اردو اور دوسری کتابیں مشہور ہیں اور جو اماوہ کے اسلامیہ اسکول میں ڈاکٹر ذاکر حسین صاحب مرحوم کے بھی استاد رہے تھے۔ ایک عرصہ کے بعد جب میں بمبئی کے کرافورڈ مارکیٹ کی جامع مسجد ٹرسٹ کے کتب خانہ میں بیٹھ کر ہفتوں مطالعہ کرتا رہا تو مجھے اسی ' دیوان طوسی ' کا ایک بہت خوبصورت مطلا و مذہب قلمی نسخہ ملا جو کبھی سلطان محمد قطب شاہ کے شاہی

# پیش لفظ

اب یہ نظریہ یک قلم رد کردیا گیا ہیکہ میوزیم کو عجائب گھر کہا جاسکتا ہے۔ اب یہ ہمارے تعلیمی ادارے ہیں، جہاں بالواسطہ تعلیم دی جاتی ہے۔ ماہرین نے اس فن کو اب سائینس کا درجہ عطا کیا اور انکی رائے میں میوزیم ایک ایسا عوامی ادارہ ہے، جہاں نہ صرف نوادرات جمع کیئے جاتے ہیں اور انکا تحفظ ہوتا ہے بلکہ وہاں نمائیش اور تعلیم و تربیت کے علاوہ مزید تحقیق سے ملک و قوم کی تاریخ پر تازہ روشنی بھی ڈالی جاتی ہے۔ اس مقصد کے پیش نظر ہر میوزیم اپنا ایک تحقیقی رسالہ جاری کرتا ہے اور ضرورت ہو تو کتب بھی شائع کرتا ہے۔

"سالار جنگ میوزیم جرنل" بھی اسی تعلیم و تحقیق کی طرف ایک پیش رفت ہے۔ اس شش ماہی رسالے میں میوزیم کے ماہرین کے علاوہ دیگر محقق بھی میوزیم کے نوادرات، مخطوطات اور اسی طرح کے دیگر موضوعات پر اپنے پر مغز مقالے پیش کرتے ہیں۔ ہمیں خوشی ہیکہ اس جرنل کے اٹھائیس شمارے زیور طبع سے آراستہ ہوگئے ہیں اور ان میں دو خاص نمبر بھی ہیں۔

لیکن یہ بات اہم ہیکہ اس بار "سالار جنگ میوزیم جرنل" کا یہ تازہ شمارہ اردو ہندی السنہ میں شائع ہورہا ہے۔ یہ اٹھائیسویں شمارے کا ضمیمہ ہے۔ اس اہم اور تاریخی اقدام کے لئے ہم اپنے محرکی ناظم جناب ڈاکٹر آئی۔ کے۔ شرما صاحب کے بیحد ممنون ہیں۔ بحیثیت مدیر میرا اولین فریضہ ہیکہ اس جرأت مندانہ اقدام پر انکا شکریہ ادا کروں۔ بغیر انکی ہمت اور رائے کے اس رسالہ کا منظر عام پر لانا شاید ممکن نہ تھا۔ میں ان تمام محقق حضرات کا بھی فرداً فرداً شکریہ ادا کرتا ہوں جن کے رشحات قلم اس شمارے کی زینت بڑھا رہے ہیں۔ جناب سی۔ پی۔ اونیال، صدر شعبہ، تجربہ گاہ برائے محفوظ نوادرات اور ان تمام ساتھیوں کا بھی شکر گزار ہوں جنکی مدد کے بغیر اس رسالے کی اشاعت ممکن نہ تھی۔

موجودہ رسالے میں جو بطور ضمیمہ، شائع ہورہا ہے اردو کے گیارہ اور ہندی کے دو مقالے شامل ہیں جو ہمارے میوزیم کے مختلف مذاکروں میں پیش کئے گئے تھے۔ یہ تمام مقالے اس لئے بھی اہم ہیں کہ یہ شہر حیدرآباد دکن، اسکے مخطوطات و مطبوعات، دکن زبان اور ہندی زبان و ادب کی اس سرزمین پر پیش رفت کو واضح کرتے ہیں۔ قارئین کی سہولت کے لئے بعض نادر مخطوطات مطبوعات کے اوراق کے عکس بھی دے دیئے گئے ہیں۔ مجھے امید ہیکہ ہماری یہ کوشش ارباب بینش کی نظروں میں شرف قبولیت حاصل کریگی۔

مدیر

رحمت علی خان

# فہرست مضامین


| | | | |
|---|---|---|---|
| ۱۔ | حیدرآباد کے بکھرے ہوئے اوراق | پروفیسر سید امیر حسن عابدی | ۱ |
| ۲۔ | خواجہء دکن شاہ بندہ نواز گیسو دراز کی تصانیف | شوکت علی خاں | ۸ |
| ۳۔ | قانون دربار آصف | ڈاکٹر رفیق فاطمہ | ۲۱ |
| ۴۔ | قطب شاہی دور میں اردو غزل کا نشو نما | ڈاکٹر محمد علی اثر | ۲۸ |
| ۵۔ | حیدرآباد۔ عماد سالار جنگی کے آئینہ میں | ڈاکٹر طیب انصاری | ۳۶ |
| ۶۔ | حدیقۃ السلاطین۔ عہد قطب شاہی کی تمدنی تاریخ | ڈاکٹر زینب حیدر | ۴۵ |
| ۷۔ | حیدرآباد۔ مخطوطات کی روشنی میں | موہن پرشاد | ۵۷ |
| ۸۔ | مخطوطہ۔ آئینہ دکن | قمر سلطانہ | ۶۴ |
| ۹۔ | عہد قطب شاہی و آصف جاہی کی نثری تصانیف میں قومی یکجہتی کے عناصر | ڈاکٹر حبیب نثار | ۷۰ |
| ۱۰۔ | حیدرآباد کے بازار | راحت عزمی | ۷۵ |
| ۱۱۔ | سالار جنگ میوزیم لائبریری کے گرانقدر مطبوعات | لطیف النساء رضوی | ۸۶ |

# سالار جنگ میوزیم جرنل

## شش ماہی تحقیقی رسالہ

شمارہ ۵ ۲۷-۲۸ (ضمیمہ)

۹۱-۱۹۹۰

مدیر اعلیٰ

ڈاکٹر آئی ۔ کے ۔ شرما

مدیر

ڈاکٹر رحمت علی خان

سالار جنگ میوزیم حیدر آباد (آندھرا پردیش)

۱۹۹۶

قیمت

# سالار جنگ میوزیم جرنل

ششماہی تحقیقی رسالہ

ضمیمہ - اُردو

ناشر
سالار جنگ میوزیم
حیدرآباد (آندھرا پردیش)

جلد ۲۷-۲۸
۱۹۹۰-۱۹۹۱